स्मृति पटल से

भाग-2

प्रेरणा

श्रमण श्री 108 ज्ञानानंद जी मुनिराज

लेखिका

आर्यिका श्री 105 वर्धस्वनंदनी

प्रकाशक

निर्ग्रन्थ ग्रन्थमाला समिति

ई० 102 केशर गार्डन, सै० 48 नोएडा-201301

मो. 9971548889, 9867557668

कृति : स्मृति पटल से भाग-2

प्रेरणा : श्रमण श्री 108 ज्ञानानंद जी मुनिराज

लेखिका : आर्यिका श्री 105 वर्धस्वनंदनी माता जी

संपादन : आर्यिका 105 वर्धस्वनंदनी

प्राप्ति स्थान : निर्ग्रन्थ ग्रन्थमाला समिति, बौलखेड़ा

संस्करण : प्रथम, वर्ष 2021 ई.

प्रतियाँ : 1000

मूल्य : सदुपयोग

प्रकाशन : निर्ग्रन्थ ग्रन्थमाला समिति

मुद्रक : अलंकार ग्राफिक्स प्रा. लि.
ग्रेटर नोएडा (उ.प्र.)
टे. नं. : 9811822023

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	विषय	पृष्ठ सं.
1.	वंदनीय गुरु आसन	01
2.	जिनभक्त	03
3.	जिनशासन हैं प्राण	05
4.	असह्य दु:ख	07
5.	बात कायोत्सर्ग की नहीं	10
6.	मिश्री सी मधुर वाणी	12
7.	अनुशासक	14
8.	चित्त परिवर्तन	16
9.	सकारात्मकता	18
10.	मैं हूँ ना	20
11.	श्रेय पूज्यों को	22
12.	महान् दार्शनिक	24
13.	करुणा सिंधु	26
14.	जीवन रक्षक	28
15.	वात्सल्य धनी	31
16.	विस्मित करता है ज्ञान	34
17.	श्रेष्ठ गणितज्ञ	37
18.	संवेदनशील	39
19.	विवाद नहीं संवाद	41
20.	दंड देने का अधिकारी कौन?	44
21.	विनम्रता	46
22.	गमले के पौधे नहीं, जंगल के वृक्ष	48

क्र.सं.	विषय	पृष्ठ सं.
23.	असंभव भी संभव	50
24.	हार में जीत	53
25.	दुर्लभ क्षण	55
26.	विशुद्ध परिणामी	58
27.	लोकातिशायी	60
28.	संस्कारदायक	62
29.	राम सी सरलता	64
30.	क्षमा मूर्त्ति	67
31.	प्रत्येक घड़ी परीक्षा की	70
32.	भर आया जल	73
33.	जीवनाधार	76
34.	धन्य हैं गुरुदेव	78
35.	सर्दी की रात्रि	81
36.	अद्‌भुत है स्मरण शक्ति	84
37.	अनुवीची भाषा कला	87
38.	गुरु ही पालक	89
39.	रहस्यमयी विद्या के ज्ञायक	92
40.	अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी	95
41.	शिशु सम भोलापन	98
42.	करो जाप, हरो पाप	102
43.	रोग-शोक-नाशक	104
44.	जिनशासन संरक्षक	107
45.	जिंदगी बदल दी	110
46.	प्रकृति से सामंजस्य	114
47.	नाम लेते ही होते काम	116
48.	अप्रतिम ज्ञानी	118

आद्य वक्तव्य

रत्नत्रयविशुद्धः सन् पात्रस्नेही परार्थकृत्।
परिपालितधर्मो हि भवाब्धेस्तारको गुरुः॥ –क्ष. चू.

रत्नत्रय से विशुद्ध होते हुए भव्यजीव रूप पात्रों पर (धर्म संवर्धन हेतु) स्नेह रखने वाला, मोक्षरूप परमपुरुषार्थ मार्ग में संलग्न और धर्म का पालन करने वाले गुरु ही भवसिन्धु में डूबते हुए भव्यों के लिए तरण–तारण हैं।

गुरु शब्द के अर्थ बोध को स्पष्ट करने वालों ने गुरु और लघु इन परस्पर विलोम शब्दों से गुरु शब्द की गुरुता का निर्देश दिया है। जिस प्रकार तुला का एक भागार्ध जो भारी होता है उसमें कुछ अधिकता तो निहित होती है और दूसरे भागार्ध से गुरुता के कारण गरिष्ठ भी होता है। अपने विशिष्ट गुण, स्वभाव, ज्ञानादि से यह गुरुता अद्भुत, अनुपम व लघुता से भिन्न प्रतिभासित होती है। महाकवि कालिदास ने कहा है–'रिक्तः सर्वो भवति हि लघुः पूर्णता गौरवाय' अर्थात् जो रिक्त है वह लघु है और जो पूर्ण है वह गुरु है, भारी है। यहाँ पूर्णता यह शब्द गुरु के विशिष्ट, गहन, गंभीर ज्ञान विशेष को एकपद में ही अभिव्यक्त कर रहा है। अथवा गुणों से आभरित होने का निर्देश यह पूर्णता शब्द दे रहा है।

यथार्थ में गुरु की गुरुता की गहनता का अवबोध संभव नहीं है। गुरु का व्यक्तित्व आकाश के समान निर्लेप, स्वच्छ व निःसीम होता है। जिस प्रकार आकाश सभी को अवगाहन देता है, उसी प्रकार गुरु अहिंसा परमधर्म के प्रशिक्षण हेतु सभी भव्य जीवों को स्थान देते हैं।

संसार रूपी समुद्र में विषय-कषायादि की ऊर्मियों से ताड़ित होने पर जीर्ण हुए उस शिष्य रूपी पोत को किनारे तक पहुँचाने वाले कुशल नाविक के समान गुरु ही होते हैं। गुरु ही वह संस्कारशाला है जहाँ से भव्य जीव आध्यात्मिक विकास के मंत्रों की शिक्षा प्राप्त करते हैं।

परम पूज्य अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी आचार्य गुरुवर श्री वसुनंदी जी मुनिराज का व्यक्तित्व आज किन्हीं शब्दों का मोहताज नहीं। जिनका नाम स्मरण करते ही निर्मल ज्ञान, नि:सीम वात्सल्य, श्रेष्ठ तप, उत्कृष्ट चर्या आदि गुण सहज ही मानस पटल पर छा जाते हैं। जिनका अप्रतिम प्राकृत लेखन, अद्भुत चिंतन, तर्क-आगम व युक्तिपूर्ण शंकाओं का समाधान, अगाधज्ञान, अवर्णनीय तप, उत्कृष्ट चर्या आदि के द्वारा मस्तिष्क उनके समक्ष सहज ही श्रद्धावनत् हो जाता है। जिनशासन रूपी पद्म के संरक्षण व संवर्धन हेतु जो स्वयं सूर्य के समान हैं। जिनमें नि:स्वार्थ भाव से स्व-पर कल्याण की भावनाएँ निहित हैं, जिनकी चर्या व चर्चा जिनशासन की समृद्धि का हेतु है।

प्रस्तुत कृति स्मृतिपटल से भाग-2 में परम पूज्य आचार्य गुरुवर से संबंधित कुछ संस्मरणों का उल्लेख किया गया है। यद्यपि एक शिष्य द्वारा अपने गुरु के व्यक्तित्व का वर्णन नन्हें पंखों में आकाश को भरने जैसा ही है। मैं स्वयं गुरुभक्ति के योग्य भी नहीं, न तो हमारे पास विशेष शब्द ज्ञान ही है और न ही लेखनादि कला। तथापि भक्ति के वशीभूत हो यह कलम कुछ लिखने में प्रयासरत हुई है। 'स्मृति पटल से' प्रथम पुस्तक के पाठकों के मध्य पहुँचने पर गुरु के विषय में और अधिक जानने की लालसा ने भी हमें प्रेरित किया। जब सहस्रों श्रावकों ने उसी के दूसरे भाग को लिखने को कहा। यह सत्य है कि गुरुवर श्री के इन प्रसंगों से हमें जीवन में नवीन अनुभव व प्रेरणा प्राप्त हुई।

जिसने जीवन को समीचीन दिशा भी प्रदान की। भिन्न-भिन्न परिस्थितियों में गुरुवर श्री का व्यवहार, आचरणादि कैसा रहा, वे कौन सी विशेषताएँ हैं जो उन्हें महापुरुष की श्रेणी में सम्मिलित करती हैं, जो उनके व्यक्तित्व को असाधारण बनाती हैं इत्यादि कुछ अंशों में इन संस्मरणों से ज्ञात होता है जिसको पढ़कर व्यक्ति अपने जीवन की दिशा व दशा समीचीन कर सकते हैं, आत्मविश्वास, उल्लास, आदि से परिपूरित कर सकते है एवं संवेग, निर्वेद, भक्ति, वैराग्य आदि गुणों का भी प्रादुर्भाव हो सकता है। इन्हीं भावनाओं को लेकर यहाँ कुछ प्रसंगों को लिपिबद्ध किया है। यद्यपि हम कोई लेखिका नहीं हैं संभवत: विद्वानों के मध्य उपहास का पात्र हों किन्तु यह गुरुभक्ति की ही शक्ति व संबल है जो यत्किंचित् भी इसे लिखने में समर्थ हुए।

प्रस्तुत कृति **'स्मृति पटल से .....भाग-2'** में कोई त्रुटि रह गई हो तो विज्ञजन संशोधित कर पढ़ें। हंसवत् गुणग्राही दृष्टि से इसका अध्ययन करें। हंस अपने नीर-क्षीर विवेक गुण के कारण ही लोक में सम्मानीय होता है। यद्यपि लोक में जोंक की तरह दोष ग्रहण करने वाले व्यक्तियों की भी कमी नहीं है किन्तु आप सम सत्श्रद्धालु, भद्रपरिणामी, आसन्न व्यक्तियों की अल्पता अवश्य है। यदि इस कृति से आप किंचित् भी लाभान्वित होते हैं तो हम अपने पुरुषार्थ को और अधिक सार्थक समझेंगे। पूज्य गुरुवर श्री का संयम पथ सदैव आलोकित रहे, आरोग्य की वृद्धि हो, इन्हीं भावनाओं के साथ आचार्य श्री के चरणों में सिद्ध-श्रुत-आचार्य भक्ति सहित त्रिकाल नमोस्तु-नमोस्तु-नमोस्तु।।

आर्यिका वर्धस्व नंदनी

वंदनीय गुरु आसन

'गुरुभक्ति सती मुक्त्यै' गुरु भक्ति से मुक्ति प्राप्त होती है। गुरुभक्ति से परिपूरित हृदय शिष्य की उत्कृष्टता को प्रदर्शित करता है। जैसे मिहिर की रश्मियों का स्पर्श पाकर काँच वज्र (हीरे) के समान चमक उठता है उसी प्रकार गुरु भक्ति से शिष्य का जीवन कोहिनूर सा उज्ज्वल हो जाता है। पूज्य गुरुदेव की अपने गुरुवर आचार्य श्री विद्यानंद जी मुनिराज के प्रति असीम श्रद्धा व भक्ति को शब्दों में बांध पाना वैसे ही संभव नहीं जैसे अपनी माँ के प्रति एक बालक की भावनाओं को। मन, वचन, काय तीनों योगों से गुरुभक्ति में तत्पर अन्य कोई उदाहरण मुझे दृष्टिगोचर नहीं होता।

सन् 2019 का हमारा चातुर्मास कालका जी दिल्ली में हुआ। वहाँ के मंत्री और कुन्दकुन्द भारती के ट्रस्टी एवं आचार्य श्री विद्यानंद जी महाराज के परम भक्त श्री अनिल कुमार जी 'नेपाल' निरंतर सेवा में रत थे। इधर कालका जी में देखरेख करते और उधर कुन्दकुन्द भारती का कार्यभार भी सम्हालते। कालका जी से कुन्दकुन्द भारती 10 कि.मी. की दूरी मात्र पर था। वहाँ आचार्य श्री विद्यानंद जी महाराज का चातुर्मास चल रहा था तो भाग-दौड़ तो होनी ही थी।

गुरुवर श्री का चातुर्मास नोएडा सेक्टर 50 में चल रहा था। तब अनिल भैया गुरुदेव के पास भी दर्शनार्थ पहुँचे। गुरु जी के दर्शन कर हमारे पास आए और बोले 'माता जी! गुरुदेव की भक्ति अपने गुरुवर के लिए बड़ी अद्भुत है। आज के समय में शिष्य की अपने गुरु के प्रति ऐसी आस्था कहीं दिखती नहीं।'

उन्होंने बताया कि एक बार पूज्य गुरुदेव उनके घर पधारे। वह पहला अवसर था जब गुरुदेव के चरण उनके घर पर पड़े। उन्होंने गुरुदेव को सिंहासन पर बैठाया और अत्यंत प्रसन्नता के साथ कहा 'गुरुदेव! जब भी आचार्य श्री विद्यानंद जी महाराज के यहाँ चरण पड़े तब वे इसी सिंहासन पर बैठे। आज आपको यहाँ बैठे देखकर मैं धन्य हो गया। इतना सुनना ही था कि गुरुदेव सिंहासन से खड़े हो गए और बोले 'जिस सिंहासन पर गुरुवर विराजमान होते हैं उस पर मैं कैसे बैठ सकता हूँ? वह तो मेरे लिए पूजनीय और वंदनीय है।'

उनके बहुत बार निवेदन करने पर भी पूज्य गुरुदेव उस सिंहासन पर नहीं बैठे। परोक्ष में भी उतनी ही श्रद्धा व आस्था का होना उत्कृष्ट गुरुभक्ति है। गुरुवर श्री के जीवन के एक नहीं, अनेक प्रसंग ऐसे हैं जिन्हें सुनकर गुरु भक्ति में तल्लीन ऐसे गुरुवर के प्रति चरणों में मस्तक स्वयं श्रद्धा से झुक जाता है।

जिनभक्त

जिनेन्द्र प्रभु के प्रति गुरुवर की भक्ति अनुपम है। जब वे प्रभु को निहारते हैं तब ऐसा लगता है जैसे एक भोला सा बालक अपनी माँ से कुछ ना माँगता हुआ मात्र स्नेहवश उन्हें निहारता हो। **'यद्भक्तिः शुल्कतामेति मुक्तिकन्याकरग्रहे'** मुक्ति रूपी कन्या से विवाह के लिए जिन भक्ति शुल्क के समान है। जिनभक्ति भक्त के हृदय को निश्छलता, सरलता, वात्सल्य आदि गुणों से भर देती है। जब गुरु जी जिनभक्ति के विषय में बोलते हैं तब हम समझ पाते हैं कि एक उत्कृष्ट जिनभक्त ही ऐसा कह सकते हैं। जानते तो सब हैं कि जिनभक्ति से सब कुछ संभव है किन्तु गुरु जी के द्वारा जब ये शब्द उनकी भावनाओं से मिश्रित होकर निकलते हैं तब उनका प्रभाव वा अनुभव अकथनीय है।

गुरुवर श्री हमेशा कहते हैं मुझे तो अपने भगवान् और जाप पर पूर्ण विश्वास है उससे बड़ी औषधि और कोई भी नहीं। अपने सभी शिष्यों को भी वे यही सिखाते हैं। कोई भी प्रतिकूलता आए तो वे कहते हैं घबराओ नहीं, जाप लगाओ, सब ठीक हो जाएगा।

नवंबर, 2019 में हमारा विहार मेरठ से अलीगढ़ के लिए हो रहा था। विहार में 27 नवंबर की रात्रि मुझे तेज बुखार आया।

गुरु जी के पास से आरोग्य लाभ हेतु आशीर्वाद आया और समाचार प्राप्त हुआ कि लालवर्णी 'ॐ' प्रणव बीजाक्षर का ध्यान करो अभी सब ठीक हो जाएगा।

गुरु की वाणी में तो साक्षात् सरस्वती का वास होता है। 15 मिनट भी पूरे नहीं हुए मैं पसीनों में भीग गई और 102^{0}c बुखार नॉर्मल पर आ गया। 3-4 दिन से चल रहा बुखार जो औषधियों से भी ठीक नहीं हो रहा था गुरु कृपा से तुरंत ठीक हो गया।

जब भी कोई शारीरिक प्रतिकूलता होती है तब गुरु जी कहते हैं जहाँ परेशानी हो उस स्थान पर 'ॐ' का ध्यान करो। उत्तमांगों पर अपने इष्ट, आराध्य जिनेन्द्र का ध्यान करो।

ऐसे हैं पूज्य गुरुदेव जो स्वयं तो ध्यानादि में तत्पर रहते ही हैं और अन्यों को भी उनके कल्याण हेतु भक्ति में संलग्न करते हैं।

जिनशासन है प्राण

जिनशासन के संरक्षण और संवर्द्धन के प्रति गुरुवर श्री की जागरूकता अनुपमेय है। जिनशासन ही मात्र एक ऐसा शासन है जिसमें शासित रहकर जीव स्वपद को प्राप्त कर सकते हैं। 'श्री' अर्थात् केवलज्ञान वा मुक्ति लक्ष्मी से युक्त करने वाला यह श्रीमंतों का एक मात्र शासन है। गुरु जी कई बार कहते हैं कि पूर्वाचार्यों ने शास्त्र रचना आदि के माध्यम से जिनशासन को जीवंतता प्रदान की जिससे हम आज अपना कल्याण करने में समर्थ हैं अब कुछ ऐसा करना है कि आगे आने वाले हजारों वर्षों तक जिनशासन के माध्यम से भव्य जीव अपना कल्याण करने में समर्थ हो सकें।

गुरु जी कहते हैं 'बेटा! हम विराट, उदार और दूरदृष्टि के साथ ही जिनशासन की प्रभावना कर सकते हैं। सहस्रों मूर्तियों की प्रतिष्ठा, जिन मंदिर निर्माण, प्राकृत ग्रंथ लेखनादि कार्यों में वे सदैव तत्पर रहते हैं। गुरु जी कोई भी कार्य करें किन्तु उसके पीछे उनका उद्देश्य जिनशासन की चिरकालीन व स्थायी प्रभावना होता है।

एक बार गुरु जी स्फटिक मणिमय प्रतिमाओं का प्रतिष्ठा हेतु अवलोकन कर रहे थे। वे प्रतिमाएँ बहुत सुंदर व आकर्षक

थीं। हमने भी एक प्रतिमा को अपने हाथ में ले लिया। तभी गुरु जी ने एकदम कहा 'अरे बेटा!' आराम से, ये मूर्तियाँ नहीं, मेरे प्राण हैं। इन जिनबिंबों में मेरे प्राण बसते हैं।'

गुरुवर श्री की ये उत्कृष्ट भावनाएँ हृदयस्पर्शी थीं। जब भी गुरु जी मूर्तियों का अवलोकन करते हैं तो उनके चेहरे के भक्ति से परिपूरित, भोले बालक के समान भाव देखने योग्य होते हैं।

जनवरी 2020 में शौरीपुर में गुरु जी के सान्निध्य में पंचकल्याणक संपन्न हुए। 10-12 स्थानों की प्रतिमाएँ प्रतिष्ठा के लिए आई हुईं थी। पंचकल्याणक के संपन्न होने पर सभी स्थानों से लोग प्रतिमाएँ लेने आए। अपने ही समक्ष उन प्रतिमाओं को रखवाकर गुरु जी उन्हें सौंपते और कहते पूर्ण विनय और सावधानी से ले जाना। कई प्रतिमाएँ पाषाण की थीं, तो कई रत्नों की और कई धातुओं की। पूरा दिन उन्हीं में हो गया।

शाम को आचार्य वंदना के पश्चात् हमने कहा गुरु जी आज तो आपका पूरा दिन ही मूर्तियों में हो गया, बहुत थकान हो गई होगी। गुरु जी ने तुरंत कहा 'अरे! आज तो बहुत सौभाग्य का दिन है जो जिनबिंबों के साथ व्यतीत हुआ। ऐसा दिन मेरे जीवन में प्रतिदिन आए।'

इन शब्दों को कहते हुए गुरुवर श्री की मुख मुद्रा अवलोकनीय थी। जिनशासन ही जिनका प्राण है ऐसे गुरुवर को मेरा शत-शत प्रणाम है।

असह्य दुःख

गुरुवर श्री कई बार कहते हैं कि जिनशासन के लिए मेरा पूरा जीवन समर्पित है। गुरु जी के जीवन में कई बार स्वास्थ्य संबंधी प्रतिकूलताएँ आईं और ऐसा लगा....। इन शब्दों को लिखने का साहस मेरी लेखनी में नहीं। गुरु जी कहते हैं कि जब मुझे प्रकृति ने, नियति ने समय दिया है तो वह मुझसे और भी कुछ कराना चाहती है। और मुझे भी समय मिला है तो मुझे जिनशासन को और मजबूत बनाना है।

जनवरी 2016 में गुरुवर श्री ससंघ तिजारा में विराजमान थे। संघस्थ मुनि श्री संयमानंद जी महाराज ने गुरुवर श्री के समक्ष भावना प्रस्तुत की कि इसी प्रांगण में एक और जिनमंदिर का निर्माण हो जिसमें नंदीश्वर द्वीपादि की रचना हो। गुरुवर श्री व समस्त संघ ने विचारकर कहा भावना तो बहुत उत्तम है। वास्तु की अपेक्षा से भी क्षेत्र के लिए श्रेष्ठ होगा और क्षेत्र की शोभा तो बढ़ेगी ही।'

इस संपूर्ण जिनमंदिर निर्माण का सौभाग्य प्राप्त हुआ मुनि श्री संयमानंद जी महाराज के गृहस्थावस्था की अपेक्षा से पुत्र एकांत भैया को। इंजीनियर आदि आए, क्षेत्र के प्रमुख श्री ज्ञानचंद जी, श्री नरेंद्र जी, श्री जीवंधर जी, नरेंद्र 'कालू', निर्मल जी, शंभू दयाल, रवि पैट्रोल पंप आदि सभी क्षेत्र की उन्नति से

बहुत प्रसन्न थे। उन्होंने गुरुवर श्री से तभी मंदिर शिलान्यास की प्रार्थना की। पुण्य से शिलान्यास का मुहूर्त भी आसपास में निकल आया। संपूर्ण समाज में आनंद का वातावरण बन गया तथा उल्लास व उमंग के साथ कार्यक्रम संपन्न हुआ।

मंदिर निर्माण प्रारंभ हुआ कुछ ही समय में लगभग 3 मंजिल बनकर तैयार हो गयीं। तभी मंदिर कमेटी भी बदल गयी और ज्ञानचंद जी की आयु भी पूर्ण हो गयी। **'विनाशकाले विपरीत बुद्धि'** की कहावत यहाँ चरितार्थ हुई। नवीन कमेटी ने मंदिर जी का निर्माण रुकवा दिया और इतना ही नहीं ऊपर की मंजिल तुड़वा भी दी।

गुरुवर श्री की सहनशक्ति और गांभीर्य वंदनीय है। जब यह समाचार संघ को ज्ञात हुआ तो सब महाराज जी ने कुछ-न-कुछ कहा किन्तु गुरु जी शांत रहे फिर भी हृदय की पीड़ा चेहरे पर तो झलक ही गयी थी। बौलखेड़ा में गुरुवर श्री ने तिजारा की कमेटी को बुलवाया। नवीन मंदिर के विषय में चर्चा होने लगी तब गुरुवर श्री ने एक बात कही जिसे सुनकर हमारी आँखें नम हो गईं। उन्होंने कहा 'तुम मेरा सिर धड़ से अलग कर देते तो मुझे दुःख नहीं होता किन्तु मंदिर तोड़ने का यह दुःख तो उससे भी असह्य है।'

यह हानि मात्र मंदिर की नहीं अपितु संपूर्ण जिनशासन की हानि थी। गुरु जी ने कहा 'जिनभक्तों के हाथ हमेशा मंदिर निर्माण के लिए उठे हैं किन्तु आज पंचमकाल इतना भी आगे

नहीं बढ़ा कि जिनानुयायी ही जिनमंदिर तोड़ने के लिए आगे बढ़ें। मैं तो इतनी प्रार्थना करता हूँ कि भगवान् इन्हें सद्बुद्धि दे।'

ऐसे करुणामयी, जिनशासन संवर्द्धक, सम्यक् मार्गनिर्देशक गुरु के चरणों में मैं कोटिशः नमन करती हुई भावना भाती हूँ कि मुझे भव-भव में आप सम गुरु मिलें जो मुझे जिनशासन के स्तंभ रूप दृष्टिगोचर होते हैं।

बात कायोत्सर्ग की नहीं

पूज्य गुरुदेव एक समीचीन साधक हैं। उनकी प्रत्येक क्रिया-चर्या को देखकर ही आनंद का निर्झर प्रस्फुटित होता है या यूँ कहें कि स्वतः ही विशुद्धि बढ़ती है। प्रतिपल, प्रत्येक क्रिया में जागरूकता हमें भी जागरूक रहने का संदेश देती है। गुरु जी सहजता में ही ऐसा कह जाते हैं जो आगम-वाक्य से कम नहीं होता। साधु की भाषा समिति उनकी भाषा को मर्यादित करती ही है। किन्तु गुरुवर श्री की विशेषता है कि वे प्रमोद भाव में भी शब्दों को चयनित कर बोलते हैं। जिनशासन, जिनागम की गरिमा और मर्यादा का पालन करना तो उनके जीवन का अंग है।

मई 2019 में नोएडा में धवला जी ग्रंथ की वाचना चल रही थी। गुरु मुख से सिद्धांत ग्रंथों को पढ़ने-सुनने कई साधु त्यागी-व्रती भी उपस्थित थे। एक दिन की बात है गुरु जी अपने पाठों में संलग्न थे और हम व अन्य त्यागी-व्रती वहाँ उपस्थित थे तभी किन्हीं त्यागीव्रती ने फाइल में मक्खी को जाते हुए देख लिया पुनः उसे बाहर निकालकर उसके प्राणों की रक्षा की।

वह प्रमोदवश बोला 'अरे! अच्छा है मैंने देख लिया वरना अभी चार कायोत्सर्ग करने पड़ते।' यह बात गुरु जी ने सुन ली और तुरंत कहा 'बेटा! बात कायोत्सर्ग की नहीं है। ये कहो उस

जीव के प्राण बच गए।' इतना कहकर गुरु जी पुनः पाठ करने लगे। किन्तु मेरा चिंतन समाप्त नहीं हुआ। मैंने सोचा कि गुरु जी वास्तव में विलक्षण हैं प्रमोद भाव में भी ऐसी बात न बोलते हैं और न ही सुनते हैं। स्वयं समीचीनता के साथ साधना करते हुए शिष्यों को भी समीचीनता का बोध कराते हैं। आज भी कुछ बोलते हुए गुरु जी की ये बात स्मृति पटल पर आ जाती है जो सदैव हमें भाषा समिति के निकट रखती है।

मिश्री सी मधुर वाणी

वाणी व्यक्ति के व्यक्तित्व की परिचायक होती है। किसी ने कहा है 'इंसान एक दुकान है और जुबान उसका ताला, ताला खोलने पर ही पता चलता है कि दुकान कोयले की है या हीरों की।' आचार्य श्री रविषेण स्वामी ने भी कहा है।'

सतां हि कुलविद्येयं यन्मनोहरभाषणम्।

''मधुर वचन सत्पुरुषों की कुलविद्या है।'' गुरुवर श्री की वाणी से तो सब परिचित हैं ही। उनकी वाणी का माधुर्य सहज ही सबको आकर्षित कर लेता है। गुरु जी की विशेषता है कि वे बड़ी से बड़ी गलती पर भी शिष्यों को बहुत प्यार से समझाते हैं और शायद यही कारण है कि पुनः शिष्य भी उस गलती को दोबारा नहीं करता। कभी तो ऐसा लगता है जैसे क्रोध और गुरु जी का कोई संबंध ही नहीं है। क्रोध स्वयं उनसे बैर बांधकर बैठ गया हो।

गुरुवर श्री के प्रवचन **'मीठे प्रवचन'** के नाम से विख्यात हैं। कई लोग आते हैं और कहते हैं कि गुरुवर श्री बहुत मीठा बोलते हैं। 2014, अजमेर चातुर्मास की बात है–कई दर्शनार्थी दर्शन को आए थे। स्वाध्याय चल रहा था कि तभी एक बाई जी आयीं और बोली 'महाराज! घणों मीठा बोलत हो, जिनवाणी पर

रोज प्रवचन सुनत हूँ। समझ तो जितना आवत है ठीक है, लेकिन तुम्हारी वाणी सुनने बैठ जात हूँ।'

हम सभी मुस्कुरा उठे। सत्यता है गुरुवर श्री की वाणी ऐसी है जो कानों में तो मिश्री सी घोलती ही है साथ ही हृदय में धर्म का सार भी घोलती है।

अनुशासक

अनुशासन को परिभाषित करने के लिए यदि कोई उदाहरण है तो वे हैं पूज्य गुरुदेव। उन्नत व श्रेष्ठ जीवन के लिए अनुशासन कितना महत्वपूर्ण है ये बात हमने गुरु जी से जानी। गुरु जी कई बार कहते हैं पटरी पर चलती हुई ट्रेन अपने गन्तव्य तक पहुँच जाती है यदि अनुशासन अर्थात् पटरी से बाहर हो जाए तो विध्वंस हो जाता है, बस ऐसा ही जीवन का गणित है, अनुशासन के साथ मानव अपने गन्तव्य तक पहुँच सकता है किन्तु उससे विहीन जीवन लक्ष्य को प्राप्त करने में समर्थ नहीं।

गुरुवर श्री का 2017 का चातुर्मास ग्रीन पार्क, दिल्ली हुआ। तब डॉ. जयकुमार उपाध्ये गुरु सान्निध्य में आए। वे कई बार कहते 'महाराज श्री! आपका ज्ञान व गांभीर्य मुझे सहज ही आपकी ओर आकर्षित करता है।' समय-समय पर होने वाले कार्यक्रम, गोष्ठी और वाचनाओं में भी उपस्थित रहे। एक दिन किसी कार्यक्रम के पश्चात् वे गुरु जी से बोले 'महाराज श्री! मैं सब देख रहा था कि आपका संघ कितना अनुशासित है।

किसी को आना या जाना था तो आपको संकेत करके ही आ जा रहा था। ऐसा अनुशासन तो हम स्कूल, कॉलिजों में देखते हैं।

सन् 2010 में आचार्य श्री विद्यानंद जी महाराज एवं पूज्य गुरुदेव ससंघ ग्रीन पार्क में विराजमान थे। आचार्य श्री नए-नए श्लोक, शोधपूर्ण बातें बता रहे थे। पूरा संघ वहाँ बैठा हुआ था। स्वाध्यायादि पूर्ण होने पर आचार्य श्री विद्यानंद जी महाराज, गुरुवर श्री से बोले 'महाराज जी! आपका संघ बहुत अनुशासित है। मैं बहुत देर से देख रहा हूँ कि मेरे यहाँ बैठे हुए भी न तो कोई आपके बिना संकेत के आ रहा है और ना जा रहा है। आप एक कुशल अनुशासक व संघ संचालक हैं।'

गुरुवर श्री के मूलसंघ में ही नहीं अपितु उनके उपसंघ चाहे कितने भी दूर हों सदैव उनकी आज्ञा व अनुशासन में रहते हैं। साधुओं के लिए गुरु जी कहते हैं कि एक कक्ष में कम से कम दो साधु रहें और आर्यिका व ब्रह्मचारिणी बहनें अर्थात् सभी संपूर्ण आर्यिका संघ एक कक्ष में रहे।

यही कारण है गणिनी आर्यिका गुरुनंदनी माता जी, आर्यिका सौम्यनंदनी माता जी, आर्यिका पद्मनंदनी माता जी, हम या अन्य संघ एक साथ ही रुकते हैं।

गुरु जी का यही अनुशासन हमारे जीवनोत्थान में उपकारी सिद्ध होता है और साथ ही जिनशासन प्रभावक भी है। अनुशासन प्रिय, भव्यों को शासित करने वाले, इस पंचम काल में शास्ता स्वरूप गुरुवर श्री के चरणों में अनंतशः नमन करती हूँ।

चित्त परिवर्तन

जहाँ-जहाँ पुण्यशाली जीव पहुँचते हैं वहाँ-वहाँ प्राणियों के भावों में स्वयं अंतर आ जाता है। उनकी विशुद्ध वर्गणाओं से क्रूर से क्रूर प्राणी के परिणाम भी शांत होने लगते हैं। जनवरी 2020 में शौरीपुर में धवला जी पुस्तक-2 की वाचना हुई। वहाँ की पवित्र वर्गणाएँ स्वयं विशुद्धि कारक थीं उस पर गुरु सान्निध्य व सिद्धांत ग्रंथ वाचना। एक दिन तत्त्वचर्चा के मध्य मुनि प्रज्ञानंद जी महाराज ने बताया कि गुरु जी का 2005 का चातुर्मास शौरीपुर में हुआ था।

शौरीपुर के दर्शन जिन्होंने किए होंगे वे जानते होंगे कि शौरीपुर है तो वन प्रदेश ही। कई बार तो जंगली जानवर भी आ जाते हैं। उन्होंने बताया जिस समय गुरु जी के चातुर्मास की बात फैली उस समय यह भय भी सबको था कि जंगली जानवर तो रात्रि में बाहर निकलते ही हैं किन्तु वहाँ पर एक डाकू है उससे कैसे रक्षा होगी? कैसे आना जाना होगा? यह बात संभवत: उस डाकू के पास तक भी पहुँची।

तब उसने गुरु जी के पास पत्र भेजा जिसमें लिखा था 'महाराज जी को प्रणाम, महाराज जी आप चिंता न करें जब तक आप यहाँ रहेंगे तब तक आपके किसी भी भक्त को कोई परेशानी नहीं होगी।'

हमने इस बात को जब सुना तो बहुत प्रसन्नता हुई और सोचा वास्तव में पुण्यशाली व्यक्ति कहीं भी चले जाएँ उनके माध्यम से अनेक जीव अपना कल्याण करने में समर्थ होते हैं।

हमने स्वयं देखा कि कितने ही राजनीतिज्ञ व जैनेतर भाइयों ने गुरु दर्शन कर ही अभक्ष्य (माँस, मदिरा आदि) का त्याग कर दिया। कितनों कि तो आँखों से आँसू गिरने लगते तब ऐसा लगता जैसे इनका अवगुण वा दोष रूपी मल आँखों से बहकर निकल रहा हो। धन्य हैं ऐसे संत जिन्होंने सहस्रों व्यक्तियों के चित्त व चरित्र को निर्मल बना दिया।

सकारात्मकता

सकारात्मकता जीवन को नई ऊर्जा प्रदान करती है। यह वह शक्ति है जिससे प्रतिकूलताओं में भी अनुकूलता का अनुभव होता है। गुरुवर श्री तो मानो इस शक्ति के पुंज ही हैं। वे हमसे भी सदैव कहते हैं कि 'अपने बारे में न तो नेगेटिव बोलो और ना नेगेटिव सुनो।' संभवत: इसीलिए गुरु जी आचार्य वंदना के बाद सामूहिक रूप से बुलवाते हैं 'मैं पूर्ण स्वस्थ हूँ।'

यदि हम कभी गुरुवर श्री से कह दें कि ये काम तो हमसे होगा नहीं तब वे कहते हैं 'आत्मा में अनंत शक्ति है, आप सब कुछ कर सकते हो।' गुरुवर श्री से कभी भी उनके स्वास्थ्य के विषय में पूछें तो हमेशा कहते हैं 'Top से भी ऊपर' चाहे परिस्थिति कैसी भी हो।

गुरु जी का 2019 का चातुर्मास नोएडा सेक्टर 50 में हुआ। नीचे बेसमैंट में पूरा संघ ठहरा हुआ था। नीचे कक्ष में हवा का कोई साधन न था। कृत्रिम साधनों का तो उनका त्याग ही है, वे प्रयोग करते ही नहीं किन्तु वहाँ प्राकृतिक वायु का भी प्रवेश नहीं था। जो भी लोग कक्ष में दर्शन करने जाते वे सब यही कहते आचार्य श्री इस कक्ष में कैसे रुके हैं हम तो कुछ देर में ही पसीनों में भर गए।

कमेटी भी चिंतित थी। अपनी ओर से पूर्ण प्रयास करने के पश्चात् भी सफलता नहीं मिल रही थी। वहाँ के अध्यक्ष श्री योगेश जी ने हमें बताया कि उन्होंने एक बार कुछ चिंता को लिए गुरुदेव से पूछा 'महाराज जी! सब ठीक तो है ना, आपको कैसा लग रहा है?' गुरु जी ने कहा 'अरे वाह! यहाँ तो स्वर्ग का आनंद आ रहा है।'

बस इस उत्तर को सुनते ही चेहरे पर प्रसन्नता छा गई और सब विकल्प दूर हो गए। योगेश भैया कई बार कहते हैं कि साधु तो बहुत हैं पर आचार्य श्री जैसे साधु मिलना बहुत कठिन है।'

धन्य हैं ऐसे गुरुवर जो सभी प्रतिकूलताओं को भी मुस्कुराकर स्वीकार कर अपनी सकारात्मकता से उन्हें भी अनुकूलता रूप बना लेते हैं।

मैं हूँ ना

पूज्य गुरुदेव सभी के लिए एक आदर्श व प्रेरणा स्रोत हैं। गुरुवर श्री की विशेषता है कि वह आबाल-वृद्ध सभी को प्रोत्साहित कर नवीन उमंग का संचार कर देते हैं, जीवन से हारे हुए मनुष्य में पुनः जीने का साहस भर देते हैं। गुरुवर श्री का प्रोत्साहन व उनकी प्रेरणा ही शिष्यों या भक्तों के लिए उन्नति के सोपान बनते हैं।

अक्टूबर, 2008 में हम गृह त्याग कर गुरु चरणों में आए। अष्टाह्निका हेतु तिजारा से धारुहेड़ा विहार हुआ। श्री सिद्धचक्र विधान वहाँ प्रारंभ हुआ। सांयकालीन प्रवचन विद्वान् या त्यागी व्रतियों के हुआ करते थे। एक दिन दोपहर में स्वाध्याय के बाद गुरु जी ने कहा 'बेटा! आज आपके प्रवचन होंगे।' ये शब्द तो मेरे लिए अनपेक्षित था, कुछ सोचा भी नहीं था। हमने कहा 'गुरु जी! हमें तो आए अभी महीना भर भी नहीं हुआ हम नहीं बोल पाएँगे।' गुरु जी ने कहा 'मैं सिखाऊँगा, तुम चिंता क्यों करते हो।' गुरु जी ने हमें पढ़ाया पुनः जब हम जाने लगे तो हमने कहा 'गुरु जी! हमें बहुत डर लग रहा है।' गुरु जी ने मुस्कुराते हुए कहा 'बेटा! डरना नहीं, निर्भीकता से बोलना है, मैं हूँ ना, चाहे णमोकार मंत्र ही सुना आओ, कोई तुमसे कुछ नहीं कहेगा।' बस इन्हीं शब्दों का सामर्थ्य आज भी हमारे साथ है।

गुरुवर श्री का सान्निध्य व आशीर्वाद प्राप्त करने वाले भक्तों ने भी अनुभव किया होगा कि निराशा में आशा, भयभीत

में निर्भयता, वा साहस भरने में वे कितने कुशल हैं। और गुरु जी के एक वाक्य से तो सभी परिचित भी होंगे 'Don't worry, Be happy' तुम चिंता क्यों करते हो मैं बैठा हूँ ना' इन शब्दों का साहस ही व्यक्ति की प्रतिकूलता दूर कर देता है।

जनवरी, 2020 में गंगापुर सिटी के लोग पूज्य गुरुदेव के पास शौरीपुर पंचकल्याणक हेतु आए। संघस्थ मुनि श्री श्रद्धानंद जी एवं मुनि श्री पवित्रानंद जी महाराज गंगापुर सिटी के आसपास में थे। गुरुवर श्री ने कहा मैं तो कब पहुँच पाऊँगा कह नहीं सकता, दोनों महाराज श्री यह कार्यक्रम संपन्न करा सकते हैं।

गुरु जी से आशीर्वाद प्राप्त कर वे बोले 'गुरु जी! आपने हमें धर्मसंकट से निकाल लिया।'

मुनि श्री श्रद्धानंद जी महाराज को सूचना मिलने पर उन्होंने समाचार भेजा 'गुरु जी, हम इस योग्य कहाँ हैं? तब गुरु जी ने कहा 'आप योग्य हैं, यदि ऐसा नहीं होता तो मैं समाज को संकेत क्यों करता, चिंता मत करो, सब अच्छा होगा हमारा आशीर्वाद है।'

बात चाहे लेखन की हो या जिनधर्म प्रभावक कार्यक्रमों की या स्वयं संयम पालन की, जिस उदारता, विराटता व वात्सल्य के साथ गुरुवर श्री प्रोत्साहन देते हैं, आगे बढ़ने की प्रेरणा देते हैं वह शब्दातीत है। गुरुवर श्री की यही प्रेरणा ही उनके समस्त शिष्यों की शक्ति व उन्नति का कारण भी है।

ऐसे उदार व प्रेरक व्यक्तित्व के धनी आचार्य गुरुवर को शत-शत नमन करती हूँ।

श्रेय पूज्यों को

गुरुवर श्री की मिष्ट वाणी से सभी परिचित हैं। उनके हित, मित व प्रिय वचन शीघ्र सबको मुग्ध कर लेते हैं। वाणी में समुद्र सम गंभीर घोष, सर्वज्ञ कथित तत्त्वोपदेश तथा माँ के समान वात्सल्य व करुणा सभी को सहज आकर्षित कर लेती है।

'प्रबोधाय विवेकाय, हिताय प्रशमाय च।
सम्यक्तत्त्वोपदेशाय, सतां सूक्ति प्रवर्तते॥'

सज्जनों के सुवचन प्रकृष्ट बोध, विवेक, हित, कषायों के शमन और सम्यक् तत्वोपदेश के लिए प्रवर्त या निष्पन्न होते हैं।

कई बार तो लोग कहते हैं कि ऐसा लगता है महाराज श्री बोलते रहें और हम सुनते रहें। इतना मीठा बोलते हैं कि लगता है बस वाणी निरंतर मुखरित होती रहे।

प्रताप नगर जयपुर में पंचकल्याणक चल रहे थे। केवलज्ञान कल्याणक के दिन समवशरण में गणधर परमेष्ठी के रूप में विराजित गुरुवर श्री से एक बाई जी ने प्रश्न किया 'महाराज श्री! आपका मीठे का तो आजीवन त्याग है तो आप इतना मीठा कैसे बोलते हैं?' जनसमूह के चेहरे प्रश्न सुनकर खिल उठे। गुरु जी ने बहुत गंभीरता से उत्तर देते हुए कहा 'मीठा बोलने के लिए मीठा खाने की जरूरत नहीं होती। ये तो

व्यक्ति का सहज स्वभाव व पूर्व संस्कार भी होते हैं। मुझे मेरे गुरु आचार्य श्री विद्यानंद जी महाराज जी से ऐसे ही संस्कार प्राप्त हुए।' उत्तर सुनते ही तालियों की गड़गड़ाहट से संपूर्ण मंडप गुंजायमान हो उठा।

जब मैंने ये उत्तर सुना तो सोचने लगी उस महान् व्यक्तित्व के विषय में, जो अपने सभी अच्छे कार्यों वा बातों का श्रेय अपने आराध्य को देते हैं। जिनको संस्पर्श करने में अभिमान भी डरता है और विनम्रता या मृदुता सिरमौर बन सदैव साथ रहती है। वह साधु जो दुनिया के सामने एक सर्वश्रेष्ठ उदाहरण के रूप में प्रस्तुत है कि **'जो जितना झुकता है वह उतना ऊपर उठता है।'**

गुरु जी सदैव हमें भी यही सिखाते हैं कि अपनी उपलब्धि का श्रेय सदैव अपने पूज्यों को दें और यदि कुछ बुरा हो जाए तो स्वयं की गलती मानकर स्वीकार करो।

नैतिकता का बोध, जीवन जीने की कला, आध्यात्मिक व व्यवहारिकता का परिज्ञान कराने वाले उन गुरुवर श्री के चरणों में कोटिशः नमन करती हूँ जो अपने सभी शिष्यों के कल्याणार्थ समय-समय पर कभी सूत्रवाक्य तो कभी व्याख्यान कर बालक की भाँति मोक्षमार्ग पर चलना सिखाते हैं।

महान् दार्शनिक

गुरुवर श्री एक विलक्षण प्रतिभा के धनी हैं। कहते हैं ना कि महापुरुषों की क्रियाएँ चेष्टाएँ व चिंतन बिल्कुल अलग ही होता है ऐसा ही कुछ परिलक्षित होता है पूज्य गुरुदेव में। गुरुवर श्री का अद्भुत चिंतन ही उन्हें एक महान् चिंतक वा दार्शनिक के रूप में प्रसिद्धि दिलाता है। ग्रंथ, कारिका, श्लोक आदि की तो क्या कहें उनके द्वारा की गई एक शब्द की व्याख्या भी कुछ अद्भुत ही होती है।

गुरु जी शौरीपुर में कातंत्ररूपमाला पढ़ा रहे थे। उसी मध्य भक्त शब्द की व्याख्या करते हुए गुरु जी ने कहा भक्त शब्द संस्कृत की भज् धातु में क्त प्रत्यय जोड़कर बना है। 'भक्त' शब्द का व्युत्पत्ति अर्थ है टूटा हुआ। जो संसार से टूटकर प्रभु के चरणों में आए वो है भक्त। उन्होंने कहा जब तक फल पेड़ से टूटेगा नहीं तब तक पृथ्वी का गुरुत्वाकर्षण बल उस पर काम नहीं करेगा। डाल से टूटते ही पृथ्वी उसे अपनी ओर खींच लेती है। उसी प्रकार व्यक्ति जब तक संसार से टूटेगा नहीं तब तक सिद्धों का गुरुत्वाकर्षण उस पर काम नहीं करेगा। संसार से टूटते ही वह सिद्धों की श्रेणी के योग्य हो जाएगा।

यदि गुरु जी कृत शब्दों अथवा व्याख्याओं का वर्णन किया जाए तो शायद एक नवीन पुस्तक की ही रचना हो जाए।

एक बार गुरु जी बोले क्या तुम जानते हो 'फूलो फलो' का मतलब क्या होता है? उन्होंने बताया 'फूलो' अर्थात् ऐसे श्रेष्ठ कार्य करो जिससे तुम्हारा यश दिग्दिगंत तक व्याप्त हो जाए और 'फलो' मतलब कि जैसे वृक्ष फलों से लदकर झुक जाता है वैसे तुम भी गुणों से परिपूरित हो विनम्र हो जाओ।

ऐसे एक नहीं अनेक शब्द हैं। जैसे दमखम, खतरनाक, मूर्ख इत्यादि किन्तु सभी को यहाँ लिखना संभव नहीं।

फरवरी सन् 2020 में धवला जी की वाचना के पश्चात् संघ शौरीपुर से विहार कर शिरसागंज पहुँचा। वहाँ सुबह कॉलेज में प्रवचन हुए और दिन में स्वाध्याय व शंका समाधान हुआ। उस कॉलेज के पूर्व हिंदी लेक्चरर व आशु कवि बहादुर सिंह निर्दोषी जी भी गुरु चरणों में कुछ जिज्ञासाएँ लेकर के आए।

वे गुरुवर श्री से प्रश्न पूछते और गुरुवर श्री उनके उत्तर देते। उत्तर तो अद्भुत थे ही किन्तु उससे भी अद्भुत बात यह थी कि जिस प्रश्न को आचार्य संघ वा बैठे हुए श्रावक भी समझ नहीं पा रहे थे और प्रत्येक प्रश्न पूछने के बाद निर्दोषी जी स्वयं ही कहते 'महाराज श्री! आप समझ पा रहें हैं ना, मैं क्या कहना चाहता हूँ?' गुरु जी उन प्रश्नों के उत्तर सहजता में दे रहे थे। निर्दोषी जी बाद में बोले 'महाराज श्री! आज मैं पूर्ण रूप से संतुष्ट हुआ। आपके शब्द सौष्ठव युक्त समाधानों ने मुझे चकित कर दिया। आप वास्तव में बहुत महान् दार्शनिक हैं।'

अद्भुत व महान् विचारों के धनी पूज्य गुरुवर आज के युग में महापुरुष ही हैं। जिनके विचार व्यक्ति की दिशा व दशा दोनों ही परिवर्तित कर देते हैं।

करुणा सिंधु

करुणा और दया की प्रतिमूर्ति हैं पूज्य गुरुदेव। **'धम्मो दयाविसुद्धो'** दया से विशुद्ध धर्म है। दया, धर्म का प्राण है। दया के बिना धर्म की स्थिरता ही नहीं। दूसरे के कष्ट वा पीड़ा का अनुभव जहाँ स्वयं को ही होने लगे यह दया का ही परिणाम है। गुरु जी में तो मानो दया-करुणा का झरना ही निःसृत होता है।

फरवरी 2020 में गुरु जी ससंघ अतिशय क्षेत्र राजमल में विराजमान थे। संध्याकालीन आचार्य वंदना चल रही थी। एक ततैया कक्ष में आ गया और परेशान सा करने लगा। काट न ले इसीलिए मुनिराजों ने कहा 'दरवाजा खोल दो, इस ततैये को बाहर कर दो।' तभी गुरु जी बोले 'अरे भैया! बाहर बहुत ठंडी है, रहने दो इसे भी अंदर। जब इसे हमसे कोई परेशानी नहीं, तो हम इससे परेशान क्यों हों।' एक छोटे जीव के प्रति भी इतनी करुणा देखकर मन विस्मित था।

दिसंबर 2019 में आचार्य संघ अलीगढ़ से फिरोजाबाद के लिए विहार कर रहा था। विहार में जन समूह बहुत था। सामने से आती हुई एक बाइक से सड़क के किनारे धूप में लेटा पिल्ला टकरा गया। टक्कर होते ही उस छोटे से पिल्ले की जोर से आवाज निकली। गुरु जी ने जैसे ही यह दृश्य देखा तुरंत

सड़क के दूसरे किनारे पर तड़पते पिल्ले के पास पहुँचे। उसे सहलाते हुए णमोकार मंत्र सुनाया, उसे पुचकारा। गुरु जी ने जैसे ही उस पर हाथ रखा उसका छटपटाना, तड़पना बंद हो गया। पुनः कुछ ही मिनटों में उसकी मृत्यु हो गयी। इस दृश्य को हमने भी स्वयं अपनी आँखों से देखा। दृश्य देख मन आत्मविभोर हो गया।

धन्य हैं ऐसे संत, जिनकी करुणा प्राणी मात्र के प्रति है। मानव हों, तिर्यंच हों या देव। तिर्यंचों की भाषा तो समझ नहीं आती किन्तु मानव वा देवों की विचारधारा या जीवन गुरुवर श्री के माध्यम से बदलते हुए देखते हैं तो सोचते हैं कि हम स्वयं कितने पुण्यात्मा हैं जो इस पंचमकाल में भी आचार्य श्री वसुनंदी जी मुनिराज जैसे गुरु मिले। और मेरे लिए तो ये करुणामूर्ति साक्षात् भगवान् ही हैं।

जीवन रक्षक

दुनिया में कुछ लोग ऐसे हैं जो भगवान् तो नहीं किन्तु श्रद्धा की दृष्टि से देखो तो भगवान् से कम भी नहीं। ऐसे ही हैं पूज्य गुरुदेव। बहुत से लोगों के जीवन में गुरुवर श्री के आशीर्वाद से ऐसा अतिशय घटित हुआ कि वे संपूर्ण जीवन ही उनकी देन मानते हैं। हमने स्वयं भी लोगों को कहते सुना है 'महाराज श्री! मेरा ये बेटा तो आपका ही दिया है अन्यथा हमने तो आस ही छोड़ दी थी।' कई लोग कहते हैं 'महाराज श्री! आपकी दी जिंदगी ही हम जी रहे हैं।' आयु कर्म तो कोई किसी का बढ़ा नहीं सकता किन्तु हाँ अल्फ, अकाल मरण आदि से बचाया भी जा सकता है। जैसे कीचड़ में फँसे वाहन को धक्का लगाकर बाहर निकालते हैं वैसे ही प्रतिकूलता रूपी कर्दम में फँसे जीवन को गुरु का आशीष रूपी धक्का सहसा ही निकाल देता है।

नवंबर सन् 2013 की बात है। गुरुवर श्री का चातुर्मास श्री जंबूस्वामी तपोस्थली बौलखेड़ा में चल रहा था। मेरठ निवासी श्रीमती अंजलि जी को डेंगू हो गया। और वह इतना बिगड़ गया कि ना तो डॉक्टर ही कुछ कह पा रहे थे और घर वालों ने भी आस छोड़ सी दी। ब्लड की कई बोतल चढ़ चुकीं किन्तु रक्तस्राव न रुकने से स्वास्थ्य और बिगड़ गया। प्लेटलेट्स भी

2000 से कम रह गयीं। नवंबर अंत में इनकी सुपुत्री का विवाह भी था।

जब दुनिया के सारे द्वार बंद हो जाते हैं तो एक द्वार है जो सदैव खुला रहता है वह है अपने आराध्य का। उनके परिवार जनों के माध्यम से यह समाचार गुरु जी को प्राप्त हुआ। तब गुरु जी ने कहा 'चिंता मत करो, शीघ्र स्वास्थ्य लाभ होगा, सभी लोग जाप लगाएँ' गुरुवर श्री की बातें सुन पारिवारिक जनों को कुछ शांति मिली। गुरु जी का आशीर्वाद मिलते ही डॉक्टर्स को भी विस्मित करने वाला सुधार उनके स्वास्थ्य में प्रारंभ हुआ और कुछ ही दिनों में पूर्ण स्वस्थ हो गईं। इतना ही नहीं अपनी पुत्री का विवाहादि का कार्यक्रम भी उन्होंने संपन्न किया।

वे आज भी जब हमारे पास आती हैं तब कहती हैं कि गुरु जी के द्वारा दिया गया मेरा यह जीवन उन्हीं के चरणों में समर्पित है। मैं तो अपनी जिंदगी जी चुकी हूँ अब तो सब उनकी ही देन है।

ऐसे एक नहीं सहस्रों भक्त हैं जिन्होंने गुरु के आशीर्वाद का प्रत्यक्ष प्रभाव अपने जीवन में देखा है। श्री नीरज कुमार जी 'एम.डी.' जिनवाणी चैनल आगरा, जब भी सपरिवार गुरु जी के पास आते हैं तो एक ही बात कहते हैं कि गुरु जी मेरा ये बेटा देवांश आपकी ही देन है आपके ही आशीर्वाद से यह स्वस्थ हो हम सबके बीच है।

दिल्ली रोहिणी में निवास करने वाले गुरु भक्त श्री प्रेमचंद जी जब भी गुरु जी के पास आते हैं तो वे गुरु जी से कहते हैं 'गुरु जी! हमारे पुत्र प्रांजुल को यदि आपका आशीर्वाद नहीं मिला होता तो आज वह हमारे मध्य नहीं होता। हम तो सदैव आपके ऋणी रहेंगे।'

सत्य है जिसके साथ गुरु का आशीर्वाद हो उसे दुनिया की कोई शक्ति पराजित नहीं कर सकती। बहुत सौभाग्यशाली होते हैं वे लोग जिन्हें ऐसे नि:स्वार्थ परमोपकारी, श्रेष्ठ तपस्वी, आदर्श गुरु का सान्निध्य प्राप्त होता है।

उन गुरुवर श्री के लिए क्या कहूँ जिन्हें श्रद्धावंत भगवान् मानकर स्वहृदय वेदी पर स्थापित कर सातिशय पुण्य का अर्जन करते हैं। धन्य हैं पंचम काल में श्री महावीर जिन सम गुरुदेव।

वात्सल्य धनी

वात्सल्य के महासागर हैं पूज्य गुरुदेव। वात्सल्य का प्रयोगात्मक रूप हम सदैव उनमें देखते हैं। गुरु जी कहते भी हैं कि सम्यग्दर्शन के आठ अंग हैं और आठों ही महत्वपूर्ण हैं। किन्तु शरीर में जो स्थान हृदय का होता है, सम्यग्दर्शन के अष्टांगों में वही स्थान वात्सल्य का होता है। बिना हाथ-पैर के व्यक्ति जी सकता है, धड़ विहीन भी कुछ क्षणों तक जीवित रह सकता है किन्तु हृदय से रहित एक पल भी नहीं रह सकता।

जिस प्रकार वस्तुओं को जोड़ने के लिए स्निग्धता की आवश्यकता होती है उसी प्रकार मानव को धर्ममार्ग से जोड़ने के लिए वात्सल्य अत्यावश्यक है। गुरुवर श्री का वात्सल्य सर्व विदित है ही। कई श्रावक व साधुवृन्द कहते हैं कि 'आचार्य वसुनंदी जी जैसा वात्सल्य कहीं दृष्टिगोचर नहीं होता।' अन्यों व स्वयं के अनुभव से कहूँ तो जो वात्सल्य एक माँ का अपनी संतान के प्रति होता है वही वात्सल्य गुरुवर श्री में सभी साधर्मियों के प्रति है।

संघस्थ बा. ब्र. प्रभाशीष भैया जी ने बताया कि जनवरी 2020 में जब गुरु जी शौरीपुर में विराजमान थे तब एक रात उन्हें जोर से खाँसी हुई। रात्रि लगभग 1:00 बजे की बात थी

गुरु जी स्वयं उनके निकट आए, गले व सिर को थोड़ा सहलाकर उन्हें सुला दिया। तब तो माँ की तरह गुरु जी ने सुलाया तो उन्हें नींद आ गयी। सुबह जब आँखें खुलीं तो गुरुवर श्री के उस वात्सल्य से उनकी आँखें नम हो गयीं।

गुरु जी का 2019 का चातुर्मास नोएडा में चल रहा था। उसी मध्य ग्रेटर नोएडा में विराजित आचार्य श्री भारत भूषण जी का स्वास्थ्य अत्यंत बिगड़ गया। उन्हें ऐसा लगने लगा जैसे अब आयु कर्म पूरा होने को है। तेज बुखार उतर नहीं रहा था, आहार लिया नहीं जा रहा था। समाचार प्राप्त होते ही गुरु जी व अन्य कुछ साधुगण एक बार में ही भीषण गर्मी में 23 कि.मी. चल ग्रेटर नोएडा पहुँचे।

लोगों ने बताया कि गुरु जी ने मानसिक स्वस्थता हेतु उन्हें धर्मोद्बोधन और शारीरिक स्वस्थता के लिए वात्सल्यपूर्वक स्वयं आहार कराया व वैय्यावृत्ति की। लगभग 3 दिन गुरु जी वहाँ रुके। महाराज जी के स्वास्थ्य में एक आश्चर्यकारक सुधार था। बुखार भी उतरा व सोच भी सकारात्मक हो गई। गुरु जी व साधुगण लौटकर नोएडा आ गए किन्तु कुछ दिनों तक गुरुवर श्री ने उनकी आहार चर्या हेतु बा.ब्र. प्रभाशीष भैया जी को भेजा। एवं निरंतर स्वास्थ्य संबंधी समाचार लेते रहे।

नोएडा व ग्रेटर नोएडा के लोगों के लिए तो यह दृश्य बहुत अद्भुत था। नोएडा के अध्यक्ष श्री योगेश जी की धर्मपत्नी श्रीमती अंजू जी ने कहा 'माता जी! गुरु जी को देखकर मुझे

अपने गुरु आचार्य श्री विमल सागर जी महाराज जी याद आ गई। जो वात्सल्य उनमें था वहीं वात्सल्य इनमें है। हम तो ऐसे गुरु को पा धन्य हो गए।'

संघस्थ सभी साधुगण, त्यागीव्रती कहते हैं कि जो वात्सल्य हमें गुरु जी से प्राप्त होता है वह शायद माता-पिता से भी प्राप्त ना हुआ हो।

साधु समूह, शिष्यों, भक्तों, साधर्मियों वा प्राणी मात्र के प्रति गुरुवर श्री का वात्सल्य अभिवंदनीय है। संभवतः यही वात्सल्य तीर्थंकर प्रकृति के बंध की पृष्ठभूमि हो। माँ के समान वात्सल्य गुण से परिपूरित ऐसे गुरुवर के चरणों में मुहुर्मुहु प्रणाम करती हूँ।

विस्मित करता है ज्ञान

अनेक विद्याओं को जानने वाला गुरुवर श्री का ज्ञान सभी को विस्मित करने वाला है। सिद्धांत हो या अध्यात्म, प्रथमानुयोग हो या चरणानुयोग, ज्योतिष हो या वास्तु, न्याय हो या व्याकरण, आयुर्वेद या योग हर विषय पर समान रूप से अधिकार रखने वाले गुरुवर श्री के ज्ञान को देखकर अचंभित होना तो सामान्य सी बात है। वर्षों पहले पढ़े हुए सिद्धांत के रहस्यों का उद्घाटन जब गुरुदेव करते हैं तो हम सोचते हैं कि कुछ माह पूर्व पढ़ा सिद्धांत तो विस्मृत हो जाता है किन्तु गुरु जी तो धन्य हैं जो वर्षों पूर्व पढ़े सिद्धांत को भी ऐसे पढ़ाते हैं जैसे कल ही पढ़ा है।

स्वाध्याय, कक्षा आदि में गुरु जी कई बार कहते हैं कि सन् 1992 में 1997 में या 1988 में हमने उस पुस्तक या शास्त्र में ऐसा पढ़ा था तो हमें आश्चर्य होता है 20-30 साल पूर्व किया अध्ययन भी स्पष्टतया उनकी स्मृति में है। और सबसे श्रेष्ठतम है एकांत वाद का खंडन करती हुई मात्र लोक रूढ़ियों पर विश्वास न करती हुई, तर्क युक्ति से युक्त समीचीनता को लिए उनका शास्त्र का व्याख्यान। हम कई बार विचार करते हैं कि यदि ऐसे शास्त्र ज्ञाता का व्याख्यान सभी को मिल जाए तो मार्ग पर भटकने वालों की संख्या में कमी आ जाए।

2019 नोएडा में धवला जी पु. 1 की वाचना चल रही थी। डॉ. शीतल चंद जी जयपुर, डॉ. अनिल भैया जी जयपुर

आदि विद्वान् उपस्थित थे। ग्रंथ वाचना के मध्य गुरु जी बहुत से ग्रंथों की गाथाएँ बोलते। हर विषय पर गाथाएँ सुनकर हम स्वयं विस्मित थे। तभी डॉ. अनिल भैया जी बोले 'महाराज श्री! आपको इतने ग्रंथों की गाथाएँ कैसे याद हैं, बड़ा आश्चर्य है।'

उस वाचना के पश्चात् गुरु जी द्वारा रचित कुछ प्राकृत ग्रंथों पर गोष्ठी का कार्यक्रम हुआ। विभिन्न स्थानों से विद्वत्गण पधारे। गोष्ठी के अंतिम दिवस शाम को विद्वानों के निवेदन पर शंका समाधान का कार्यक्रम रखा गया। सभी विषयों पर शंकाएँ की जा रही थीं चाहे वे संस्कृति, सभ्यता से जुड़ी हों, चाहे सिद्धांत व अध्यात्म से। डॉ. श्रेयांस कुमार जी 'बड़ौत' ने भी मोक्षमार्गी को लेकर अपनी शंका प्रस्तुत की। उन्होंने पूछा, 'आचार्य श्री! मोक्षमार्गी कौन सा गुणस्थानवर्ती कहलाता है? गुरुवर श्री ने बताया कि सप्तम गुणस्थानवर्ती व उससे आगे वाले निश्चय मोक्षमार्गी, षष्टम गुणस्थानवर्ती व्यवहार मोक्षमार्गी, पंचमगुणस्थानवर्ती एकदेश मोक्षमार्गी व चतुर्थ गुणस्थानवर्ती मार्गी नहीं, मार्गोन्मुख है। गुरुवर श्री के समाधान को पाकर वे अत्यंत प्रसन्न हुए और बोले 'महाराज श्री! ऐसा उत्तर तो मुझे कहीं नहीं मिला। आज सचमुच मेरी शंका का निराकरण हो गया।'

गुरुवर श्री के अगाध ज्ञान को देखकर प्राकृतभाषा विद् आशीष भैया बोले 'महाराज श्री! जो हमें यहाँ मिलता है, वह कहीं नहीं मिलता।' डॉ. जयकुमार उपाध्ये भी कहते हैं 'महाराज श्री! आपके ज्ञान को मैं नमन करता हूँ।

इतने ज्ञान पर भी गुरुवर श्री की विनम्रता मानो उनकी शोभा को और अधिक वृद्धिंगत कर देती है। स्वरचित प्राकृत

ग्रंथों को जन-जन तक पहुँचाने से पूर्व गुरु जी विद्वत् गोष्ठी वा वाचना रखते हैं

प्रत्येक गोष्ठी वाचना से पूर्व गुरुवर श्री कहते भी हैं कि ये वाचना इसीलिए नहीं रखते कि हमारे गुणों का बखान हो अपितु सभी विद्वानों का परामर्श-सुझाव ग्रंथ के संबंध में आमंत्रित है जिससे त्रुटियों को दूरकर ग्रंथों को निर्दोष बनाया जा सके।

जब गुरुवर श्री द्वारा रचित प्राकृत ग्रंथों पर प्रथम बार ग्रीन पार्क, दिल्ली में गोष्ठी रखी गई तब डॉ. शीतलचंद जी आदि विद्वानों ने कहा कि गोष्ठियाँ तो बहुत होती हैं किन्तु आचार्य श्री द्वारा प्रारंभ की गई स्वरचित ग्रंथों पर वाचना व गोष्ठी की यह नवीन परिपाटी श्लाघनीय व अनुकरणीय है।

बौलखेड़ा में वाचना के दौरान डॉ. शीतलचंद जी बोले 'महाराज श्री आपकी जैसी विनम्रवृत्ति अन्य कहीं दृष्टिगोचर नहीं होती, आपकी इतनी सरलता-सहजता कि अपने ग्रंथों पर वाचन कराते हुए कोई हठाग्रह आदि नहीं होता।'

महासागर में कितना जल है यह बताया तो नहीं जा सकता उसके स्वरूप से परिचित जन स्वयं उसका अनुमान लगा सकते हैं। इसी प्रकार गुरुवर श्री के अगाध ज्ञान को भी शब्दों में नहीं कहा जा सकता। जिस श्रद्धा वा आस्था ने आचार्य भगवन् वीरसेन स्वामी को 'कलिकाल सर्वज्ञ' कहा उसी अनुरूप ग्रंथों का लेखन व वाचन करते हुए गुरुवर श्री को मेरी श्रद्धा भी स्वीकार करती है व चरणों में शत-शत नमन करती है।

श्रेष्ठ गणितज्ञ

ज्योतिष का अपूर्व ज्ञान होते हुए भी गुरुदेव कुंडली आदि का अवलोकन कभी नहीं करते। दीक्षा तथा समाधि के समय ही वे कदाचित् इसका प्रयोग करते हैं। ग्रह कभी अच्छे या बुरे नहीं होते। जिस प्रकार विभिन्न रंगों के मकानों पर एक ही लाइट का प्रभाव भिन्न-भिन्न दिखता है उसी प्रकार कर्मानुसार प्रत्येक मानव पर एक ही ग्रह का शुभाशुभ प्रभाव दृष्टिगोचर होता है।

कई बार ज्योतिष का अध्ययन कराते हुए गुरु जी एक विशेष गणित उसमें लगाते हैं और जो पुस्तकों में नहीं होता ऐसी रहस्यपूर्ण बातें बताते हैं, कहते हैं मेरा मन कह रहा है ऐसा होना चाहिए किन्तु आश्चर्य तो तब होता है जब महीनों या वर्षों बाद वही चीज किसी पुस्तक आदि में भी देखने को मिलती है। ऐसा एक बार नहीं कई बार होता है।

गुरु जी गणित के तो विद्वान् हैं ही। 'बड़ी से बड़ी कैल्कुलेशन के लिए भी किसी यंत्रादि की आवश्यकता नहीं होती। और तो और मंदिर की दीवारों में कितनी ईंट लगेंगी ये भी तुरंत बता देते हैं। जितनी देर में व्यक्ति कॉपी पैन लेकर कैलकुलेट करेगा उतनी देर में तो वे स्वयं मौखिक ही बता देते हैं। गुरु जी कहते हैं ज्योतिष भी गणित ही है।

किस महीने में कब, कौन सी लग्न आदि चल रही थी या चल रही होगी तुरंत बता देते हैं। एक दिन मुनि श्री संयमानंद जी महाराज बोले 'गुरु जी! आपको तो किसी पंचांग की भी

जरूरत नहीं पड़ती।' शौरीपुर में जनवरी 2020 में गुरु जी ने अजमेर निवासी श्री वीरेंद्र कुमार जी की सुपुत्री शैली को दो प्रतिमा व्रत दिए और उस ही दिन श्वेत साटिका के साथ नाम दिया बा. ब्र. गुणज्ञा। जब प्रतिमादि व्रत प्रदान कर गुरु जी खड़े हुए तो गुरु जी बोले 'कुंभ लग्न में इनके प्रतिमा व्रत हो गए, चलो ठीक है स्थिर लग्न है।' इतने में पास में खड़ी बा.ब्र. प्रज्ञा दीदी से हमने कहा मोबाइल में तात्कालिक कुंडली निकालना। उन्होंने निकाली तो उसमें मीन लग्न निकली। हमने गुरु जी से कहा 'गुरु जी! प्रतिमा कुंभ नहीं, मीन लग्न में हुई हैं।

गुरु जी ने कहा 'नहीं बेटा इनकी प्रतिमा कुंभ लग्न में हुई हैं।' हमने कहा गुरु जी अभी तो आपने प्रतिमा दी और हमने अभी कुंडली निकलवा ली, यह तो मीन लग्न दिखा रहा है। गुरु जी ने कहा ठीक से डालो, हमने कहा ठीक है एक मिनट पहले की डाल लो, गुरु जी को प्रतिमा देने के बाद खड़ा होने में एक मिनट ही लगा था। जैसे ही एक मिनट पहले की कुंडली डाली तो मैं क्या सभी लोग आश्चर्य कर रहे थे कि वह कुंडली कुंभ लग्न की ही थी।

हमने कहा गुरु जी आपके समक्ष तो सारे सोफ्टवेयर फेल हैं। एक मिनट का यह सूक्ष्म अंतर इस प्रकार से देखने में प्रथम बार आया। वैदिक परंपरा में कहा जाता है कि युद्ध में द्रोणाचार्य के संकल्प को पूरा कराने के लिए सूर्य भी स्थिर हो जाता था, देर से अस्त होता था। किन्तु यहाँ ऐसा लगा कि गुरु की वाणी के मान हेतु ज्योतिष ग्रहों ने भी अपनी गति बदल दी।

ऐसे गुरुवर श्री के चरणों में मन, वचन, काय तीनों योगों से विनम्र, श्रद्धापूर्ण नमस्कार करती हूँ।

संवेदनशील

गुरुवर श्री की संवेदनशीलता से उनके सान्निध्य में आए लोग परिचित होंगे ही। संभवतः इसी कारण दूसरे की किंचित् भी पीड़ा उन्हें स्वयं की सी प्रतीत होती है। करुणा, दया, अहिंसा, वात्सल्य की ऊर्मियाँ अंतरंग में सदैव हिलोरे लेती हैं। संवेदनशीलता से ही दया, करुणा, अहिंसा का जन्म होता है। संवेदनशील व्यक्ति का हृदय शीघ्र भीग जाता है और भीगा हुआ मन अत्यंत पवित्र निर्मल व सरल माना जाता है।

गुरुवर श्री की गृहस्थावस्था की माँ वर्तमान में क्षु. भव्य नंदनी संघ में साधनारत हैं। उन्होंने बताया कि जब आचार्य श्री छोटे थे तब यदि उनके अन्य भाई-बहनों को मार पड़ती तो वे स्वयं रो पड़ते थे। किसी पशु-पक्षी को भी पीड़ा में नहीं देख पाते थे। उनके बचपन की एक घटना है लगभग 8-9 वर्ष की उम्र होगी। उनके भाई नरेश व बहन मनोरमा सरसों की कटाई के पश्चात् बचे तिनसौढों को उखाड़ने खेत में पहुँचे। वहाँ दोनों बहन-भाई में लड़ाई हो गई। भाई नरेश ने उसी ठूंठ से बहन को मार दिया। बहन रोते-रोते घर आई और सारी बात मम्मी को बताई बस उसका रोना देख दिनेश (गुरुवर श्री का गृहस्थावस्था का नाम) की आँखें भी भर आयीं। और जब-जब भी वह यह घटना सुनते तो उनकी आँखें नम हो जातीं।

जनवरी 2002 में गुरुवर श्री खेकड़ा में विराजमान थे। मुख्यता से वैय्यावृत्ति तो गुरुदेव नहीं कराते। किन्तु वैय्यावृत्ति के समय जब लोग पहुँचे तब अत्यधिक आग्रहवश गुरुवर श्री ने सभी को आने की स्वीकृति दी। तब वे लोग सती मनोवती की कहानी भजन रूप में सुनाने लगे। सुनते सुनते ही गुरुवर श्री की आँखें नम हो गयीं।

आज भी दृष्टांत, कथानक सुनाते-सुनाते उनका गला भर जाता है, पद्मपुराण आदि ग्रंथों के स्वाध्याय के समय भी आँखें नम हो जाती हैं। हम तो गुरुवर श्री के मन की यह संवेदना देख समझ पाते हैं कि आचार्य श्री अकलंक देव स्वामी ने राजवार्तिक में तीर्थंकर प्रकृति के बंध की कारणभूत जिस संक्लेशतम दया का कथन किया है वह ऐसे ही संवेदनशील चित्त में उत्पन्न हो सकती है।

विवाद नहीं संवाद

पृथ्वी को तो सीमाओं में बांटा जा सकता है किन्तु आकाश को बांटने में कोई समर्थ नहीं, वह अखंड है। धर्म भी आकाश के समान अखंड है। धर्म को विभिन्न पंथ, आम्नाओं में बांटना अल्पज्ञता का ही परिणाम है। गुरुवर श्री स्वयं सर्व पंथाम्नाओं से मुक्त निर्लेप हैं। वे हमसे भी कई बार कहते हैं कि पूजा, प्रक्षाल आदि ये सभी श्रावकों की क्रियाएँ हैं, इसमें साधु को नहीं पड़ना चाहिए। कोई जलाभिषेक करे या पंचामृत अभिषेक दोनों का ही शास्त्रों में वर्णन है। जब आगम में दोनों विधियों का कथन है फिर विवाद क्यों? जहाँ जैसी परंपरा चल रही हो, वहाँ वैसा ही ठीक है।

कई बार लोग इस विषय में गुरु जी से पूछते हैं तो गुरु जी यही उत्तर देते हैं कि जहाँ जैसी परिपाटी है, उसी अनुरूप कार्य करो। पूजादि क्रियाएँ विशुद्धि के लिए होती हैं विवाद के लिए नहीं। गुरुवर श्री के इस उत्तर से सब प्रसन्न व विस्मित होते हैं कि आचार्य श्री का किसी संबंध में कोई हठाग्रह नहीं है। शायद इसीलिए सभी पंथाम्नाओं के मानने वालों के हृदय में गुरुवर श्री का विशेष श्रद्धापूर्ण स्थान है।

एक बार 'सांध्य महालक्ष्मी' वाले गुरुवर श्री के पास आए और कहा आचार्य श्री हम लोग आपसे कुछ प्रश्न करना

चाहते हैं, यदि आपकी आज्ञा हो तो। गुरुवर श्री से संकेत पाकर उन्होंने पूछा आचार्य श्री तेरह पंथ व बीस पंथ की क्रियाओं के विषय में आपका क्या विचार है, क्या ठीक है, क्या करना चाहिए? गुरुवर श्री ने कहा 'दोनों का ही वर्णन ग्रंथों में मिलता है? जहाँ जैसी परिपाटी हो वहाँ वैसा करें अथवा जिसकी विशुद्धि जिस सम्यक् क्रिया से बढ़ती हो, वह करनी चाहिए। कहा भी है–

दृष्टिपूतं न्यसेत्पादं, वस्त्रपूतं जलं पिबेत्।
सत्यपूतं वदेद्वाचं, मनःपूतं समाचरेत्॥

भूमि पर दृष्टि से भली प्रकार देखकर पग रखना चाहिए, वस्त्र से छानकर जल पीना चाहिए, सत्यरूप वचन ही बोलने चाहिए एवं मन की पवित्रता वा विशुद्धिपूर्वक आचरण करना चाहिए।

धर्म विवाद नहीं संवाद सिखाता है। गुरुवर श्री के इस उत्तर को सुन सभी के चेहरे खिल गए। आचार्य श्री ने कहा 'दूसरा प्रश्न'? वे बोले आचार्य श्री आपने प्रथम उत्तर ही ऐसा दिया कि आगे के प्रश्नों का समाधान भी हमें मिल गया। आपने उत्तर ही ऐसा दिया कि अन्य प्रश्नों की अब आवश्यकता ही नहीं।

गुरुवर श्री के उत्तर ने सभी शंकाओं का निराकरण एक साथ कर दिया। आचार्य श्री जिनसेन स्वामी ने अपने गुरु आचार्य भगवन् श्री वीरसेन स्वामी को कपिला गाय की उपमा दी

जिसकी पूंछ बहुत लंबी होती है, भूमि का कदाचित् स्पर्श करती है। उन्होंने कहा जैसे कपिला गाय पूंछ उठाकर अपने शरीर पर बैठी सहस्रों मक्खियों को एक बार में ही उड़ा देती है वैसे ही आचार्य श्री की वाणी एक बार में अनेक समस्याओं का निरासन कर देती है।

ऐसा ही रूप हम देखते हैं गुरुवर श्री में जिनका एक समाधान रूपी बाण कई प्रश्न रूपी शत्रुओं को प्रतिहत कर देता है। प्रत्येक विषय में गुरुवर श्री का समीचीन उत्तर वा संदेश मोक्षमार्गियों को समीचीनता प्रदान करता है।

हम स्वयं को सौभाग्यशाली समझते हैं जो इस पंचमकाल में भी समीचीन ज्ञान, साधना, विचार व चर्या वाले गुरुवर श्री का सान्निध्य हमें प्राप्त हुआ।

दंड देने का अधिकारी कौन?

गुरुवर श्री की अनुपम सूझबूझ सभी को विस्मित कर देती है। परेशानियाँ कितनी भी बड़ी हों, कैसी भी हों किन्तु उनसे निकालना तो गुरुवर के लिए सहज साध्य है। तभी तो संस्थाएँ गुरुवर श्री से मार्गदर्शन प्राप्त कर अपना मार्ग प्रशस्त करती हैं। गुरुवर श्री हमेशा कहते हैं कि समीचीन उद्देश्य को लेकर समीचीन रूप से किए गए कार्य का फल भी समीचीन होता है। हर कार्य को करने का अपना एक ढंग होता है। उसी समीचीन ढंग से किए गए कार्य से, कार्य सिद्ध भी होता है और प्रशंसनीय भी। इसके विपरीत अनधिकृत चेष्टाएँ सभी के लिए कष्टकारी होती हैं और दूरदृष्टि से इसका परिणाम भी बहुजन अहितकारी होता है।

कालका जी, दिल्ली में सांध्य महालक्ष्मी की टीम गुरुवर श्री के दर्शनार्थ आयी। गुरुवर श्री ने उन्हें समझाया कि घर के मामले को घर में सुलझाना ही बुद्धिमानी है अन्यथा उस घर के लोग उपहास के पात्र बनते हैं। पूरे विश्व में मुट्ठीभर ही जैन हैं यदि जैन ही जिनधर्म की निंदा करेंगे तो वह किसके द्वारा प्रशंसनीय होगा। अन्य मान्यताओं के समक्ष वे अपना सम्मान नहीं रख पाऐंगे।

टीम के द्वारा कही गई कुछ जिज्ञासाओं का समयोचित तथ्यपूर्ण समाधान करते हुए गुरुवर श्री ने कहा कि कानून को अपने हाथ में लेना भी अपराध है। यदि सड़क पर कोई किसी का वध कर दे तो क्या दूसरा व्यक्ति अपराधी का वध कर उसे दंडित कर सकता है? नहीं, वह प्रशासन व शासन की नजरों में स्वयं अपराधी हो जाएगा। दंड देने का कार्य प्रशासन का है। हर कार्य को करने का सिस्टम होता है। अपराधी को दंड देने का कार्य प्रशासन का है।

आचार्य गुरुवर ने बताया 1984 में इंदिरा गांधी को जब गोली से मारा गया तब उस मारने वाले को राजीव गांधी ने दंड नहीं दिया और न ही उसके अहित की चेष्टा की। उन्होंने नयाचार का पालन किया। समयानुसार न्यायालय के द्वारा दिए गए दंड को स्वीकार किया गया।

वैसे ही मुनियों, त्यागी व्रतियों को प्रायश्चित देने या दंडित करने का अधिकार आचार्यों का है। श्रावकों को इस प्रकार से उत्तेजित हो तीव्र पाप का बंध नहीं करना चाहिए। वर्तमानकालीन बड़े-बड़े आचार्यों से निवेदन कर कोई मार्ग निकालना चाहिए जिससे जिनशासन को क्षति भी नहीं होगी और समीचीन रूप से कार्य भी सिद्ध होगा।

गुरुवर श्री की यह बात सुनकर लगा कि जिनधर्म की प्रभावना हेतु जिन गांभीर्य, दूरदृष्टि, धैर्य आदि गुणों की आवश्यकता होती है उन सभी गुणों से वे परिपूरित हैं और किसी भी स्थिति में नेतृत्व करने की उनकी क्षमता अद्भुत है।

विनम्रता

गुरुवर श्री सदैव कहते हैं कि विनय तीनों लोकों को आकर्षित करने वाली चुंबक है। जब जमीन पर गिरी तुच्छ वस्तु को भी उठाने के लिए झुकना आवश्यक है तब उत्कृष्ट गुणों की प्राप्ति बिना झुके संभव नहीं। जो जितना झुक सकता है वह उतना ही ऊपर उठ सकता है। जिनशासन पर गहन आस्था रखने वाले सम्मानीय महानुभाव श्रीमान् विनोबा भावे ने कहा भी है, 'नम्रता का अर्थ लचीलापन है जिसमें तनने की शक्ति, जीतने की कला और शौर्य की पराकाष्ठा है।' घास के समान झुकने की कला जानने वाला कभी टूटता नहीं, झुककर ही प्रतिकूलताओं पर विजय प्राप्त कर लेता है। 'ऊँचा उठने के लिए पंखों की जरूरत केवल पक्षियों को ही पड़ती है। मनुष्य तो जितना विनम्र होता है उतना ही ऊपर उठ जाता है।

यह बातें मात्र गुरुवर श्री शब्दों से ही नहीं कहते अपितु उनकी चर्या में भी स्पष्टतया परिलक्षित होती हैं। कितने ही साधुओं के माध्यम से भी परोक्ष या प्रत्यक्ष रूप में सुनने में आता है कि जैसी विनम्रता आ. श्री वसुनंदी जी महाराज जी में है वह अन्यतर दृष्टिगोचर नहीं होती। निश्चित ही वह अनुकरणीय है।

संघ में भी वे कई बार पढ़ाते हुए कह देते हैं 'कोई त्रुटि हो गई हो तो क्षमा कर देना।' इसे सुनकर 'शिष्यवर्ग' ने कहा कि गुरु जी आप ऐसे क्यों कहते हैं, हमें तो बिल्कुल अच्छा नहीं लगता, हम तो बहुत छोटे हैं।' तब गुरु जी कुछ गंभीर मुद्रा को लिए बोले कि क्षमा माँगने से कोई छोटा नहीं हो जाता। यदि हम अपनों से छोटों से क्षमा माँगना सीख गए तो दुनिया के किसी भी व्यक्ति से क्षमा माँगने में हमें कोई संकोच न होगा, अपितु आनंद का ही अनुभव होगा।'

बात तो सामान्य सी थी किन्तु गुरुवर श्री के इस रूप ने जो शिक्षा दी वह बहुत वृहद् थी। यदि संसार में व्यक्ति झुकना सीख जाएँ तो बहुत से संबंधों में मधुरता आ जाए।

जैसे आदर्श माता-पिता बच्चों को कहकर कम व आचरण से ज्यादा सिखाते हैं अथवा सिखाने से पूर्व स्वयं उसका आचरण करते हैं उसी प्रकार गुरुवर श्री की विनम्रता, उनके शिष्यों को लघुता सिखाती है और वह विनम्रता, लघुता, विनय ही तो मोक्ष का द्वार है। मैं नमन करती हूँ ऐसे गुरु चरणों में जिनका आचरण आगम का दर्पण ही है।

गमले के पौधे नहीं, जंगल के वृक्ष

वे पौधे अक्सर मुरझा जाते हैं जिनकी परवरिश छाया में होती है, इसीलिए जीवन में तपिश सहन करना भी जरूरी है। अभावों और प्रतिकूलताओं को सहन करने वाला व्यक्ति अपने जीवन से शीघ्र निराश नहीं होता। संघर्षों की अग्नि में तपकर ही व्यक्ति का जीवन निखरता है। एक बार किसी प्रसंग पर गुरुजी से हमने सुना कि मैं अपने शिष्यों को गमले का पौधा नहीं, जंगल का वृक्ष बनाना चाहता हूँ।' हमने गुरु जी से पूछा 'गुरु जी! इसका क्या मतलब है?' उन्होंने बताया 'बेटा! गमले के पौधे को एक दिन पानी न मिले, अन्य अनुकूलता न मिले तो मुरझा जाता है जबकि जंगल के वृक्ष को माहभर भी पानी न मिले तब भी वैसे ही स्थिर रहता है।'

इन शब्दों के कहने के पश्चात् गुरुवर श्री अपनी चर्या में संलग्न हो गए और हम सब अपने स्थान पर आ गए। किन्तु इन शब्दों ने गुरुवर श्री की एक अप्रतिम छवि हमारे समक्ष प्रस्तुत की 'एक ऐसे गुरु जो अपने शिष्यों को पंगु नहीं आत्मनिर्भर व स्वाभिमानी बनाना चाहते हैं।' आश्चर्य होता है हमें गुरुवर श्री के हर चिंतन, हर चर्या व हर शब्दों पर।

गुरुवर श्री ने अप्रैल, 2015 में हमें दीक्षा देकर संयम मार्ग पर अग्रसर किया। 19 अप्रैल को दीक्षा हुई और 21 अप्रैल को

ही गुरुवर श्री ने नवीन संघ बना शकरपुर की ओर हमारा विहार करा दिया। तब एक व्यक्ति ने मन में कुछ प्रश्न लिये उनसे कहा 'आचार्य श्री आपने इतनी शीघ्र ही संघ बना दिया।' उन्होंने कहा–

आचार्यः पादमाचष्टे, पादः शिष्यः स्वमेधया।
तदविज्ञसेवया पादः, पादः कालेन पच्यते॥

शिष्य पहला पाद आचार्य से प्राप्त करते हैं, दूसरा अपनी बुद्धि से प्राप्त करते हैं, तीसरा पाद विज्ञ पुरुषों की सेवा से प्राप्त करते हैं तथा चौथा पाद काल से परिपाक होकर स्वयं प्राप्त होता है अर्थात् अनुभव से प्राप्त होता है।

उन्हीं दिनों विहार के समय हमें आर्यिका संघ के दर्शन हुए। कुछ घंटे उनके साथ व्यतीत किए तब वे बोलीं 'आपके गुरु ने तो आपको बहुत अच्छी तरह से तैयार किया है तभी तो दीक्षा के बाद आपको विहार कराया। मैं प्रणाम करती हूँ उन गुरुवर के आत्मविश्वास को और प्रणाम करती हूँ चेतन कृतियों को तराशने की उनकी कला को। जिन्होंने कुंभकार के समान सहस्रों व्यक्तियों के जीवन को संयम रूप गढ़ दिया।

गुरुवर श्री ने सन् 2011 के चातुर्मास में हस्तिनापुर में 32 श्रावकों को एक साथ प्रतिमाव्रत देकर उनका मोक्षमार्ग प्रशस्त किया।

धन्य हैं गुरुवर! जो मात्र व्रत ही नहीं देते अपितु शिष्यों को आचरण, ज्ञान आदि के माध्यम से आत्मनिर्भर भी बनाते हैं और आत्मविश्वासी भी।

असंभव भी संभव

गुरुवर श्री के मुख से निकले वचन मानों पत्थर की लकीर ही हों। वे सहजता में भी जैसा कह दें, वैसा ही हो जाता है। यह बात मात्र हम नहीं बल्कि जितने भी लोगों को गुरु सान्निध्य प्राप्त हुआ वे सभी कहते हैं। हम तो कई बार कहते भी हैं कि गुरुवर श्री को तो कुंडली आदि की भी आवश्यकता नहीं जैसा कह दें, वैसा ही होगा। यह बात तो कई लोगों ने अनुभव भी की होगी।

श्रीमती अदिति जैन, मेरठ ने बताया कि 2006 में गुरु जी की प्रेरणा से उन्होंने NET की परीक्षा दी। परीक्षा देकर आयीं तो उन्होंने गुरु जी से पूछा 'गुरु जी! Exam तो दे दिया, Clear हो जाएगा या नहीं' तब गुरु जी ने सहजता से कह दिया 'हाँ, हो जाएगा।' वे बोलीं 'मेरे आश्चर्य का तो ठिकाना नहीं रहा जब सचमुच Exam clear हो गया।'

उन्होंने बताया उनका एक मित्र शीतला प्रसाद आनन जो दो-तीन बार नेट का Exam दे चुका था उसने पूछा 'तुम्हारा एक बार में कैसे Clear हो गया?' उन्होंने कहा 'मेरे गुरु जी ने कह दिया था।' आनन ने पूछा कि तुम्हारे गुरु जी जो कह दें वो हो जाता है? बोली 'हाँ, ऐसा ही है।' तब वह भी गुरु जी के दर्शन के लिए उनके साथ हस्तिनापुर गया। नेट के विषय में

पूछने पर गुरु जी ने कहा 'थोड़ी सी मेहनत और कर लो तो हो जाएगा।' उसी वर्ष उसका वह Exam clear हो गया। उसके पश्चात् वह गुरु जी के दर्शन हेतु दिल्ली भी पहुँचा। आज वह हैदराबाद यूनिवर्सिटी में एसोसिएट प्रोफेसर है।

पुनः उन्होंने बताया कि उनके जीवन में सबसे बड़ा चमत्कार घटित हुआ उनकी जॉब का। सन् 2015 में UPHESC का Exam दिया। जिसमें उनकी 12th Waiting आयी। वे दुःखी मन से अश्रुपूरित नयनों से गुरु चरणों में पहुँचीं। गुरु जी से सारी बात बतायी। गुरु जी ने कहा 'बेटा! तुम चिंता मत करो, इसी Exam के through तुम्हारी जॉब लग जाएगी।' वे लौटकर घर आ गयीं। सभी लोग कह रहे थे कि 12th Waiting है कुछ नहीं होगा, भूल जाओ जॉब को। किन्तु वे तो गुरु वचनों पर विश्वास करे बैठीं थीं। गुरु जी के वचन कभी अन्यथा होते ही नहीं।

इसमें 48 लोगों का सेलेक्शन हुआ था, उन सबकी कांउसलिंग भी हो गई। टीचर्स, परिवारी जन, मित्र आदि सभी कह रहे थे तुम दूसरे Exam की तैयारी करो, इससे कुछ नहीं होगा। उनके पति ने कुछ ज्योतिषियों को उनकी कुंडली भी दिखवायी। सबका एक ही कहना था इन पर शनि का प्रभाव है। 2023 से पहले तो Chance ही नहीं है।

उन्होंने गुरु जी से ये सब कहा। गुरु जी ने कहा 'मुझे नहीं पता कैसे होगा लेकिन इसी से तुम्हारी जॉब लगेगी।' वे लौटकर घर आ गयीं। एक सप्ताह बाद उनकी 12th वेटिंग 2nd

पर आ गई। किसी विद्यार्थी ने फाइनल रिजल्ट के बाद रिट डाली जिससे उनकी कॉपी का एक उत्तर सही हो गया और वे 2nd पर आ गयीं। तब वे खुश हुईं और गुरु जी की बात उनके कानों में गूंजने लगी। उसके बाद भी अन्य शिक्षक आदि कहने लगे 10-12 साल से तो हम देख रहे हैं UPHESC की तो एक भी Waiting clear नहीं होती और अभी तो 48 लोगों की कांउसलिंग भी हो चुकी है। कुछ ही दिन बाद उनके पास सूचना आई की 48 में से 2 लोगों ने जॉब छोड़ दी और तुरंत उनका सेलेक्शन हो गया।

सभी शिक्षक, परिवारीजन आदि बहुत आश्चर्यचकित हुए और बोले 'भाई! गुरु जिनके साथ हों, दुनिया की कोई शक्ति उन्हें पराजित नहीं कर सकती।'

गुरु के वचनों में असंभव को संभव बनाने का सामर्थ्य है। हमारे स्वयं के जीवन में भी कई बार ऐसा हुआ है जिसकी आशा भी नहीं थी, गुरु के वचनों से वैसा हो गया। सत्य है गुरु के वचन अन्यथा नहीं होते। अद्भुत वचन सामर्थ्य से युक्त गुरुवर के चरणों में बारम्बार नमस्कार करती हूँ।

हार में जीत

गुरुवर श्री विभिन्न प्रकार से अपने शिष्यों को अध्ययन कराते हैं। कभी Oral Exam लेते हैं तो कभी Written, कभी अंताक्षरी कराते हैं। अंताक्षरी में मात्र प्राकृत, संस्कृत के श्लोक व गाथाएँ ही बोल सकते हैं। ऐसा करने से बहुत से ग्रंथों की कारिकाएँ भी स्मृति में आ जाती हैं। विशेष तो यह है कि हर ग्रंथ पढ़ाने के पश्चात् गुरु जी मुख्यता से परीक्षा लेते हैं। शौरीपुर में 2020 में धवला जी पु. 2 की वाचना हुई। पु. 1 की वाचना 2019 नोएडा में हुई थी। आश्चर्य तो तब हुआ जब दूसरी पुस्तक पूर्ण होते ही गुरु जी ने धवला जी की परीक्षा की घोषणा कर दी। पूरे संघ में हलचल मच गयी जब गुरु जी ने छोटे से लेकर बड़े तक सभी के लिए यह परीक्षा अनिवार्य कर दी। शौरीपुर में ही गुरु जी ने धवला जी की परीक्षा ली और सबको marks भी दिए और remark भी।

एक बार गुरु जी ने संघ में प्राकृत गाथाओं की अंताक्षरी करायी। सभी कह रहे थे कि गुरु जी हमारी side हैं। गुरु जी ने कहा ठीक है, तुम सब एक साथ हो जाओ और दूसरी ओर मैं। यूँ तो अंताक्षरी से पहले ही परिणाम सभी को विदित था। 40-50 ग्रंथ जिन्हें कंठस्थ हैं, सहस्रों श्लोक जिनके अधिकृत हैं, आखिर उन्हें पराजित ही कौन कर सकता था। गुरुवर श्री के

समक्ष कोई नहीं टिक सका। तब गुरु जी ने कहा 'गुरु की वास्तविक जीत शिष्य से हारने में है। जिस दिन आप हमें हरा दोंगे उस दिन हम समझेंगे, कि हमारा आपको अध्ययन कराना सार्थक हुआ।'

गुरुवर श्री की यह उदारता पूज्यनीय है। मुनि श्री प्रज्ञानंद जी महाराज ने बताया कि एक बार 2007, मथुरा में गुरु जी ने उनसे पूछा 'बताओ बेटा! गुरु को सबसे ज्यादा खुशी कब होती है?' उन्होंने अपनी बुद्धि से कई उत्तर दिए किन्तु उनका बताया कोई भी उत्तर संभवत: संतोषजनक नहीं था। तब गुरु जी ने कहा 'जब वे शिष्य को अपने से आगे देखते हैं तब सबसे ज्यादा प्रसन्न होते हैं।'

जब हमने ये सुना तो लगा कि गुरु की जिस महानता के विषय में सुना करते थे आज उसका साक्षात् दिग्दर्शन हुआ। यथार्थ में समीचीन गुरु ही अपने शिष्य को योग्यताओं से परिपूरित कर उसकी उन्नति के अभिलाषी होते हैं, समीचीन मार्ग पर अव्याबाध गति से अग्रसर होते हुए देखकर संतुष्ट होते हैं।

आचार्य गुरुवर शिक्षा-दीक्षा देने तथा शिष्यों के अनुग्रह में पूर्णतया कुशल हैं। तभी तो जब अन्य आचार्य के समक्ष किसी शिष्य का परिचय देते हुए कहा गया कि ये आचार्य श्री वसुनंदी जी महाराज के शिष्य हैं तब उन्होंने कहा यदि उनके शिष्य हैं तो अनुशासित व अच्छे ही होंगे।

ऐसे सूर्य रूपी गुरु को नमन करती हूँ जिनकी चमक से काँच रूपी शिष्य भी चमक उठते हैं।

दुर्लभ क्षण

वह दृश्य बहुत मार्मिक व अनुपम था जब आचार्य गुरुवर ने अपने गुरुवर राष्ट्र संत, सिद्धांत चक्रवर्ती, श्वेतपिच्छाचार्य श्री विद्यानंद जी मुनिराज की समाधि करायी। यदि उन चंद दिनों को लिपिबद्ध किया जाए तो संभवत: एक नवीन पुस्तिका ही सामने आ जाए।'

गुरुभक्ति, कर्त्तव्यनिष्ठता व अनुशासन गुरुवर श्री के जीवन में स्वयं चरितार्थ होते हैं। सन् 2019 हमारा चातुर्मास कालका जी दिल्ली में चल रहा था। गुरुवर श्री के सान्निध्य से नोएडावासी स्वयं को सौभाग्यशाली अनुभव कर रहे थे। 14 सितंबर से पूर्व भी गुरुवर श्री 2-4 बार अपने गुरुवर के दर्शनार्थ पहुँचे। किन्तु हमें याद है वह 14 सितंबर का दिन, कुंदकुंद भारती के ट्रस्टी व आचार्य श्री की सेवा में रत राजू भैया के माध्यम से आचार्य श्री का यह संकेत 'तुम जल्दी आ जाओ' पाते ही पारणा कर गुरुदेव व साथ में मुनि ज्ञानानंद जी कुंदकुंद भारती के लिए निकल गए। जो नोएडा से लभगग 25 कि.मी. की दूरी पर था। श्री योगेश जी, दीपक जी, सचिन, आशी भैया हिमांशु फरीदाबाद, कुंदकुंद भारती के मंत्री श्री अनिल जी, श्री निकुंज जी 'जी.के' आदि लोग साथ में थे। नोएडा से दोपहर

में लगभग 12:30 बजे विहार कर 4:00 बजे तक कालका जी आए।

लोगों ने बहुत निवेदन किया कि आचार्य श्री आप आज रात्रि यहाँ ठहर जाइये। इतनी गर्मी में चल कर आ रहे हैं सड़क ऐसे जल रही थी कि पैर रखने के लिए भी सोचना पड़ रहा था। किन्तु स्वयं गुरु के आमंत्रण पर ऐसा कौन गुरुभक्त शिष्य होगा जिसके कदम कोई भी बाधा रोक सके। लगभग 5-7 मिनट कालका जी ठहरकर गुरुवर श्री तुंरत ही कुंदकुंद भारती के लिए निकल गए। सूर्य की तीव्र तपन से अधिक मन की तपन थी जिसे गुरु दर्शन से ही शीतलता प्राप्त हुई।

सब ओर से मात्र एक ही गूंज व पुकार थी कि आचार्य श्री वसुनंदी जी मुनिराज ही आचार्य श्री की श्रेष्ठ समाधि करा सकते हैं। इसके लिए कुंदकुंद भारती के ट्रस्टी पं. जयकुमार उपाध्ये आदि विद्वान और दादा गुरु के भक्तों ने भी गुरुवर श्री से निवेदन किया। गुरु जी ने कहा 'ये तो मेरे भगवान् हैं, मुझे उनके लिए बहुत कुछ करना चाहिए किन्तु मेरी सामर्थ्य कहाँ? गुरु आशीष से गुरु के लिए किंचित् भी कर पाऊँ, यह मेरा सौभाग्य है।'

वे सहस्रों नेत्र साक्षी हैं जिन्होंने प्रत्यक्ष रूप से गुरुवर श्री को आचार्य श्री के समीप समाधि कराते हुए देखा है सभी गुरुभक्तों व शिष्यों का एक ही कहना था कि हमने गुरुवर श्री का यह रूप कभी नहीं देखा। जिस अनुशासन, गांभीर्य, धैर्य,

आध्यात्मिक बोध के साथ गुरुवर श्री वहाँ उपस्थित थे वह अकथनीय है। एक पल के लिए भी आचार्य श्री गुरु जी को अलग नहीं होने देते, उनका हाथ पकड़ लेते। हमने स्वयं ये दृश्य देखा। हमें सौभाग्य प्राप्त हुआ ज्येष्ठ व श्रेष्ठ आचार्य श्री की समाधि को निकटतम से देखने का।

हम देख रहे थे कि आज एक शिष्य माँ बन शिशु के समान अपने ही गुरु की सेवा में रत है। उस मनमोहक दृश्य का अनुभव नहीं करा सकती जब आचार्य श्री निर्निमेष दृष्टि से लगातार गुरुवर श्री को निहारते और गुरुवर श्री की वात्सल्यमयी दृष्टि भी वहीं टिक जाती।

उस समय सांध्यमहालक्ष्मी के महानुभावों ने पूछा 'आचार्य श्री! अपने गुरु की समाधि कराते हुए आपको कैसा अनुभव हो रहा है?' तब गुरु जी ने बहुत सीमित शब्दों में जो उत्तर दिया वह बहुत गहन था उन्होंने कहा 'यह एक शिष्य के धैर्य की परीक्षा है।' इस उत्तर को सुनकर ऐसा अनुभव हुआ कि एक शिष्य के लिए इससे कठिन व गौरवपूर्ण कार्य कोई नहीं और इससे बड़ी परीक्षा भी कोई नहीं।

आचार्य श्री की समाधि देखकर सहस्रों लोगों के तो समाधि संबंधी शुभ परिणाम हुए ही किन्तु मैं भी भावना भाती हूँ कि मेरे जीवन का अंतिम क्षण गुरु चरणों में पूर्ण हो जो यथार्थ में एक श्रेष्ठ निर्यापकाचार्य हैं।

विशुद्ध परिणामी

ध्यान व अध्ययन मुनियों के ये दो आवश्यक कर्त्तव्य आचार्य भगवन् श्री कुंदकुंद स्वामी ने रयणसार में निरूपित किए। गुरुवर श्री मुख्यता से जाप, ध्यान, अध्ययन, अध्यापन में निमग्न रहते हैं। णमोकार मंत्र की 8 करोड़ 8 लाख 8 हजार 808 जाप का संकल्प तो उनका है ही साथ ही अन्य मंत्रों की करोड़ों जाप का भी संकल्प है। मुनि श्री प्रज्ञानंद जी महाराज और बा. ब्र. प्रभाशीष भैया जी बताते हैं कि रात्रि में गुरुवर की नींद तो बस नाम की है अन्यथा रात्रिभर जाप लगाते हैं।

जाप व ध्यान के समय तो गुरुवर श्री की मुद्रा अद्भुत ही होती है। यूँ तो विशुद्ध परिणामों को मापने का कोई यंत्र नहीं किन्तु जब कभी गुरु जी कहते हैं कि 'मोक्ष दूर कहाँ है, हमें तो अभी भी कभी-कभी ऐसा लगता है जैसे संपूर्ण लोकालोक मेरी आत्मा में झलक रहा हो।' तब लगता है कितने उत्कृष्ट विशुद्ध परिणामों से युक्त गुरुदेव हैं।

एक बार हमने गुरु जी से पूछा 'गुरु जी! आप तो सप्तम गुणस्थान में पहुँचते होंगे, आत्मा का अनुभव करते होंगे, हमें भी जानना है कि वहाँ कैसी विशुद्धि होती है।' यह सुन गुरुवर श्री कुछ क्षण के लिए मौन हो गए, आँखें बंद कर लीं पुनः कुछ

क्षण पश्चात् बोले 'अनुभूति को शब्दों में कहना संभव नहीं और आत्मा एक अनुभूति है।'

ध्यानादि में रत गुरुवर श्री के जब हम दर्शन करते हैं तब प्रतीत होता है श्रेणी पर आरूढ़ प्रत्यक्षज्ञानी के ही दर्शन कर रहे हों। परिणामों की निर्मलता, उत्कृष्टता व विशुद्धि देख मन श्रद्धा से नम जाता है। लगता है ऐसे ही साधकों को आ. श्री कुंदकुंद स्वामी, आ. श्री पद्मनंदी स्वामी आदि ने पंचमकाल में जिनेन्द्र कहा। मेरी श्रद्धा के जिनेन्द्र प्रभु स्वरूप गुरुवर को तीनों योगों से परिणामों की विशुद्धि पूर्वक नमस्कार करती हूँ।

लोकातिशायी

गुरुवर श्री की क्रिया चर्या आदि को देखकर लगता है कि वे लोकातिशायी महापुरुष हैं। जितना सोचते हैं उससे कई आगे उन्हें पाते हैं। जितना जितना गुरुवर श्री के विषय में जानते जाते हैं उतनी-उतनी श्रद्धा वृद्धिंगत होती जाती है। संघस्थ मुनि श्री आत्मानंद जी महाराज ने बताया कि गुरुवर श्री के संबंध में एक बात आज भी उन्हें विस्मित करती है। उन्होंने बताया कि गुरुवर श्री का सन् 2000 का चातुर्मास टूण्डला हुआ था उसी समय से उन्हें गुरु चरणों की भक्ति, सेवा का अवसर प्राप्त हुआ।

प्रात:काल शुद्धि हेतु गुरुदेव जंगल की ओर जाते थे। कुछ युवक भी प्रतिदिन उनके साथ जाते थे जिनमें वे स्वयं भी थे।

जब भी जाते उन्हें एक सुगंध का आभास होता। गुरुवर श्री की देह से उत्पन्न नैसर्गिक सुगंध लोगों में चर्चा का विषय बन गई। प्रारंभ से सुगंधित तेल आदि के त्यागी मुनिवर के शरीर में वह सुगंध उनके संयम, तप का ही प्रभाव था। सत्य ही तो है स्वभाव से अपवित्र यह देह भी रत्नत्रय से ही पवित्र होती है। **'स्वभावतो शुचौ काये, रत्नत्रयपवित्रते'**। तो मात्र गुरुवर की देह ही नहीं अपितु उनकी जापमाला भी सुगंधित प्रतीत होती थी। इतना ही नहीं गुरुवर श्री के कक्ष में भी ऐसा लगता जैसे

सुगंध ने अपना स्थान बना लिया हो। सच कहें तो ऐसी सुगंध का अनुभव हमने व अन्य कई लोगों ने भी किया है।

उन्होंने बताया कि यदि आचार्य श्री कक्ष में नहीं भी होते थे तो भी वहाँ बैठकर शांति का अनुभव होता था। आचार्य श्री द्वारा टूण्डला में हुई ऐतिहासिक प्रभावना की गूंज आज भी वहाँ के कण-कण में है। ध्यान शिविर पर्यूषण में आयोजित श्रावक शिविर जहाँ लोगों की भीड़ ऐसी उमड़ी कि संभवत: टूण्डला वासियों को भी सर्वप्रथम जैनधर्मानुयायियों की संख्या व उनकी शक्ति का अहसास हुआ। गुरुवर के चातुर्मास के समय टूण्डला नगरी देवनगरी प्रतिभासित होती थी। और तभी से टूण्डला व्रतियों की नगरी जैसी हो गई व उनकी (वर्तमान में आत्मानंद जी) भी भावना मुनि पद प्राप्त करने की हुई। उनके चित्त में आचार्य श्री द्वारा वपित किया गया वह धर्म का बीज पुष्पित, फलित व पल्लवित हुआ। आज श्री उत्तमचंद शिरोमणि मुनि श्री आत्मानंद जी बन संघ में त्याग-तपस्या में रत हैं।

धन्य हैं आचार्य गुरुदेव जो लोगों के चित्त में धर्म बीज का वपनकर संसार के दु:खों का अंत करने वाले मार्ग पर अग्रसर कर उन पर असीम उपकार करते हैं। संभवत: इसलिए आचार्य श्री पद्मनंदी स्वामी ने आचार्यों को पंचमकाल के केवली या तीर्थंकर कहा जो आज धर्म तीर्थ का प्रवर्तन कर रहे हैं, प्राणियों को मोक्षमार्ग प्रदर्शित कर रहे हैं। अनेक भव्य जीव जिनका आश्रय लेकर संसार से तरने का पुरुषार्थ कर रहे हैं तीर्थंकर सम गुरुदेव के चरणों में कोटि कोटि नमन..... !

संस्कारदायक

नयों की दृष्टि से देखें तो मोक्षमार्ग दो प्रकार का है—व्यवहार मोक्षमार्ग व निश्चय मोक्षमार्ग। गुरुवर श्री बताते हैं कि जिस प्रकार हवाई विमान, हवाई पट्टी पर दौड़े बिना उड़ान नहीं भर सकता उसी प्रकार व्यवहार मार्ग पर चले बिना निश्चय को प्राप्त नहीं किया जा सकता। निश्चय में पहुँचने से पूर्व व्यवहार में चलना अत्यावश्यक है। कहा भी जा सकता है कि जो व्यवहार में जितना कुशल होगा, निश्चय में भी वह उतना ही कुशल होगा। एक ओर तो हम गुरुवर श्री का वह रूप देखते हैं जहाँ वे साधु संघ को उपदेश देते हुए कई बार कहते हैं 'महाराज! खेत कब तक जोतते रहोगे, अब तो बीज डालने का समय है।' अर्थात् कब तक व्यवहार में उलझे रहोगे, कुछ निश्चय की ओर अग्रसर होओ। तो वहीं व्यवहार, लोकाचार व मर्यादा का पालन सभी शिष्यों को सिखाते हैं। शिष्टता व समिति सहित जीने की कला जिस प्रकार गुरुवर श्री सिखाते हैं वह सदैव अनुकरणीय है।

जब जीवन जीने के कुछ सूत्र गुरुवर श्री सिखाते हैं तब ऐसा लगता है जैसे माँ अपने शिशु को उसके समुन्नत जीवन के लिए संस्कार दे रही हो। यूँ तो अनेक बातें गुरुवर श्री बताते हैं किन्तु अभी कुछ ही दिनों पूर्व भक्ति के पश्चात् गुरु जी ने कुछ बातें कहीं, सुनकर ऐसा लग रहा था मानो हमारे सामने गुरु के

साथ माता-पिता ही स्थित हों। उन्होंने 4 बातें कहीं। (अ) वार्तालाप के समय तू या तुम का नहीं, आप शब्द का प्रयोग करें। (ब) मैं- मेरा नहीं, हम-हमारे शब्दों का ही प्रयोग करें। (स) वात्सल्य का झरना अंतरंग में निःसृत हो। पहले तपस्वी मुनिराज जब जंगल में बैठते थे तो सूखे वृक्ष भी हरे-भरे हो जाते थे, सूखे कुँओं में भी पानी भर आता था। गुरुवर श्री कहते हैं आज इतना नहीं कर सकते तो कम से कम इतना तो हो कि समाज में लोग वात्सल्यपूर्वक रहने लगें। जब एकेन्द्रिय जीव (बारिश, वृक्षादि) व्यक्ति को प्रसन्नचित्त कर सकते हैं तब पंचेन्द्रिय जीव की सामर्थ्य तो अकथनीय है। पुनः (द) क्षमाशील बनें। क्षमाशील व्यक्ति के हृदय में बैर, शत्रुता आदि की गाँठ नहीं रहती। गाँठ चाहे शरीर की हो या चित्त में विषय-कषायों की, मानव के लिए सदैव कष्टदायक ही होती है।

इस प्रकार समय-समय पर शिष्यों के जीवन को सुव्यवस्थित व योग्य बनाने हेतु अनेक सूत्र गुरुवर श्री प्रदान करते हैं और अपने शिष्यों की सुरक्षा वैसे ही करते हैं जैसे एक माली समय-समय पर खाद-पानी आदि देकर अपने पौधों की सुरक्षा करता है।

हम गुरुवर श्री में एक नहीं, अनेक रूप देखते हैं और वे सदा सभी को विस्मित करने वाले होते हैं। हर रूप हमारी श्रद्धा, आस्था, विश्वास को और दृढ़ करता है। गुरुवर श्री का नाम या स्मरण मात्र आने से ही सिर श्रद्धा से झुक जाता है और सहसा शब्द उच्चरित होते हैं नमोस्तु भगवन्! नमोस्तु भगवन्! नमोस्तु भगवन्!

राम सी सरलता

गुरुवर श्री कई बार कहते हैं 'मोक्षमार्ग कहने का नहीं, सहने का मार्ग है।' सहन करने से व्यक्ति की सामर्थ्य वृद्धिंगत होती है।' यह मात्र गुरुवर श्री कहते नहीं अपितु चरितार्थ भी करते हैं। एक बार लाले चाचा (फिरोजाबाद) हमसे बोले 'माता जी! गुरु जी के विषय में जितना भी कहूँ, उतना कम है। उन जैसे सीधे-साधे, भोले-भाले कोई दूसरे साधु ना मिलेंगे।'

उन्होंने बताया आगरा से विहार कर गुरुवर श्री 16 मार्च 2020 को शमशाबाद पहुँचे। वहाँ अति प्रभावनापूर्ण कार्यक्रम संपन्न कराकर, आगामी कार्यक्रम जिनबिंब विराजमान व शिखर शिलान्यास हेतु जलालपुर के लिए, दोपहर 19 मार्च को विहार किया। 16 कि.मी. विहार कर आचार्य श्री ससंघ बोधलागड़ी पहुँचे एवं वहाँ वर्धमान स्कूल में रात्रि विश्राम किया। 21 मार्च का कार्यक्रम होना था। 20 मार्च को प्रात:काल लगभग 15 कि. मी. विहार कर खड़गपुर पहुँचे। उस दिन गर्मी के ताप ने सभी को त्रसित कर दिया था। लगभग 10:00बजे तक साधु संघ स्कूल में पहुँचा था। बहुत तेज गर्मी थी, 2:00 बजे तक आहार चर्या संपन्न हुई गर्मी व समयाधिकता के कारण मात्र जलादि पेय ही अधिक लिया। 1:00-2:00 बजे के आसपास फिरोजाबाद से

श्रावकगण गुरुचरणों में पहुँचे एवं जलालपुर में नहीं होने वाले कार्यक्रम की सूचना देते हुए फिरोजाबाद पधारने का आग्रह किया। यहाँ से जलालपुर मात्र 8-9 कि.मी. ही रह गया था।

लाले चाचा ने बताया कि जलालपुर वालों का कार्यक्रम पूर्व दिवस ही स्थगित हो चुका था। अन्य साधुओं ने भी जब यह समाचार सुना तो अचंभित रह गए कि कार्यक्रम कल स्थगित हो चुका था किन्तु सूचना आज अब मिल रही है। सभी श्रावक व साधु गुरुवर श्री के मुख को निहारने लगे। गुरुवर श्री की शांत मुख मुद्रा ने सभी को ऐसे शांति प्रदान की जैसे चंद्रमा स्वयं भी शीतल होता है और अपनी बरसती चांदनी से सभी को शीतलता प्रदान करता है। मुख से बिना कुछ कहे गुरुवर श्री पुनः 15 कि.मी. लौटकर वर्धमान स्कूल पहुँचे। वहाँ रात्रि विश्राम कर 21 मार्च का आहार धिमश्री में हुआ व शाम को शमशाबाद प्रवेश हुआ। लाले चाचा ने कहा यदि वे पहले बता देते तो कम से कम साधुओं को गर्मी में विहारादि के कारण जो कष्ट हुआ वो तो नहीं होता। ये तो उनका कर्त्तव्य ही था। वे बोले आश्चर्य तो यह है कि गुरुदेव के चेहरे पर एक शिकन तक नहीं आयी। इतना परेशान होने के बाद किसी को भी क्रोध आना स्वाभाविक था किन्तु गुरुदेव की समता अभिवन्दनीय है।

धन्य हैं गुरुदेव! पूर्ण सामर्थ्यवान् होते हुए भी शांति व समता से स्वपथ परिवर्तित कर दिया। प्रतिकूलता सहन करने के पश्चात् भी मुस्कुराते हुए जब अपने मार्ग पर अग्रसर हुए तब

ऐसा प्रतीत हुआ मानो वनवास के समय अयोध्यापति श्री राम को नहीं पहचानने के कारण किसी व्यक्ति के द्वारा कहे गए अपशब्दों को सुन बिना मुख विकृत किए वे मुस्कुराते हुए अपने मार्ग में गतिमान् हुए। वास्तव में महापुरुषों की यही प्रवृत्ति होती है।

क्षमा मूर्त्ति

दिगम्बर मुनि चर्या का पालन वास्तव में तलवार की धार पर चलने के समान ही है। उनके तप, संयम, साधना के कारण वे त्रैलोक्य पूज्य हैं। तीनों लोकों की समस्त शक्तियाँ उनके चरणों में नतमस्तक हो जाती हैं जिन्होंने घातिया-अघातिया कर्मों को नष्ट कर दिया या जो उन्हें नष्ट करने का उपक्रम कर रहे हैं; किन्तु काल के प्रभाव व अज्ञानता के कारण कुछ लोगों से उन आदरणीय महापुरुषों, संतों का यथोचित सम्मान तो दूर कदाचित् अपमान ही हो जाता है। जो उनके लिए घोर दुःख का कारण बनता है।

हमारा विहार फिरोजाबाद से पचोखरा के लिए चल रहा था। अशोक जी 'लाले चाचा' और अन्य कई लोग साथ में थे। चाचा ने कहा कि मैं गुरुदेव की समता उनके शांत, सौम्य व्यक्तित्व का वर्णन इस जन्म में तो क्या कई जन्म लेकर के भी नहीं कर सकता। उन्होंने बताया कि गुरुवर श्री, ऐलक श्री विमुक्त सागर व क्षुल्लक श्री विशंक सागर जी महाराज का विहार फिरोजाबाद से जलेसर के लिए चल रहा था। विहार करते-करते दो साधु आगे निकल गए व किसी कारण वश विमुक्त सागर जी महाराज पीछे रह गए।

वहाँ साधुओं की विराट, असाधारण व अलौकिक वृत्ति से अनभिज्ञ कुछ विधर्मियों ने महाराज श्री के लिए अपशब्दादि का प्रयोग किया, अनुचित चेष्टा करने का प्रयास किया। फिरोजाबाद, जलेसर आदि के भक्तगण जो वहाँ उपस्थित थे उन्होंने उन्हें रोका और आगे से निर्ग्रन्थ गुरुओं के प्रति कुव्यवहार न करें इसके लिए पुलिस थाने में रिपोर्ट करा दी। पुलिस उन उच्छृंखल युवाओं को पकड़कर ले गई व और साधुओं के प्रति दुर्व्यवहार के लिए दंड हेतु वही बंद कर लिया। संघ को उस दिन शाहपुरा विश्राम करना था। गुरुवर श्री तो पहले ही वहाँ पहुँच चुके थे, बाद में श्री विमुक्त सागर जी महाराज भी पहुँचे और संपूर्ण घटनाक्रम गुरुवर को बता ही रहे थे कि उन युवाओं के घर वाले रोते हुए आए और बोले 'महाराज, क्षमा कर दो, हमारे बच्चे कुछ जानते नहीं हैं, आप कह देंगे तो पुलिस उन्हें छोड़ देगी।'

गुरुवर श्री ने उन्हें वात्सल्यपूर्वक बैठाया, संपूर्ण घटनाक्रम सुना व श्रावकों से बोले–जो कुछ भी हुआ, उसका कारण उनकी अल्पज्ञता थी। हमारा धर्म तो क्षमा है। उन्हें वहाँ से मुक्त कराओ। इस सब वार्तालाप के मध्य शाहपुरा गाँव के सरपंच हरदयाल सिंह यादव भी वहाँ उपस्थित थे। साधुओं के जिस व्यवहार के विषय में अभी तक लोगों से सुना था, पुस्तकों में पढ़ा था वह साक्षात् देखने को मिल रहा था। वे अत्यंत भावुक हो गुरुवर श्री के चरणों में लेट गए। बोले–हमारे गाँव में कोई

मानव नहीं बल्कि भगवान् आए हैं। संपूर्ण गाँव में हर्ष व भक्ति की लहर छा गयी।

उस दिन के बाद से हरदयाल सिंह जी तो गुरु चरणों के असीम अनुरागी हो गए व समय-समय पर गुरुवर श्री के दर्शन कर उनका आशीर्वाद प्राप्त कर अपने सौभाग्य को सराहते हैं। उनकी भक्ति, श्रद्धा के कारण उनको 2012 में संघस्थ साधु की पिच्छिका भी प्राप्त हुई थी। ऐसे एक नहीं सहस्रों व्यक्ति हैं जो गुरुवर श्री के आचरण को देखकर दिगंबर मुनियों के प्रति श्रद्धावनत् हुए। धन्य हैं ऐसे साधक जिनके कारण संपूर्ण श्रमण गगन गौरवान्वित है, जिन्होंने जैनेतर लोगों में भी निर्ग्रंथ मुनियों के प्रति श्रद्धा का भाव भरा और सभी के लिए कल्याण का मार्ग प्रशस्त किया।

प्रत्येक घड़ी परीक्षा की

'साधु जीवन की प्रत्येक घड़ी परीक्षा की घड़ी होती है अतः प्रत्येक पल सावधान व जागरूक रहना' ये शब्द पूज्य गुरुदेव ने हमसे दिसंबर 2008 सीकरी में कहे थे। उन्होंने कहा कि साधु जब विहार करते हैं तब ईर्या समिति पूर्वक चलते हैं, आहार एषणा समिति पूर्वक करते हैं, साधु की प्रत्येक क्रिया दर्शनीय, वंदनीय व अभिनंदनीय होती है। यहाँ तक कि साधु की शयन क्रिया भी विशेष होती है, जब एक करवट से वे अल्प विश्राम करते हैं। साधु सोते हुए भी सावधान रहता है।

पूर्व में सुना था कि गुरु अपने शिष्य को बीजाक्षरादि से युक्त एक विशेष मंत्र देते हैं जो गुरु मंत्र कहलाता है। किन्तु हमारा अनुभव कहता है कि हर पल पर, हर संबोधन में, गुरुवर श्री की कक्षा में उनका कहा गया हर शब्द, हर पंक्ति गुरु मंत्र है, जो जीवन पथ पर समीचीन रूप से बढ़ने के लिए प्रकाश स्तंभ के समान है।

एक बार स्वाध्याय में चर्चा चल रही थी। क्षु. विशंक सागर जी महाराज ने बताया कि गुरुवर श्री के जीवन के विहारादि संबंधित कई ऐसे प्रसंग हैं जो व्यक्ति को कभी विस्मित करते हैं तो कभी नयन अश्रुपूरित कर देते हैं और कभी

तो अतिशय या चमत्कारादि को नास्तित्व रूप में स्वीकार करने वालों को उसके अस्तित्व का बोध करा देते हैं।

लगभग दिसंबर-जनवरी 1991 की बात है। गुरुवर श्री व उनके साथ 2 क्षुल्लक जी महाराज का विहार खबरा से पवई के लिए हुआ। लगभग 15 कि.मी. का विहार था। दोपहर 1:00 बजे विहार कर 4:00 बजे तक सब लोग वहाँ पहुँच गए जहाँ से गन्तव्य स्थान 1/2 कि.मी. था। सर्दी व शाम लगभग 4:00 बजे का समय, धूप के दर्शन भी कुछ दिनों से वहाँ के निवासियों को कदाचित् संतुष्टिपूर्वक नहीं हो रहे थे; प्रतीत होता था जैसे बर्फीली हवा चल रही हो। वस्त्रधारी गुरुभक्त श्रावक जब सर्दी के कारण काँप रहे थे तब दिगंबर साधु या अति अल्प वस्त्र धारक क्षुल्लक जी महाराजों की शीत वेदना तो अकथनीय सी प्रतीत होती है।

1/2 कि.मी. आगे ही गाँव था जहाँ रात्रि विश्राम करना था। किन्तु वह 1/2 कि.मी. का मार्ग कोई सामान्य मार्ग नहीं था बल्कि जलमार्ग था। वह नदी थी जहाँ पास में झरने से बहुत ऊँचाई से तेजी से पानी गिर रहा था। कुछ लोगों के लिए तो वह गिरता पानी ही भय का कारण था। अब उस गाँव तक पहुँचने का अन्य कोई विकल्प नहीं था। किन्तु जल की तीव्रता ऐसी लग रही थी मानो क्रोध से कंपित कोई नृप जिसने शत्रु विनाश का संकल्प लिया हो अपनी अक्षौहिणी सेना को लेकर तेजी से बढ़ा चला आ रहा हो। इस दृश्य को देखते हुए सभी कुछ क्षण वहाँ ठहरे।

तभी एक बाबा जी पूज्य गुरुदेव के समीप पहुँचे और बोले महाराज श्री! सूर्यास्त होने को है, और यह बर्फीली ठंडी हवा चल रही है। आप इस नदी को पार कर लीजिए इसका पानी घुटनों से ऊपर नहीं है; किन्तु मात्र यही स्थान, इससे आगे पीछे पानी अधिक गहरा है और हाँ, अकेले कोई भी नदी में नहीं जाना वरना पानी का बहाव इतना तेज है कि बहने वाले का शरीर तक नहीं मिलेगा। एक बात और, नदी पार करते समय कोई भी अपने पैर नहीं उठाना खिसका खिसकाकर आगे बढ़ना क्योंकि वहाँ पत्थर की चिकनाहट व तीव्र बहाव के कारण पैर उठाएँगे तो दूसरा पैर टिक नहीं पाएगा।। गुरु जी ने सभी साधु व श्रावकों को यही निर्देश दिया। कुछ ही क्षणों बाद बाबा जी से कुछ पूछने के लिए अपनी दृष्टि घुमायी तो वहाँ कोई नहीं दिखा। चारों तरफ खुला मैदान सा था सब तरफ देखा किन्तु वे बाबा जी दिखाई नहीं दिए।

'साधुओं के पास तो सदैव दैवीय शक्तियों का वास होता है।' ऐसे कहते हुए श्रावकों की श्रद्धा और अधिक दृढ़ व निर्मल हो गई। लगभग 15 श्रावक थे व गुरुवर श्री सहित लगभग 3 साधु थे। बीच में संघ को लेकर दोनों ओर श्रावक आधे-आधे हो गए व एक-दूसरे के कसकर हाथ पकड़ धीमे-धीमे चलकर उस नदी को पार कर लिया।

इस घटना को सुन यह दृश्य हमारी आँखों के सामने ऐसे आ गया मानो हम स्वयं इसके प्रत्यक्ष-दर्शी ही हों। वास्तव में साधु जीवन की प्रत्येक घड़ी, प्रत्येक क्रिया परीक्षा ही है जिसमें ऐसे ही ज्ञानी-तपस्वी साधक उत्तीर्ण होते हैं और अन्य सभी के लिए आदर्श और प्रेरक बनते हैं।

भर आया जल

जहाँ-जहाँ गुरुओं के चरण पड़ते हैं वहाँ-वहाँ सब मंगल होता जाता है। यही तो इस भारत भूमि की विशेषता है जिसके कारण इसकी माटी भी पूजनीय कही जाती है विश्व में आध्यात्मिकता का सूत्रपात करने से विश्वगुरु की उपमा को धारण करती है। हमने मात्र सुना था कि जिनाभिषेक अथवा कमंडलु का जल-जहाँ पानी खत्म हो चुका हो ऐसे कुएँ आदि में डालने से वह कुँआदि पुनः जल से परिपूरित हो गया।

22 मार्च 2020 जब कोरोना महामारी के कारण भारत में प्रथम बार जनता कर्फ्यू लगाया गया था। तब गुरुवर श्री ससंघ शमशाबाद (आगरा) में विराजमान थे। प्रशासनिक नियमों का पालन करते हुए कुछ दिनों पश्चात् हम सब भी वहाँ पहुँचे। वहाँ माता प्रसाद चौधरी जी का बाड़ा है जिसमें स्कूलादि भी बना हुआ है। जब भी कोई साधु वहाँ से गुजरते हैं तो वहीं ठहरते हैं।

यूँ तो शमशाबाद में त्रिदिवसीय शिलान्यासादि के कार्यक्रम के पश्चात् पचोखरा के पंचकल्याणकादि कई कार्यक्रम गुरुवर श्री के थे किन्तु देश में उत्पन्न विषम परिस्थितियों के कारण जैसे मानो सब कुछ ठहर सा गया हो। हम तो यही कहेंगे कि शमशाबाद निवासियों का तीव्र पुण्य था जो तीर्थंकर सम अभिवंदनीय आचार्य गुरुवर श्री का दीर्घकालीन सान्निध्य उन्हें

प्राप्त हुआ। यह खुशी आज भी उनकी आँखों से अश्रु बन छलकती है। वे आज भी कहते हैं कि वे दो-ढाइ माह तो आज भी स्वप्न के समान लगते हैं जब आचार्य श्री का सान्निध्य हम ग्रामवासियों को प्राप्त हुआ। वास्तव में उस छोटी सी समाज का सेवा-भक्तिभाव अन्य श्रावकों द्वारा भी अनुकरणीय है।

संपूर्ण संघ की साधनादि चल रही थी। कुछ दिनों पश्चात् माता प्रसाद जी व उनका पूरा परिवार आचार्य गुरुवर के चरणों में उपस्थित हुआ। चेहरे पर असीम मुस्कुराहट हाथ में अर्घ्य का थाल और आँखों में हर्षाश्रु लिए वे बोले आचार्य श्री आपकी तपस्या-साधना धन्य है आज तो हमारे यहाँ साक्षात् चमत्कार हुआ है। कक्ष में ही स्थित मुनि श्री प्रज्ञानंद जी महाराज जी ने पूछा 'क्या हुआ?' उन्होंने बताया कि 5-7 वर्षों पूर्व उनकी बोरिंग बंद हो गयी थी। मिट्टी जम चुकी थी। उन्होंने कुछ दिनों पूर्व ज्ञानानंद जी महाराज से इस विषय में बताया तो उन्होंने कहा कि जिन व गुरुचरण गंधोदक बोरिंग में डालना। वे श्री जी का गंधोदक व गुरुवर के पाद प्रक्षालन कर वह गंधोदक नित्य उसमें डालने लगे। कुछ ही दिनों में जिसकी वे उम्मीद भी छोड़ चुके थे। ऐसा चमत्कार उनके समक्ष हुआ, उनकी बोरिंग में पानी आ गया।

वे सभी लोग बोले 'आचार्य श्री ये महामारी तो मानो हमारे लिए वरदान बन गई जो आपका सानिध्य हम लोगों को प्राप्त हो रहा है अन्यथा ऐसा समय तो हमारे लिए स्वप्न में भी

दुर्लभ था। आपका ही चमत्कार है जो सूखी बोरिंग फिर जल से परिपूरित हो गई।'

'हमारा कुछ नहीं, सब आप लोगों का पुण्य है', ऐसा कहकर व आशीर्वाद प्रदान कर आचार्य गुरुवर अपनी जापादि में संलग्न हो गए। यह सब कुछ हम भी देख रहे थे। सोचा वास्तव में गुरुवर की शक्ति साधना अचिंत्य है। उस साधना को शब्दों में कहना तो संभव है ही नहीं किंतु कई बार तो कठोर साधना को देख प्रतीत होता है कि वह समग्रता से हमारे चिंतन से भी बाह्य है। धन्य हैं वे गुरुवर जिनकी साधना के प्रत्यक्षदर्शी बन हम तीर्थंकर भगवंत की प्रत्यक्षदर्शिता का अनुभव करते हैं।

जीवनाधार

गुरुवर श्री का साक्षात् दर्शन व आशीर्वाद तो दूर, उनके तो चिंतन या नाम मात्र से ही सर्व कष्ट व दु:ख नष्ट हो जाते हैं। गुडगाँव निवासी श्रीमती रेणुका जैन ने कहा 'मेरे जीवन की दिशा व दशा जो आज समीचीन है वह सब गुरुदेव की देन है।' उन्होंने बताया कि जिस समय उनके पति का वियोग हुआ उस समय पर प्राणहीन के समान उनमें प्राण, उत्साह व जिजीविषा उत्पन्न करने वाले गुरुदेव ही थे।

31 दिसंबर 2020 की बात है रेणुका जी अपने परिवार सहित मसूरी से लौट रहीं थीं। मुजफ्फरनगर के निकट उनकी गाड़ी का ट्रक के साथ बहुत भयानक एक्सीडेंट हो गया। जिस साइड वो बैठी थीं उसी साइड ट्रक की टक्कर हुई। उन्होंने बताया कि जैसा कि स्वभाविक है उनकी आँखें बंद हो गईं। ऐसा लगा मानो जीवन का अंतिम क्षण ही आ गया। उस समय मन:स्थिति क्या होगी यह उस समय की परिस्थिति से ही जाना जा सकता है।

आँख बंद करते ही ऐसा उन्हें अद्भुत दृश्य दिखा जिसे सोचकर आज भी मन भाव-विभोर हो जाता है। उन्हें गुरुवर श्री के चरण दिखे व ऐसा लगा चरणों में बहुत पुष्प बिखरे हुए हैं

और साथ में पीछी व कमंडलु। मानो उन्हीं की ओर उनकी रक्षार्थ गुरुवर बढ़े चले आ रहे हों। और गाड़ी को अपनी शक्ति व स्नेह से जैसा का तैसा ही थाम दिया हो। आश्चर्य की बात यह थी कि गाड़ी पूरी damage हो गई थी किन्तु गाड़ी में बैठे उनको या उनके परिवारी जनों को खरोंच तक नहीं आई। गुरु चरणों में श्रद्धा भक्ति के पुष्प लिए कृतज्ञता से नम्रीभूत हुए वे अगले ही दिन सपरिवार बौलखेड़ा गुरुवर श्री के दर्शनार्थ आयीं।

वास्तव में हर भक्त हर शिष्य को गुरुवर श्री का आशीर्वाद, वात्सल्य सदैव उनके हर पल साथ होने का अहसास कराता है। जब भी कोई दु:ख कष्ट हो तब गुरुवर का स्मरण मात्र उसे ऐसे नष्ट कर देता है जैसे लोक में छाए अंधकार को सूर्य का प्रकाश नष्ट कर देता है। गुरुवर श्री के स्मरण मात्र से अभिलाषाएँ ऐसे पूर्ण होती हैं मानों चिंतामणि रत्न का ही चिंतन किया हो। ऐसे आचार्य गुरुवर के चरणों में शत्-शत् नमन है जिनका चिंतन, मनन, स्मरण, ध्यान मात्र भी कर्म क्षय का व शिव सुख का कारण है।

धन्य हैं गुरुदेव

जब दुनिया के सब द्वार बंद हो जाते हैं तब एक गुरु का द्वार ऐसा होता है जहाँ से व्यक्ति अपनी समस्त समस्याओं का समाधान प्राप्त करता है, जहाँ से आशा की किरण व पुनर्जीवन की उमंग व उल्लास प्राप्त होता है। जहाँ से व्यक्ति को नवऊर्जा साहस व संबल प्राप्त होता है। जब जीवन की आस तक छूट जाती है तब श्वांस-श्वांस में संबल देने वाले गुरु ही होते हैं। पूज्य गुरुदेव के चरणों में आए कई लोगों को कहते सुना है कि गुरुवर हमारा यह जीवन तो आपका दिया हुआ है। ऐसी एक नहीं अनेक घटनाओं के हम साक्षी हैं जहाँ डॉक्टर्स हार मान चुके थे, किन्तु गुरुवर श्री के आशीर्वाद से उन लोगों ने मानो नवीन व समीचीन जीवन पाया।

टूण्डला निवासी निखिल भैया गुरु चरणों में पहुँचे और चरण स्पर्श कर बोले गुरु जी आप धन्य हैं, आपने तो असंभव को संभव कर दिया। अपने सहज स्वभाव से हमेशा की भाँति गुरुवर श्री ने कहा 'यह सब तो भगवान् की कृपा और आपका पुण्य है' वे बोले 'मैं नहीं जानता भगवान्, मैं नहीं जानता पुण्य, मैं तो बस आपको ही जानता हूँ।'

उन्होंने बताया मई, 2019 में उनकी मम्मी (श्रीमती रूपेश जैन) का स्वास्थ्य बहुत अधिक खराब हो गया। उन्हें पैरालिसिस का अटैक आया। शरीर का दायाँ हिस्सा शून्यवत् हो गया। डॉक्टर को दिखाया तब उनकी स्थिति देखकर वे बोले कम से कम छः माह तो लगेंगे ही और आगे का भगवान् जानता है। अपनी मम्मी की यह हालत देख पुत्र को कष्ट होना स्वाभाविक ही था। जब कुछ समझ नहीं आता तब गुरु का आश्रय ही है जो सम्यक् पथ प्रदान करता है। उन्हें भी गुरुवर श्री का आशीर्वाद प्राप्त हुआ गुरुजी ने कहा 'चिंता मत करो, शीघ्र सब ठीक हो जाएगा।'

भैया ने बताया कि गुरुवर के आशीर्वाद से 15 दिनों में ही उनकी मम्मी के स्वास्थ्य में सुधार आने लगा। डॉक्टर भी आश्चर्यचकित थे कि जिस तरह का अटैक उन्हें पड़ा था इतनी जल्दी वह ठीक कैसे हो गया?

उन्होंने बताया कि उनके स्वास्थ्य लाभ के लिए परिवारी जनों ने मंदिर जी में 48 दिन का भक्तामर स्तोत्र का पाठ रखा था, 45वें दिन उनकी मम्मी श्रीमती रूपेश जैन जी ने स्वयं अपने पैरों से चलकर मंदिर पहुँचकर 45वें काव्य पर दीपक चढ़ाया। वे बोले मैंने अपने जीवन में इतना बड़ा आश्चर्य कभी नहीं देखा।

ऐसी एक नहीं सहस्राधिक घटनाएँ हैं जहाँ अभय प्रदाता, जीवनदाता आचार्य गुरुवर ने श्रावकों को मानो नवीन जीवन देकर

उन्हें धर्म मार्ग पर अग्रसर किया। उन सभी घटनाओं को यहाँ कह पाना संभव नहीं है।

वास्तव में गुरुओं की शक्ति अगम्य व निस्सीम है। मैं और तो कुछ जानती नहीं किन्तु हाँ अपने अनुभव से यह अवश्य कह सकती हूँ कि दुनिया में असंभव दृष्टिगोचर होने वाली सभी कामनाएँ या कार्य गुरु चरणों में पूर्ण होते हैं। हमने स्वयं देखा है कि कभी तो किसी की सहज सी बीमारी या ऑपरेशन आदि के संबंध में गुरुवर श्री के मुख से निकलता है कि ''Condition बहुत critical है, आप जाप करें।''

और कई बार कैंसर जैसी भयानक बीमारियों से लड़ते हुए या critical condition में आए श्रावक को भी कह दिया ''चिंता मत करो, मैं हूँ ना जाप लगाओ।''

और अधिक आश्चर्य तब होता है जब उसी कथनानुरूप परिणाम दृष्टिगोचर होते हैं।

हम नहीं जानते यह निमित्तज्ञान है या वाक्सिद्धि या आचार्य गुरुवर की तप-साधना का प्रभाव। किन्तु हाँ संपूर्ण जिनशासन श्रमण गगन गौरवान्वित है पंचमकाल में ऐसे साधक को पाकर और अत्यंत पुण्यवान् हैं हम सब जिन्हें ऐसे समय में तीर्थंकर के प्रतिबिंब रूप आचार्य गुरुवर का चरण सान्निध्य प्राप्त है।

सर्दी की रात्रि

सिर पर कोई छत्र नहीं, पैरों में कोई पदत्राण नहीं, नख से शिख तक यथाजात बालक रूप दिगंबर मुनिराज की साधना वर्तमान युग का सबसे बड़ा आश्चर्य है। जहाँ संपूर्ण विश्व भौतिक विकास की प्रतिस्पर्द्धा में दौड़ रहा है वहाँ समस्त परिग्रह का त्याग कर अत्यंत निरीह व निस्पृह वृत्ति से रहने वाले दिगंबर साधक आश्चर्य ही तो हैं। उस पर भी आचार्य गुरुवर की विशेष साधना जिसे देखकर हम भी चकित रह जाते हैं।

नमक, मीठा, तेल, दही इन रसों के पूर्ण त्यागी गुरुवर आहार चर्या में मात्र एक रस को ही ग्रहण करते हैं, उसमें भी नीरस, उत्कृष्ट ऊनोदर, अन्न त्याग, अनुपवास, उपवास चलते ही रहते हैं। गुरुवर श्री के कक्ष में ही रहने वाले मुनि महाराज या भैया जी बताते हैं कि रात्रि में गुरुवर श्री अत्यल्प निद्रा लेते हैं, मध्य रात्रि में आँख खुलती है तो गुरुवर श्री को जाप, ध्यानादि में ही संलग्न पाते हैं।

मार्च, 2018 में आर्यिका संघ कुछ समय के लिए झांसी रुका। वहाँ हमसे एक भाभी ने कुछ संकोच से कहा 'माता जी! क्या एक बात पूछूँ? हमने कहा घबराइये मत, कहिए, क्या कहना चाहती हैं आप?' वे बोलीं 'माता जी हमने सुना है दिल्ली में

रहने वाले साधु पंखे आदि का प्रयोग करते हैं क्या ये सच है?' हमने कहा 'सब नहीं'। तब तो वे चली गयीं बाद में हमने विचार किया कि वास्तव में दिल्ली आदि जैसी भोग प्रधान नगरियों में रहकर अपने संयम में दृढ़ रहना आश्चर्य की बात है।

गुरुवर श्री ग्रीष्म काल में पंखे आदि का प्रयोग नहीं करते उन सभी का त्याग है और सर्दियों में भी चटाई आदि का त्याग रहता है।

मई, जून की झुलसती गर्मी हो या पौष की सर्दी दिगंबर वेषधारी गुरुवर समता पूर्वक परीषहों को सहन करते हैं। गर्मियों में विहार में कई बार तो पूरी दोपहर एक वृक्ष के नीचे ही निकल जाती है। हमने स्वयं देखा है कि शाम का विहार कर संघ कहीं गाँव, स्कूलादि में रुका तो सहस्रों मच्छर आकर शरीर को घेर लेते हैं, उस समय भी जिस शांत व सौम्य मुद्रा से मुख नीचा कर, आँख बंद कर वे बैठे रहते हैं, तब हम कहते हैं धन्य हैं गुरुदेव, धन्य है उनकी समता, धन्य है उनकी साधना।

क्षुल्लक श्री विशंक सागर जी महाराज ने बताया सन् 1998 के आसपास की बात है। गुरुवर श्री, क्षुल्लक जी आदि पवई में रुके हुए थे। सर्दियों का समय था, पानी तो जम रहा था किन्तु ऐसा प्रतीत हो रहा था कि यह तो व्यक्तियों को भी नहीं छोड़ेगी। ऐसी सर्दी देख वैय्यावृत्ति में एक श्रावक ने क्षुल्लक जी से कहा 'महाराज जी! अंगीठी रख दूँ, सर्दी बहुत है।'

जैसा कि पूर्व में बताया कि गुरुवर श्री का प्रत्येक मौसम में सभी प्रकार की वातानुकूलित सामग्री का त्याग है अतः

क्षुल्लक जी ने मना कर दिया। उसने 2-3 बार अलग-अलग प्रकार से कहा किन्तु उत्तर तो एक ही होना था, वह था 'नहीं'।

फिर भी ठंडी देख उस श्रावक से रहा नहीं गया जब गुरुवर श्री की नींद लगी तब रात्रि में लगभग 11 बजे वह चुपके से कमरे में अंगीठी रख गया।

क्षुल्लक जी बोले 'हमने सोचा हमने तो रखवाई नहीं, हमारी डाँट तो पड़ेगी नहीं और कम से कम रात्रि में सो तो जाएँगे अन्यथा बैठे-बैठे ही रात निकलती है। वे तो यह सोचकर सो गए। किन्तु जब रात्रि के अंतिम पहर में उनकी आँख खुली तो देखा गुरुवर श्री कक्ष में नहीं हैं। शुद्धि आदि के लिए गए होंगे यह सोचकर वे कुछ क्षण रुके किन्तु जब गुरुवर नहीं आए तो वे देखने निकले। उन्होंने पाया कि गुरुवर श्री कक्ष के बाहर खुले में ही ध्यानलीन थे।

उन्हें समझते देर नहीं लगी कि अंगीठी के कारण गुरुवर की लगभग पूर्ण रात्रि बाहर ही व्यतीत हुई।

ऐसे भोले, सरल, सहज, दृढ़निश्चयी साधक के लिए मैं क्या कहूँ? कहने के लिए तो शब्दों का आलंबन आवश्यक है; किन्तु उनके निःसीम व्यक्तित्व को कहने के लिए सीमित शब्द पर्याप्त नहीं। मैं भी ऐसी निर्मल, दृढ़ साधना की भावना भाती हूँ और प्रणाम करती हूँ ऐसे साधक को जिनका नाम स्मरण भी परिणाम विशुद्धि, कर्म क्षय में कारण है। धन्य हैं ऐसे साधक जिनकी साधना के बल से देव भी उनके चरणों के दास हो उनकी भक्ति, सेवा, आराधना में तत्पर रहते हैं।

अद्‌भुत है स्मरण शक्ति

मानव मस्तिष्क विचारों का विश्वविद्यालय है। प्रतिसमय कोई-न-कोई चिंतन निरंतर चलता ही रहता है। यदि वे विचार अशुभ हों तो अहितकारी हैं और यदि शुभ हों तो स्वयं के लिए तो कल्याणकारी हैं ही एवं श्रेष्ठ विचारक के अच्छे या शुभ विचार अन्य लोगों के लिए भी कषायों के शमन, परिणाम विशुद्धि के कारक एवं प्रेरणादायी भी होते हैं। नि:संदेह आचार्य गुरुवर एक श्रेष्ठ दार्शनिक व विचारक भी हैं। कई बार आचार्य भक्ति के बाद या अन्य स्वाध्यायादि के समय संघ के समक्ष सभी को संबोधित करते हुए जब स्वयं का नवीन चिंतन सुनाते हैं तो मन में आनंद व विशुद्धि की शीतलता मानो पूर्णतया ही विषय-कषायों की अग्नि का शमन कर देती है।

गुरुवर श्री के प्रवचन, स्वाध्याय, कक्षा आदि में उनके गंभीर, तर्कयुक्त एवं गहन विचारों का बोध हो पाता है। साथ ही उनकी स्मरण शक्ति अत्यंत अद्‌भुत है वा हम जैसे अल्पज्ञों के द्वारा तो अविश्वसनीय सी प्रतीत होती है। संसार में कई लोग ऐसे होंगे जिन्हें क्षणार्द्ध में ही पठित विषय याद हो जाता है, अतिशीघ्र याद हो जाना विस्मयकारक नहीं है; किन्तु वर्षों पूर्व पठित विषय को ऐसे बता देना जैसे आज ही पढ़ा हो, हमें सदा से विस्मित कर देता है।

स्वाध्यायादि के समय जब भी श्लोकादि आते हैं तब गुरुवर श्री पृथक-पृथक् ग्रंथ का नाम व श्लोक संख्या के साथ उद्धरण देते हैं। श्लोक संख्या सहित जब श्लोक बोलते हैं तब तो वह आश्चर्यकारी है ही साथ में जब बताते हैं कि यह ग्रंथ 1989, 1991, 1994 आदि में पढ़ा था तो यह सुनकर हमारे आश्चर्य की सीमा नहीं रहती। सामान्यतया जो ग्रंथ कुछ दिवस पूर्व पढ़ें हों तब उनकी विषयवस्तु आदि तो व्यक्ति को स्मृति में रहती नहीं और गुरुवर श्री के द्वारा 20-30 वर्ष पूर्व पढ़ें ग्रंथों की विषयवस्तु इत्यादि को याद रखना, श्लोकादि सुनाना हमें तो असंभव सा प्रतीत होता है।

कभी विहारादि की चर्चा हो, पूर्व घटनाएँ सुनानी हो तो दिनाँक, माह, वर्ष व स्थान सहित संपूर्ण घटनाक्रम कह देते हैं, आचार्य गुरुवर की स्मरण शक्ति असाधारण है। जनवरी 2021 में बौलखेड़ा में कुछ मुनिराज पुरुषार्थ सिद्धयुपाय ग्रंथ का स्वाध्याय कर रहे थे। आहार के पश्चात् ईर्यापथप्रतिक्रमण के लिए पूरा संघ एकत्रित हुआ। तब मुनि श्री जिनानंद जी महाराज जी ने गुरुवर श्री से पूछा 'महाराज जी! पुरुषार्थ सिद्धयुपाय में चार प्रकार के असत्य कहे गए हैं। हमें कुछ स्पष्ट नहीं हो पा रहे।'

आचार्य गुरुवर ने तुरंत चार प्रकार के असत्यों का कथन उदाहरण सहित कर दिया। उन्होंने बताया कि श्लोक नं. 90 के आसपास गाथाएँ दी हैं। अस्ति को नास्ति रूप कहना, नास्ति को

अस्ति रूप कहना, वस्तु को परस्वरूप से कहना व अप्रिय-निंद्य वचन कहना, इस प्रकार चार प्रकार के असत्य हैं। सभी शिष्यवर्ग हाथ जोड़कर गुरुवर श्री के शब्दों को सुन रहा था। हम भी सुन रहे थे। हमने सोचा ग्रंथ तो हमने भी पढ़ा है किन्तु हमें तो यह सब स्मृति में ही नहीं है। हमने तुरंत कहा गुरु जी आपने तो शब्दशः ही व्याख्या कर दी जैसे अभी कुछ दिनों में ही पढ़ा हो। गुरु जी ने कहा आचार्य भगवन् श्री अमृतचंद्र स्वामी कृत इस शास्त्र का अध्ययन हमनें 1991 में किया था।

हम तो सुनकर हतप्रभ रह गए। ऐसा सोचने लगे धन्य है गुरुवर श्री की स्मरण शक्ति। पंचमकाल में श्रुतकेवली के समान ज्ञान में निरंतर रत रहने वाले, ज्ञान सिंधु में अहर्निश अवगाहन करने वाले अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी गुरुवर के चरणों में कोटि-कोटि नमन करते हुए स्वयं को सौभाग्यशाली अनुभव करते हैं।

अनुवीची भाषा कला

'बड़ों के साथ तो प्राय:कर सभी अच्छा व्यवहार करते हैं व आदरयुक्त मिष्ट वचन बोलते हैं किन्तु व्यक्ति के व्यक्तित्व की सही पहचान उससे होती है कि वह छोटों से किस प्रकार का व्यवहार करता है या बोलता है।' जैसे धातु की आवाज से यह चाँदी, सोना, लोहा, पीतल इत्यादि है, ज्ञात हो जाता है उसी प्रकार व्यक्ति की वाणी उसके व्यक्तित्व की परिचायक है। गुरुवर श्री की समीचीन, वात्सल्यमयी, आदर-सम्मान से परिपूरित गंभीर वाणी नि:संदेह उनके अप्रतिम व्यक्तित्व की दिग्दर्शिका है।

आयु आदि में स्वयं से बड़े हों या छोटे किन्तु आचार्य गुरुवर प्रत्येक व्यक्ति के नाम के साथ मुख्यता से 'जी' लगाकर ही उसे संबोधित करते हैं। वे प्रवचनादि में कहते भी हैं कि 'रोटी पर घी लगाना या मत लगाना किन्तु नाम के साथ 'जी' अवश्य लगाना। सामान्य बोलचाल में भी गुरुवर श्री की सुपरिमार्जित भाषा सभी के लिए अभिनंदनीय व अनुकरणीय है। कई बार गुरुवर श्री की वाणी सुन लोग कहते हैं कि 'आचार्य श्री की वाणी इतनी मीठी है लगता है सुनते ही रहो।' कई लोग कहते हैं कि जब गुरु जी के शब्द अंतरंग में पहुँचते हैं तो प्रतीत होता है कि अंतरंग भी मिठास से परिपूरित हो गया हो।

गुरुवर श्री की गृहस्थावस्था से संबंधित एक घटना ज्ञात हुई। उनके गृहस्थावस्था से संबंधित सभी परिवारी जन या क्षुल्लिका श्री भव्यनंदनी माता जी (गृहस्थावस्था की माँ श्रीमती त्रिवेणी जी) ने भी बताया कि बचपन से ही वे अत्यंत मृदुभाषी थे। सभी भाई-बहनादि में सर्वाधिक उनकी भाषा ही सुसंस्कारित थी। और तो और माँ व पिता को सभी बड़े चाचा व जीजी कहते थे क्योंकि घर में बच्चों ने यही शब्द उनके लिए सुने थे। मम्मी-पापा कहना प्रारंभ ही इन्होंने किया था।

स्वयं से बड़ों से भैया आदि व छोटे भाई-बहनों से भाई, बहन शब्दों का ये प्रयोग करते थे। इनकी सुमधुर मासूम आवाज सुन सभी प्रसन्न हो उठते थे। जब लगभग 19 वर्ष की अल्पायु में उन्होंने गृह त्याग किया तब कुछ समय पश्चात् उनके बड़े भाई नरेश भैया उनके पास पहुँचे और बोले 'जब से तुमने गृह त्याग किया है, मेरे कान 'भैया' शब्द सुनने को ही तरस गए।'

वास्तव में गुरुवर श्री बचपन से ही अनुवीची भाषण कला में निपुण हैं, जो उनके व्यक्तित्व का सबसे पृथक् निर्माण करती है। अपने शिष्य वर्ग को भी गुरु जी इसी प्रकार बोलने की शिक्षा व प्रेरणा देते हैं। जिनकी वाणी पर सर्व विवेकी संसार विमोहित है उनकी वाणी पर व्याख्यान हेतु हमारी वाणी तो समर्थ नहीं है। साक्षात् सरस्वती का वास ही जिनकी वाणी में है ऐसे गरिमायुक्त गंभीर व माधुर्य वाणी के धनी आचार्य गुरुवर सर्वकाल स्मरणीय, वंदनीय व स्तुत्य हैं।

गुरु ही पालक

'गर्भाधानक्रियामात्रन्यूनो हि पितरौ गुरु': गर्भाधान क्रिया से न्यून गुरु ही माता-पिता हैं। शास्त्रों में कई स्थानों पर गुरु को माता-पिता कहकर उनके वात्सल्य, अनुशासन, सुसंस्कार हेतु नारियलवत् कठोरता को परिलक्षित किया है। आचार्य गुरुवर की छत्रछाया में रहकर इतना अवश्य कह सकते हैं कि बच्चों को सुसंस्कार प्रदान करने वाले माता-पिता तो कदाचित् उनका वही भव सम्हारते हैं किन्तु शिष्यों को संतानवत् व्यवहार व अध्यात्म शिक्षा प्रदान कर गुरु उनके भवों-भवों को सम्हारते हैं।

संघस्थ मुनिराज आदि सभी कहते हैं कि गुरुवर श्री ने हमें मात्र शास्त्राध्ययन ही नहीं कराया बल्कि संपूर्ण व्यावहारिक जीवन का ज्ञान कराया है। साधना, तप, उपवास, आहार आदि जो भी साधु जीवन के आवश्यक, महत्वपूर्ण घटक या आयाम हैं वे इन्हीं की देन है। गुरुवर श्री के व्यक्तित्व, संघ संचालन आदि से प्रतीत होता है कि शास्त्रों में जो गुरु को माता-पिता कहा गया है वह इन्हीं जैसे गुरुवर के लिए कहा है। लगता है जैसे इन्हीं आचार्य गुरुवर को देख शास्त्रों में गुरु का व्यक्तित्व वर्णित किया है अथवा यों कहें कि आचार्य गुरुवर के चरण सान्निध्य में रहने के उपरांत शास्त्रों से गुरु के स्वरूप को जानने की

आवश्यकता नहीं। मानों शास्त्रों में theory है और गुरुवर श्री का जीवन उसका practical ।

प्रत्येक शिष्य के प्रति गुरुवर का स्नेह, वात्सल्य नि:सीम है। एक बार संघ में किन्हीं त्यागीव्रती का स्वास्थ्य प्रतिकूल हो गया। स्वास्थ्य की प्रतिकूलता के विषय में उनके पारिवारिक जनों को भी ज्ञात हुआ। कोई व्यंतरादि की बाधा उसे सता रही थी। जिस समय उनके परिवारीजन दर्शनार्थ आए उस समय आचार्य गुरुवर व कुछ ही साधु पंचकल्याणक हेतु अलवर में विराजमान थे। उनके परिवारी जनों ने हमसे कहा, ''आचार्य श्री तो इनका उपचार जापादि के माध्यम पूर्व से कर ही रहे हैं किन्तु जब आचार्य श्री लौटकर बौलखेड़ा आएँ तो यदि आप उचित समझें तो हमें बुलवा लीजिएगा।'

कुछ समय पश्चात् हमने गुरुवर श्री को सारी बात बतायी और उनके परिवारी जनों को बुलवाने हेतु पूछा। तब गुरुवर श्री ने कहा 'संघ में आने के पश्चात् हर शिष्य की पूरी जिम्मेदारी हमारी है। उनके माता-पिता विश्वास के साथ उन्हें हमारे पास छोड़ते हैं। अनुकूलता में अपने पास रखूँ और प्रतिकूलता में दूर भेज दूँ या घर वालों को बुलाकर उन्हें परेशान करूँ, यह तो हमारी परंपरा नहीं है। हम इनका उपचार स्वयं करेंगे और यदि आयु कर्म अल्प दिखेगा तो अपने ही चरणों में उत्तम समाधि कराएँगे।'

गुरुवर श्री के इन वचनों को सुनकर हमारी आँखें भर आयीं। हमने सोचा कि हमारे एक नहीं कई भवों का पुण्य फल है जो हमें ऐसे गुरुदेव मिले हैं; जो माता-पिता के समान शिष्यों का संरक्षण व उनके गुणों का संवर्द्धन करते हैं। जो कहते हैं बेटा! चिंता नहीं करना, मैं आप सबसे साधना करवाऊँगा, उपवास करना सिखाऊँगा। जिन्होंने जिनागम का क्रमिक अध्ययन कराया और करा रहे हैं। जिनका कहा गया एक-एक शब्द शिष्यों के लिए मोक्षमार्ग पर बढ़ने हेतु प्रकाश स्तंभ है। जो वार्तालाप, प्रवचन, आहार, साधना, व्यवहारिकता, आत्मकल्याण आदि कलाओं में शिष्यों को कुशलता प्रदान कर उनके जीवन को समुन्नत व समीचीन बनाते हैं। ऐसे आचार्य गुरुवर के चरणों में कृतज्ञतापूर्वक कोटिशः नमन करते हैं और भावना भाते हैं कि निर्वाण पर्यन्त हर भव में गुरु रूप में आचार्य गुरुवर का ही सान्निध्य प्राप्त हो।

रहस्यमयी विद्या के ज्ञायक

ज्योतिष का प्रकाण्ड ज्ञान रखते हुए भी गुरुवर श्री मात्र परमार्थ हेतु ही उसका प्रयोग करते हैं। समाधि व दीक्षा के प्रसंग में ही कुंडली आदि का अवलोकन करते हैं व उसके अनुसार ही निर्णय कर कार्यरत होते हैं। हमने सदैव देखा है कि किसी क्षपक को स्वीकार करने से पूर्व उसकी तात्कालिक कुण्डली के माध्यम से उसकी आयु का निर्णय करते हैं व उसी के अनुसार उसकी साधना का क्रम बताते हैं। किसी भी वस्तु विशेष, विद्या या ज्ञान का सदुपयोग करना तो आचार्य गुरुवर के माध्यम से सरलता से सीखा जा सकता है।

सितंबर, 2019 की बात है परम पूज्य सिद्धांत चक्रवर्ती राष्ट्र संत आचार्य श्री विद्यानंद जी मुनिराज का स्वास्थ्य कुछ ठीक नहीं चल रहा था। यद्यपि उनकी समाधि की साधना कुछ वर्षों पूर्व से ही चल रही थी किंतु उस समय लग रहा था संभवत: वह समय निकट है जिसके लिए वे यतिवर वर्षों से तैयारी कर रहे थे। सभी चिंतित थे। गुरुवर श्री कुछ संघस्थ मुनिराजों के साथ कुंदकुंद भारती (दिल्ली) में ही विराजमान थे। 18 सितंबर 2019 को गुरुवर श्री ने डॉ. जयकुमार उपाध्ये आदि से चर्चा की कि आचार्य श्री के आयु के संबंध में क्या विचार

है, इस समय क्या उचित होगा? उन्होंने कहा महाराज श्री मैंने स्वयं भी कुंडली आदि का अवलोकन किया है और जिनसे यह ज्योतिष विद्या सीखी है उन गुरु को भी दिखवाया है उसके अनुसार 10-12 दिन समझ में आ रहा है।

कुछ चर्चा उपरान्त जब सभी लोग चले गए तब रात्रि में गुरुवर श्री ने तात्कालिक कुंडली आदि के माध्यम से आयु के मात्र साढ़े तीन दिन शेष हैं ऐसा ज्ञान किया; और ऐसा जानकर 19 सितंबर को प्रातःकाल जिनदर्शन, औत्तमार्थिक प्रतिक्रमण, क्षमा याचनादि संपूर्ण विधिपूर्वक अपने गुरु आचार्य श्री विद्यानंद जी मुनिराज को संस्तारारूढ़ कराया और आचार्य श्री ने यम सल्लेखना स्वीकार की। गुरुवर श्री के लिए वह बड़ा ही कठिन क्षण था जब निर्यापकाचार्य बन अपने ही गुरु को संस्तारारूढ़ कराना था, यम सल्लेखना की प्रेरणा व संबोधन देना था। एक शिष्य के लिए यह सब कितना कठिन रहा होगा यह हमारी कल्पना से भी बाहर था।

जो भी है किन्तु दादा गुरु की आयु का यह अनुमान कोई नहीं कर पाया था। हालाँकि गुरुवर श्री के द्वारा संस्तारारूढ़ कराने के निर्णय से सब यह कहते हुए सहमत थे कि आचार्य श्री ने सब कुछ सोच-समझकर ही किया होगा। किन्तु फिर भी सभी लोग चिंतित थे; क्योंकि बहुत अल्प ही जन होते हैं जो इस प्रकार यम सल्लेखना धारण कर शरीर का परित्याग करते हैं। सच पूछें तो दिन-रात अपने गुरु के निकट बैठ सल्लेखना के

काल में उनके प्रत्येक भाव के प्रत्यक्षदर्शी गुरुवर श्री स्वयं चिंतित थे क्योंकि सबके मना करने के संकेतों को टालते हुए उन्होंने स्वयं यह निर्णय लिया था। देश के कोने-कोने से लोग अचार्य श्री के दर्शन हेतु आ रहे थे। 21 सितंबर की सांयकालीन बेला में अलवर से भी भक्तगण आए। आचार्य श्री के दर्शन के उपरांत जब वे जाने लगे तो अंकुर भैया शिवाजी पार्क हमसे बोले 'माता जी! आचार्य श्री तो हाथ उठा-उठाकर भजन सुन रहे हैं, आनंदित हो रहे हैं, अभी लगता तो नहीं कि इनका समय निकट है। बोले ऐसे में आजीवन अन्न-जल का त्याग, यदि आयु कर्म अधिक हुआ तो क्या होगा, इन्हें कष्ट तो नहीं होगा।'

हमने कहा 'चिंता मत करो सब ठीक होगा। दीर्घकालीन साधक हैं परिणामों को संभालना वे जानते हैं। 21 सितंबर की रात्रि व 22 सितंबर की प्रातः लगभग 1:45 पर अत्यंत शांत व समतामय परिणामों के साथ आचार्य श्री विद्यानंद जी मुनिराज ने अपने पार्थिव शरीर का परित्याग कर दिया।

वास्तव में ज्योतिष विद्या अपने आप में महत्वपूर्ण रहस्यमयी विद्या है। यूँ तो गुरुवर श्री के लिए आश्चर्य करें ऐसी कोई बात नहीं थी क्योंकि ऐसा एक बार नहीं पूर्व में भी कई बार हो चुका था। किन्तु फिर भी सूर्य को जितनी बार देखो आँखों में चकाचौंधी उतनी बार लगती है। उसी प्रकार गुरुवर श्री का यह ज्ञान हमें बार-बार विस्मित करता है।

अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी

अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी इस उपाधिगत नाम से सुशोभित आचार्य श्री की ज्ञान में लीनता स्वतः सिद्ध है। प्रतिक्षण तत्त्वचिंतन, लेखन, पठनादि वंदनीय व अनुकरणीय है। उनका ज्ञान के प्रति यह लगाव मोक्षमार्ग पर अग्रसर होने के बाद से नहीं अपितु बचपन से ही था। पुस्तक चाहे लौकिक शिक्षा की हो या धर्म की उन्हें अत्यंत प्रिय थी। पढ़ाई में रुचि व लगन होने के कारण वे अपने अध्यापकों के प्रिय शिष्य थे। क्लास में सबसे जल्दी उत्तर देने वाले वे एक मात्र विद्यार्थी थे।

भव्य नंदनी माता जी (गृहस्थाश्रम की माँ) ने हमें बताया था कि जब वे मंदिर में शास्त्राध्ययन करते थे, यद्यपि विरौंधा के मंदिर में 2-4 शास्त्र ही थे वे भी आधे-अधूरे, पृष्ठ भी पूर्ण नहीं थे, अत्यधिक जीर्ण-शीर्ण अवस्था में थे। किन्तु एक वे ही थे जो उन्हें जोड़कर निरंतर पढ़ने का प्रयास करते थे। एक समय 1989 में सोनागिर जी में पंचकल्याणक था। दिनेश जी (आचार्य श्री का गृहस्थावस्था का नाम) 3-4 साथी सहित वहाँ पहुँचे, कुछ दिन वहाँ रुके। पुनः जब घर लौटने का समय हुआ तो सभी भाईयों ने विचार किया कि यहाँ से कुछ सामान खरीद लें; सभी लोग खरीददारी के लिये चले गये किसी ने वस्त्र, किसी ने

मिठाई आदि खरीदी, कुछ समय पश्चात् जब निश्चित स्थान पर वे मिले तो देखा कि दिनेश भाई के हाथों में कुछ शास्त्र व पुस्तकें थी। मात्र किराये के पैसे बचाकर जितना भी धन उनके पास था उन सभी से उन्होंने शास्त्र खरीद लिये थे।

छोटी सी उम्र में ही ग्रंथों से इतना लगाव बहुत कम देखने को मिलता है। उनके भाईयों ने कहा तुमने पुस्तकों के अतिरिक्त और तो कुछ लिया नहीं। वे बोले–'यदि मैं कुछ और लेता तो मेरे अकेले के काम आता किन्तु ये ग्रंथ मैं स्वयं पढ़ूँगा पुनः हमारे मंदिर में ग्रंथ नहीं हैं वहाँ रखूँगा तो अन्य सब भी पढ़ पाएँगे।

पुनः गृहत्याग के पश्चात् वे छोटे से ब्रह्मचारी स्वाध्याय में लीन रहते। क्षुल्लक, मुनि आदि अवस्था में भी लोग उन्हें ग्रंथाध्ययन पठन-पाठन में संलग्न पाते थे। आज भी पुस्तक ग्रंथादि के प्रति उनका लगाव देखते ही बनता है। ज्ञानमय निरंतर उपयोग के कारण ही इतने व्यस्त होने के बावजूद भी वे 50 से अधिक मौलिक प्राकृत ग्रंथों की रचना कर चुके हैं।

नय, न्याय, सिद्धांत, व्याकरण, अध्यात्म, चतुः अनुयोग के वे पारगामी हैं। धवला जी की 15½ पुस्तक, जयधवला, महाधवला जी की भी कुछ पुस्तकों का अध्ययन किया है। 2019 नोएडा में धवला जी पु. 1 की वाचना चल रही थी। प्राचार्यश्री शीतलचंद जी व डॉ. अनिल भैया जी वाचना में बैठे हुए थे। आचार्य श्री काफी जल्दी-जल्दी व्याख्यान पढ़ रहे थे।

अनिल भैया जी कभी आचार्य श्री को देखते, कभी ग्रंथ में। कुछ समय पश्चात् वे बोले–'आचार्य श्री आपके पास तो हिंदी लिखी ही नहीं है, मात्र टीका है, किन्तु आप तो ऐसे तेजी से पढ़ रहे हैं जैसे हिंदी देखकर पढ़ रहे हों। आचार्य श्री धवला जी पुस्तक 1, 2, 3, 4 की वाचना 2019 से अब तक (फरवरी 2021) कर चुके हैं। इनके मध्य गोम्मटसार जीवकाण्ड, आप्तमीमांसा, आलापपद्धति आदि ग्रंथों का भी स्वाध्याय लिया। धवला जी की पुस्तक तो वे 20-22 दिन में ही पूरी कर देते हैं। आचार्य श्री की पठन-पाठन, अध्ययन-अध्यापन की क्षमता अत्यंत अद्भुत है। कहीं महाकाव्य तो कहीं संस्कृत टीका, कहीं उपाख्यान। विभिन्न भाषा व विभिन्न विद्याओं के तो वे महारथी हैं। ऐसे श्रुतावतार को श्रुत की भावना से सदा नमस्कार करती हूँ।

शिशु सम भोलापन

'विद्या ददाति विनयं' विद्या विनय को देती है। यह सूक्ति इन साधक पर पूर्णतः चरितार्थ होती है। इनकी लाघवता, विनम्रता वैसे ही सुपरिचित है जैसे संसारी प्राणियों से सूर्य का प्रकाश अथवा यूँ कहें कि जिसमें पूज्य पुरुषों, अग्रजों के प्रति अधिक विनम्रता होती है उसके पास विद्या स्वयं अपना स्थान बना लेती है। जो भी है किन्तु आचार्य श्री की विनम्रता उनके व्यक्तित्व को और अधिक विलक्षण बनाती है। लगता तो ऐसे है जैसे परमात्मा ने जिनशासन के रथ को आगे बढ़ाने वाले इन सारथी को विनम्रता के साँचे में ढालकर ही बनाया हो। बचपन से ही इन्होंने अपने माता-पिता व अन्य किसी बड़े को कभी आँख उठाकर नहीं देखा, कभी किसी को पलटकर जवाब नहीं दिया। उनके इस लघुता पूर्ण स्वभाव से अध्यापक भी उन पर बहुत प्रसन्न रहते थे।

उनके बचपन की एक बात है—वे प्रतिदिन की भाँति अपनी कक्षा में पहुँचे, अध्यापक के द्वारा बच्चों से Home work के विषय में पूछने पर जब उनसे 'नहीं' का जबाव आया तो उन्होंने सभी विद्यार्थियों को खड़ा कर दिया। कुछ समय खड़े रहने के पश्चात् अध्यापक सभी के हाथों पर याद न करने के

लिये स्केल मार रहे थे। जब वे दिनेश के सामने आये तो उन्होंने कहा–'क्या आज तुमने भी याद नहीं किया?' दिनेश ने कहा–'मैंने तो पूरा याद किया है और तुरंत सुना दिया।' उनके अध्यापक ने उनसे पूछा कि तुमने हमें बताया क्यों नहीं, खड़े क्यों हो गये?' वे अत्यंत भोलेपन से बोले–'आपने हमसे पूछा ही नहीं।' उनका यह भोलापन देख अध्यापक की आँखें भी भर आईं और उनको अपने गले से लगा लिया। साथ ही सभी बच्चों को दंड मुक्त भी कर दिया।

आज भी गुरुवर श्री की विनम्रता सर्वत्र प्रसिद्ध है। मुनि श्री प्रमाण सागर जी महाराज ने स्वयं शंका-समाधान में कहा था कि लघुता देखनी है तो उपाध्याय निर्णय सागर जी की देखो। यह विनय उनकी गुरु की उपस्थिति में ही नहीं उनकी अनुपस्थिति में भी बनी रहती। जब वे गुरु से दूर होते थे तब अतदाकार स्थापना कर उनकी भक्ति करते। जितने समय के लिये उनसे दूर रहते उतने समय तक एक रस मीठादि का त्याग रखते। जिस पाटे पर उनके गुरु विराजमान होते, वे उस पाटे पर उनके विहार के बाद भी नहीं बैठते थे। बल्कि उस पाटे के समीप बैठकर आचार्य वंदना करते। आचार्य गुरुवर की विनम्रतापूर्ण ये बातें आज के युग में भी एकलव्य जैसे शिष्य के होने का बोध कराती हैं।

हम स्वयं देखते हैं कि कोई भी चाहे कोई पर संघ के साधु हों या उनके स्वयं के शिष्य, जब भी आते हैं तो गुरुवर

श्री उन्हें लेने जाते हैं। हमने उन्हें अपने गुरु आचार्य श्री विद्यानंद जी महाराज के पास बैठे हुये देखा है। मात्र हम ही नहीं जितने लोगों ने भी वह छवि देखी सब यही कहते थे कि ऐसा लगता है जैसे एक छोटा सा, भोला सा बालक बैठा हो। उनके हाथ जुड़े रहते व निगाह नीची रहती।

उनकी इस मुद्रा को देख तो कभी हम भी आश्चर्य में रह जाते थे क्योंकि वह मुद्रा मात्र हमें तभी देखने को मिलती थी। आज जहाँ एक बालक अपने माता-पिता को तुरंत जवाब देने से नहीं चूकता वहाँ इनका जवाब देना तो दूर कभी आँख उठाकर भी नहीं देखने वाले शिष्य का होना गुरु का भी सौभाग्य ही तो है। यदि आचार्य श्री विद्यानंद जी महाराज कुछ पूछते तो वे हाथ जोड़कर ही उत्तर देते थे। कभी-कभी तो आचार्य विद्यानंद जी महाराज वात्सल्य से कहते थे–'महाराज जी! आप बहुत भोले हैं आप कुछ नहीं जानते।' और गुरुवर श्री प्रत्युत्तर में कहते–'जी महाराज जी।' अपने गुरु के समक्ष हमने उन्हें अल्प, सीमित वचनों का प्रयोग करते ही देखा है।

आचार्य गुरुवर स्वयं कई बार कहते भी हैं कि यदि बड़ों से कुछ प्राप्त करना चाहते हो तो उनके सामने छोटे बनकर रहने में ही आपकी गरिमा है। हमने पुस्तकों में पढ़ा व सुना था कि जो जितना ज्ञानवान् होता है वह उतना अधिक विनम्र होता है। किन्तु लोक में तो कुछ विपरीत ही देखने में आता था। तब समझा यह सूक्ति शब्द ज्ञानी पर चरितार्थ नहीं हो सकती। किन्तु

जब आचार्य गुरुवर को देखा तब इस सूक्ति की यथार्थता हमें ज्ञात हुई। कहा जाता है विनय एक ऐसी चुंबक है जो अन्य गुणों को अपनी ओर आकर्षित करती है। संभवत: इसलिये आचार्य श्री में गुणों की नि:सीमता परिलक्षित होती है।

आचार्य श्री हम सभी को कहते भी हैं कि जब भी उपदेशादि में मुख से किन्हीं आचार्यों का नाम उच्चरित हो तो आचार्य भगवन् या परम पूज्य आचार्य श्री कहकर ही नाम उच्चरित करना और यदि उनके रचित श्लोक, गाथादि बोलें तो दोनों हाथों को जोड़ लें। यह उनके प्रति कृतज्ञता, बहुमान व लघुता का प्रतीक है। जब एक बालक को पिता के नाम से पूर्व 'श्री' या Mr. लगाकर बोलना सिखाया जाता है तब क्या जो आचार्य परमेष्ठी है उनका नाम यूँ बोला जा सकता है? नहीं। यह हमारे संस्कार नहीं हैं।

जिस प्रकार लवण रहित भोजन, गंधहीन पुष्प व प्राण हीन शरीर होता है उसी प्रकार विनय से रहित मनुष्य मानना चाहिये। आचार्य श्री की यह लघुता व विनम्रता का गुण ही उन्हें सबसे अलग व आदर्श बनाता है। ऐसे आचार्य गुरुवर के श्रीचरणों में नमन करती हूँ जो **'विणयं मोक्खदारो'** के अनुसार अपने आचरण से मानो मोक्षद्वार में प्रवेश का मार्ग ही बता रहे हों।

करो जाप, हरो पाप

जाप लगाना आचार्य श्री को अत्यंत प्रिय है। वे सदा कहते हैं कि मुझे जाप पर पूर्ण विश्वास है। बड़ी से बड़ी प्रतिकूलता भी इसके माध्यम से टाली जा सकती है। आचार्य श्री जब जाप लगाते हैं तब ऐसा लगता है जैसे कोई योगी निरीह व निस्पृह होकर स्वयं में डूबा हुआ हो। उनके स्वयं करोड़ों जापों का संकल्प है। 8 करोड़ 8 लाख, 8 हजार 808 णमोकार मंत्र, प्रत्येक तीर्थंकर की सवालाख जाप, प्रत्येक ऋद्धि की सवा लाख जप सवा करोड़ अन्य बहुत सी जाप, इत्यादि। वे सदैव हमें भी जाप के लिये प्रेरित करते हैं। उन्होंने संघ में बहुत से साधुओं को 8 करोड़ 8 लाख 8 हजार 808 णमोकार मंत्र की जप का संकल्प भी दिया। आचार्य श्री कहते हैं कि इतनी जप करने वाला अत्यल्प भवों में मोक्ष प्राप्त करता है।

एक बार स्वाध्याय के समय आचार्य गुरुवर ने बताया कि कल रात्रि 12:00 से 3:00 श्री अजितनाथ भगवान् के चरणों में सिर रखकर जाप लगाता रहा।' किसी बात पर उन्होंने कहा था कि उनके जाप का लगभग यही क्रम है। वे सभी से कहते हैं कि जब भी कुछ अच्छा न लगे, किसी समस्या का हल न निकले, कोई परेशानी हो तो आँखें बंद कर यूँ ही भगवान् के

चरणों में सिर रखकर बैठ जाना, गारण्टी है कुछ ही क्षणों में वह समाधान मिल जायेगा। परेशानी दूर हो जायेगी।

आचार्य गुरुवर को कई बार स्वप्न में भी व्रत-उपवासों का संकेत मिलता है। ग्रीनपार्क 2017 चातुर्मास में आचार्य गुरुवर ने कहा कि अब मैं 5 वर्ष तक शुक्लपक्ष की चतुर्दशी का उपवास करूँगा। सभी साधुओं ने कहा आचार्य श्री आप वैसे ही बहुत उपवास करते हैं, तिथि वाला उपवास रहने दीजिये, आपका तो लंबा-लंबा विहार होता है। उन्होंने सारी बातें सुनी पुनः मुस्कुराते हुए बोले कल रात्रि में हमसे स्वप्न में किसी ने इन व्रतों को करने का संकेत दिया है, इसीलिये ये तो हम करेंगे ही।

मात्र उपवास संबंधित ही नहीं, आचार्य गुरुवर को स्वप्न में कई बार जाप्य मंत्र भी प्राप्त हुए जिन्हें कर उन्हें हर बार एक नवीन उपलब्धि हुई। स्वास्थ्यादि की प्रतिकूलता के समय भी उन्हें स्वप्न में मंत्रादि प्राप्त हुए; और उनको जपकर आचार्य श्री को शीघ्र आरोग्य लाभ भी हुआ। गुरुवर श्री शब्दों से तो जाप की प्रेरणा देते ही हैं किन्तु उनकी जाप्य मंत्रों के प्रति अगाध श्रद्धा या इतने व्यस्ततम होने के पश्चात् भी इतनी जापों को लगाते हुए देखकर हम स्वयं भी प्रेरित होते हैं। इसीलिये वे कई स्थानों पर जाप्यानुष्ठान भी कराते हैं। वे सदा कहते हैं-'करो जाप हरो पाप' अथवा 'णमोकार की जाप करो अपनी रक्षा आप करो'।

रोग-शोक-नाशक

गुरु ही माता, पिता, भाई, प्रभु व श्रेष्ठ वैद्य हैं। गुरु ऐसे वैद्य हैं जो जन्म-जरा-मृत्यु जैसे दुर्द्धर रोगों के उपचार का मार्ग तो बताते ही हैं साथ ही उनके प्रभाव से शारीरिक रोग भी निरस्त हो जाते हैं। आज वे ऋद्धियाँ तो नहीं हैं जिसमें मुनिराज का क्ष्वेल, जल्ल, मलादि औषधि रूप हो अथवा उनकी देह से संस्पर्शित वायु ही औषधि रूप हो अथवा इनके वचन ही औषध रूप हो जाएँ। किन्तु आचार्य गुरुवर का प्रभाव, आशीर्वाद ऐसा देखा है कि असाध्य रोग तक शमित हो गए।

मुनि श्री प्रज्ञानंद जी महाराज ने बताया कि गुरुवर श्री ससंघ का 2012 का चातुर्मास फिरोजाबाद में चल रहा था। उस समय वे बा.ब्र. आशीष भैया के रूप में साधनारत थे। किसी असाता कर्म के उदय से उनके कंठ में अत्यधिक पीड़ा हुई और धीरे-धीरे आवाज बंद हो गई। उनको पंकज भैया के साथ डॉक्टर के यहाँ दिखाने भेजा। उस डॉक्टर ने बताया कि गले में दो पर्दे होते हैं जिनमें से एक खराब हो चुका है, जल्दी ऑपरेशन कराना होगा। गले की हालत देखकर कहना मुश्किल है आवाज लौटकर आएगी या नहीं।

पुनः वे लौटकर गुरु जी के पास आए और उन्हें सारी बात बतायी। आचार्य गुरुवर ने कहा-तुम चिंता मत करो, कुछ

नहीं होगा। कल से अष्टाह्नानिक पर्व प्रारंभ है तुम श्री वासुपूज्य भगवान् की सवा लाख जाप लगाओ, प्रतिदिन सुबह-शाम हमसे आशीर्वाद लो सब ठीक हो जायेगा। उन्होंने बताया कि जाप पूरी भी नहीं हो पाई थी कि कंठ की पीड़ा कम हो गई और आवाज भी लौटकर आ गई। कुछ दिनों पश्चात् सब बिल्कुल ठीक हो गया और आवाज पहले से भी अधिक सुस्पष्ट हो गयी। प्रज्ञानंद जी महाराज ने कहा-'यह तो मेरे जीवन में चमत्कार ही था वरना उस समय डॉक्टर की बात सुनकर तो मैं डर ही गया था। वास्तव में गुरु की कृपा, उनका आशीर्वाद जिसे प्राप्त हुआ है उसके लिये कुछ भी असंभव नहीं है।

सन् 2017 में नितिन भैया (खेकड़ा) के साथ अमित भैया (टटीरी) आए। वे बहुत उदास व भयभीत थे। नितिन भैया ने बताया कि इस छोटी सी उम्र में ही इन्हें कैंसर हो गया है। वे बोले महाराज जी! अब आप ही बचा सकते हो। गुरुवर श्री ने उनकी पूरी बात सुनी और जाप्यमंत्र बताते हुये बोले आप इसकी सवा लाख जाप जितनी जल्दी हो सके पूर्ण कर लें एवं एक गोला दिया व कहा-इसे अपने समीप रखना। अभी फरवरी 2021 में वे आए और बोले-'महाराज जी! आपने मुझे पहचान लिया मैं अमित टटीरी से, आपके आशीर्वाद से मैं बिना किसी सर्जरी, चीर-फाड़ आदि के पूर्ण स्वस्थ हो गया। मेरी कैंसर की रिपोर्ट भी नेगेटिव आई है। उनके लिये तो आचार्य गुरुवर जीवन प्रदाता के रूप में अवतरित हुए।

ऐसी एक नहीं अनेक घटनाएँ हैं। जनवरी 2020 में जगदीश जी मूर्ति वाले मूर्तियाँ लेकर शौरीपुर आचार्य गुरुवर के पास पहुँचे। उनको हाँफता देखकर उनसे स्वास्थ्य के विषय में पूछा, वे बोले–'महाराज जी! मुझे लगता है मुझे कोई टी.बी. आदि हो गया है वैसे ही सब लक्षण नजर आते हैं। इतना कहकर उनकी आँखें भर आईं, और बोले महाराज जी मुझे ठीक कर दो। गुरुवर श्री ने उन्हें आशीर्वाद दिया व गर्म घी-नमक सीने पर लगाने को भी कहा। फरवरी 2021 में वे गुरुवर श्री के पास आए और उनको नमोस्तु कर बोले–'महाराज श्री! मुझे तो आपसे कुछ नहीं चाहिये, आप तो बस मुझे अपना आशीर्वाद दे दीजिए, यह स्वस्थ जीवन आपकी ही देन है।'

यदि इस प्रकार की घटनाओं का यहाँ उल्लेख किया जाये तो सहस्रों नवीन पुस्तकें तैयार हो जाएँ। ऐसे कल्याणकारी, जीवोद्धारक आचार्य गुरुवर के चरणों में नमन करती हूँ जिनके दर्शन मात्र से सर्व रोग-शोक-बाधायें स्वतः नष्ट हो जाती हैं।

जिनशासन संरक्षक

कुशल नेतृत्व अथवा नायक या मार्गनिर्देशक के अभाव में कोई भी परिवार, समूह या समाज दिशाहीन हो सकती है। यद्यपि परिवार, समूह, समाजादि के अपने-अपने नायक होते हैं; किन्तु यदि वे कहीं अपने मार्ग से स्खलित होते हैं तो उन्हें समझाने वाले होते हैं–'गुरु'। इतिहास पढ़ने से ज्ञात होता है कि जिन शासकों ने गुरुओं के निर्देशन में राज्य संचालन किया उनके राज्य में सुख-शांति की धारा अविरल प्रवाहित रही, वे स्वपर कल्याण करने में समर्थ रहे।

आज भी कुछ ऐसा ही है जो समाज गुरु की छत्रछाया में आ जाती है वे अपने कर्त्तव्यों का निष्ठा से पालन करने में समर्थ होती है और यदि कहीं भूल हो जाती है तो गुरु के माध्यम से उन्हें सुधारने का प्रयास भी करती है। दिसंबर 2020 की बात है आचार्य गुरुवर स्वकक्ष में विराजमान थे। तभी महुआ समाज के कुछ लोग पधारे। समाचार ज्ञात हुआ था कि पूर्व दिवस मुनि श्री श्रद्धानंद जी एवं मुनि श्री पवित्रानंद जी महाराज की आहारचर्या महुआ में होनी थी वह किसी कारण वश वहाँ से 31 कि.मी. आगे हुई। कारण चाहे जो भी था किन्तु समाज के लिये तो अनुचित ही था, भूल तो हुई ही थी। अतः अगले ही

दिन वह समाज कुछ भयभीत सी गुरु चरणों में आयी।

वे सब चरणों में आकर बैठ गए और अपनी बात कहने लगे। हमें लगा पता नहीं गुरुवर श्री की उनके प्रति क्या प्रतिक्रिया होगी। संभवतः उपेक्षा दृष्टि ही प्राप्त होगी। यदि ऐसा होता या छोटी सी डाँट भी उन्हें मिलती तो कोई आश्चर्य नहीं था। आश्चर्य तो तब हुआ जब आचार्य गुरुवर ने एक जिनशासन संरक्षक व हितकारिणी माँ की भाँति वात्सल्य से उन्हें समझाया। आचार्य गुरुवर ने कहा–'देखो! यह जिनशासन रूपी रथ श्रावक व श्रमण रूप दो पहियों पर प्रवर्तमान है। यदि इनमें से कोई भी अपने कर्त्तव्य से च्युत होता है तो इस रथ की गति संभव नहीं है। वैसे ही महुआ से साधु गुजरते तो हैं किन्तु रुकते नहीं। यदि इस प्रकार की गलतियाँ भविष्य में होंगी तो आने वाली पीढ़ी धर्म का संस्कार कैसे ग्रहण कर पाएगी, साधुओं की चर्यादि के विषय में कैसे जान पाएगी। यदि आपकी समाज में किसी भी तरह की कोई परेशानी है, तो हमें बताओ। हम प्रयास करेंगे आपकी अनुकूलता बनाने का, जिससे आप सभी सुधी श्रावकजन धर्म में स्थिर हो स्वपर कल्याण में निमित्त बन सकें।' वह समाज यह सब सुनकर अति प्रसन्न हुई।

हम भी वहाँ यह सब सुन रहे थे और आचार्य गुरुवर की आँखों से झलकती करुणा को देख रहे थे। वास्तव में गुरु को जो माँ की उपमा दी वह इन्हीं जैसे गुरु को देखकर दी गई होगी जो भक्त वा शिष्यों को अपनी संतान की भाँति उन्हें समीचीन

मार्ग पर अग्रसर करते हैं। गुरु के जीवन में होने के महत्व को वही जान सकता है जिसे गुरु की विराटता, महानता और जीवन में आवश्यक निधि रूप होने का बोध हो। जिस व्यक्ति या समाज को गुरु के संकेत व निर्देश प्राप्त होते हैं, नि:संदेह वह बहुत भाग्यशाली होती है।

मैं नमन करती हूँ ऐसे गुरुवर को जो जिनशासन स्तंभ बन उसे दृढ़ता व स्थिरता प्रदान कर सहस्रों भव्यों के कल्याण में निमित्त बन स्वकल्याण में प्रतिक्षण तत्पर हैं।

जिंदगी बदल दी

कुछ लोग मिलकर बदल जाते हैं और कुछ लोगों से मिलकर जिंदगी बदल जाती है। दुनिया में ऐसे लोग बहुत अल्प होते हैं जिनके पास पहुँचते ही जीवन की दिशा व दशा दोनों समीचीन/ सम्यक् हो जाएँ। और बात जब महान् संतों की हो तो उनका आभामंडल ही इतना प्रभावकारी होता है कि उनके समीप पहुँचते ही अपार शांति आनंद का अनुभव होता है। तब यदि उनसे दो शब्द सुनने को मिल जाएँ तो उस समय के अनुभव का तो कहना ही क्या जैसे धर्मामृत रूप वर्षा की कुछ बूंदें आत्मा रूपी पृथ्वी का सिंचन कर उसे तृप्त कर रही हों। फरवरी 2021 की बात है आचार्य श्री ससंघ श्री जंबूस्वामी तपोस्थली बौलखेड़ा में विराजमान थे। समय-समय पर आस-पास से साधु महात्मा आचार्य श्री के दर्शन के लिए पधारते और तपस्वी दिगंबर वेषधारी के दर्शन कर स्वयं के सौभाग्य को सराहते।

एक दिन शाम को लगभग 4:30 बजे क्षेत्रीय अध्यक्ष श्री रमेश जी जैन गर्ग आचार्य श्री के पास आए बोले–'गुरुवर! एक बाबा आपके दर्शन करना चाहते हैं, क्या में उन्हें ले आऊँ? गुरुवर श्री की मौन स्वीकृति पाकर वे उन्हें ले आए। उन्होंने आचार्य श्री को अपने विषय में बताया कि मैं 22 प्रकार से

लोगों का इलाज कर सकता हूँ, कॉफी समय से साधनारत हूँ इत्यादि। मंद सी मुस्कुराहट के साथ आचार्य श्री सब सुन रहे थे। जब उन्होंने सब कह दिया तब आचार्य श्री ने उनसे उनका नाम पूछा। उन्होंने बताया–'महाराज जी मेरा नाम अशोक ढाका था। मैं काफी समय वृन्दावन में रहा तब मेरा नाम अशोक दास हो गया, अभी कुछ समय पूर्व मैंने गोल्डन टेम्पेल में सिक्ख धर्म स्वीकार किया है अब मेरा नाम अशोक सिंह है। वे पुनः बोले–'महाराज जी आपके चेहरे पर इतनी कांति है, शांति है, सौम्यता है। मुझे तो पूर्व से ही बहुत क्रोध आता था किंतु अब जब से सिक्ख धर्म से दीक्षित हुआ हूँ मुझे और अधिक क्रोध आने लगा। आचार्य श्री ने कहा–'धर्म कोई भी हो किंतु गलत तो कोई भी धर्म नहीं सिखाता। किसी भी धर्म में 'क्रोध करें', ऐसा उपदेश नहीं है। वे महात्मा पुनः बोले–'महाराज जी। मुझसे गलत बात बर्दाश्त नहीं होती। यदि व्यक्ति गलत कर रहा है। तो उसका तीन-पाँच करने का मन करता है।

आचार्य श्री ने कहा–'भाई यदि सामने वाले ने गलत किया और तुमने भी गलत कर दिया तब उसमें और तुममें अंतर ही क्या रह गया। उसने किसी और को मारा और तुमने उसे मार दिया।' पुनः वह बोले–'महाराज जी! तो क्या मैं गलती सह लूँ, ऐसे तो दुनिया को कौन सुधारेगा।'

आचार्य श्री ने कहा–'आज तक दुनिया को कोई नहीं सुधार पाया। यदि व्यक्ति स्वयं को सुधार ले तो संभवतः उसे हर

और सुधार नजर आए।' कौन क्या कर रहा है उसकी चिंता करने की हमें आवश्यकता नहीं है।

कबिरा तेरी झोपड़ी कट गलियन के पास।
जे करन लगे ते भरन लगे तू क्यों होये उदास॥

वे बाबा पुनः बोले अन्यायियों का अंत तो श्री राम आदि भगवंतों ने भी किया है, तो हम क्या गलत करते हैं। आचार्य गुरुवर ने कहा–'देखो! महापुरुषों की वृत्ति अलौकिक होती है। जो उन्होंने किया वह उनके ही योग्य था, अन्य पुरुषों के नहीं। वैदिक परम्परा में शिव जी ने विषपान किया था, क्या वही कार्य आप कर सकते हैं? यह बात सुनकर वे चुप हो गये। हमें अपनी तुलना बड़ों से नहीं करनी चाहिये। उनके द्वारा किया गया कार्य उन्हीं को शोभा देता है।

बड़े काम छोटे करें तो न बढ़ाई होय।
ज्यों रहीम हनुमंत को, गिरधर कहे न कोय॥

इस प्रकार सुनकर वह आँख बंद कर शांत बैठ गए और पुनः हाथ जोड़कर बोले–'महाराज जी! आज तो आपने मेरी आँखें खोल दी। आप जैसे महान् संत के दर्शन कर मैं धन्य हो गया। अपनी भाषा में स्तुति करते हुए वह बाहर चले गये। पुनः कुछ दिन बाद एक अन्य अपने साथी के साथ आए और उनसे बोले–'मैं जिन महाराज जी की बात कर रहा था, वे यही हैं। ये साक्षात् भगवान् का रूप हैं। भगवन्! आपके आशीर्वाद ने मेरी जिंदगी बदल दी। अब तो मेरा गुस्सा जैसे कहीं गायब ही हो

गया। आप धन्य हैं। मैंने कई दर्शनों को पढ़ा लेकिन ऐसा चिंतन मुझे कहीं प्राप्त नहीं हुआ। वे बाबा तो ये कहकर चले गए किन्तु हम **'गांभीर्य सहजामूर्त्तिः'** आचार्य श्री के दर्शन कर रहे थे जिन्होंने ऐसे एक नहीं कितने ही जीवों की दशा को समीचीन धारा में प्रवाहित किया। किसी का जीवन आचार्य श्री के दर्शन से, तो किसी का उपदेशों से परिवर्तित हो गया।

नमन करती हूँ इंसान के रूप में उन भगवान् को जिन्होंने कई जीवों को सम्यक् मार्ग का पथिक बना उन्हें संसार के गहन दु:खों से बचा लिया।

प्रकृति से सामंजस्य

जहाँ मुनियों की वृत्ति अलौकिक होती है, वहाँ उनकी भक्ति भी अलौकिक फल देने वाली होती है। प्रकृति रूप में रहने वाले साधु के साथ मानो प्रकृति भी सामंजस्य बैठाकर चलती है। क्योंकि संसार में दिगम्बर मुनि ही प्रकृति के सबसे निकट दिखाई देते हैं। और शायद प्रकृति भी इसलिए उनके चरणों में झुक जाती है।

जनवरी 2005 में आचार्य गुरुवर सुंदर विहार में विराजमान थे। उन दिनों भीषण शीत लहर चल रही थी और 17 जनवरी के दिन सुबह से ही आकाश में काले बादल छाए हुए थे, घना कोहरा छाया हुआ था। ऐसे समय में रेणु जी के यहाँ भी चौका लगा। सभी पुरुष वर्ग 9:30-10:00 बजे के आस-पास मंदिर जी पहुँच गए एवं महिलाएँ चौके में सूचना का इंतजार कर रही थीं कि कब गुरुवर श्री चर्या के लिए उठ रहे हैं। तभी एक स्त्री ने कहा—लो गुरुवर तो चर्या के लिए उठ गए। सभी ने हैरान होकर उस महिला से पूछा कि अभी कोई सूचना तो नहीं आई है। आपको यह बात कैसे मालूम हुई? उसने कहा—देखो कितने घने काले बादलों में से भी सूरज बाहर झांकने लगा है। इसका मतलब है गुरुवर आहार चर्या के लिए उठ गए हैं।

उन्होंने बताया कि यह सब सुनकर उन्हें बड़ी उत्सुकता हुई। वे उस स्त्री से बोली कि वे ये सब कैसे जानती हैं? तो वे बोली कि देखना, गुरुवर के साथ-साथ सूर्यदेव चलेंगे और

आहार के दौरान ये आकाश में दिखाई देते रहेंगे और पुनः उनके पीछे-पीछे चल देंगे। उन्होंने बताया कि वास्तव में उस स्त्री की बात सही थी। गुरुवर श्री का पड़गाहन हुआ, निरंतराय आहार चर्या संपन्न हुई। जैसे ही गुरुदेव मंदिर की ओर चल दिए तो मानो सूर्य भी उनके पीछे-पीछे अनुसरण करते हुए चलने लगा। जैसे ही आचार्य श्री ने मंदिर में प्रवेश किया वैसे ही सूर्य फिर से बादलों में छिप गया। वास्तव में ऐसे हैं गुरुवर जिनके दर्शन व सान्निध्य के लिए स्वयं सूर्य भी लालायित रहता है।

इसी प्रकार एक बार विहार की चर्चा चल रही थी। मौसम कुछ ठीक नहीं था सभी लोग असमंजस में पड़ गए। आचार्य श्री ने कहा-'चलो विहार करें, सब ठीक होगा। सभी लोग विहार के लिये तैयार हो गए, किंतु आश्चर्य तो तब था जब संघ जहाँ-जहाँ से गुजरता, वहाँ-वहाँ बारिश की एक बूँद भी नहीं और अन्य स्थानों में तेज बारिश।

आचार्य श्री के सान्निध्य में कई पंचकल्याणकादि कार्यक्रमों में भी प्रकृति का यह सुंदर सामंजस्य देखने को मिलता है। आचार्य श्री के कार्यक्रमों में एक सामान्यता तो हमने देखी है कि जब भी कोई जिनशासन प्रभावक बड़ा कार्यक्रम होता है तब पानी की चार बूँदें ही सही पर पड़ती जरूर हैं। शायद इन्द्रादि भी अपनी उपस्थिति का अहसास कराते हैं व गुरु चरणों में मानो इसके माध्यम से अर्घ्य समर्पित करने चले आते हैं। जिन आचार्य गुरुवर के चरणों में देवता भी नमस्कार करते हैं। ऐसे भावी केवली आचार्य श्री के चरणों में वंदन कर हम अपने पाप क्षय की कामना करते हैं।

नाम लेते ही होते काम

गुरु प्रकाश स्तंभ के समान जाने जाते हैं जो भव्यों के समीचीन मार्ग को आलोकित करते हैं। मैं इसे भक्त की श्रद्धा कहूँ या गुरु का विराट असीम वात्सल्य जो भक्त को प्रति समय उनके साथ रहने का अहसास कराता है। जैसे एक व्यक्ति कहीं भी चला जाए किंतु उसे ऊपर सर्वत्र आसमान नजर आता है, उस आकाश की छाँव उससे कोई नहीं छीन सकता। ऐसा ही संबंध गुरु व शिष्य का होता है। शिष्य कितना भी गुरु से दूर चला जाए किंतु वह हमेशा गुरु की छत्र छाया का अनुभव करता है, गुरु का नाम स्मरण करते ही काम ऐसे हो जाता है जैसे उस काम की पूर्ति के लिये ये ही पासवर्ड डाला हो।

फरवरी 2021 में संघस्थ ब्रह्मचारी भैयाओं की दीक्षायें संभावित थी, गुरुवर श्री के आशीर्वाद से गिरनार जी आदि की वंदना की। ब्र. भैया लोग सम्मेद शिखर व आस-पास की वंदना के लिये गये। ब्र. सुव्रताशीष भैया ने बताया कि यात्रा के समय उनकी हालत काफी खराब हो चुकी थी। जैसे-तैसे चौपड़ा कुंड पर पहुँचे किन्तु वहाँ पहुँचकर हिम्मत ने साथ छोड़ दिया व सोचा मेरी यात्रा तो यहीं पूर्ण हो गयी। पुनः आँखें बंदकर वहीं कुछ देर शांति से बैठ गए। उन्होंने बताया कि तभी ऐसा लगा

जैसे आचार्य गुरुवर ने बहुत वात्सल्य से उनके सिर पर हाथ फेरा हो और कहा हो चलो मैं हूँ ना।

वे बोले–'मैं खड़ा हुआ और भूल गया कि मैं शिखर जी में हूँ या कहाँ हूँ। आगे-आगे गुरुवर दिख रहे थे मैं उनके पीछे-पीछे चला जा रहा था'। उन्होंने बताया कि कुछ ही समय बाद बिना थकान या बैचेनी के वे गौतम गणधर स्वामी जी की टोंक पर पहुँच गए। मानो वहाँ जाकर उन्हें होश आया कि वे शिखर जी में हैं। फिर उन्होंने दायें-बायें सब ओर देखा उन्हें विश्वास नहीं हो रहा था कि अभी तो वे आचार्य गुरुवर के पीछे-पीछे चल रहे थे। वे बोले–'वह सपना भी नहीं था और सत्यता भी नहीं थी किन्तु जो भी था एक बहुत मधुर अहसास था कि जीवन में दुनिया के किसी भी स्थान पर रहें किंतु आचार्य गुरुवर का वात्सल्य, आशीर्वाद व सान्निध्य हमेशा मेरे साथ है।'

नि:संदेह ये अहसास हर उस भक्त व शिष्य को होता है जिसके मन मंदिर में गुरु की निर्मल मूर्ति विद्यमान है। वास्तव में गुरु अत्यंत विराट, नि:सीम, निर्लेप और आकाश के समान सबको अवगाहन देने वाले होते हैं बहुत पुण्यात्मा हैं वे लोग जिन्हें ऐसे आचार्य गुरुवर का वरद हस्त एक बार भी प्राप्त हुआ है।

ये हम सभी का अत्यंत पुण्योदय है कि इस पंचमकाल में भी गुरुओं का सान्निध्य, परमेष्ठियों का आशीर्वाद हमें प्राप्त हो रहा है। यही भावना है कि संसार में जितने भी भव शेष हैं उन सभी में परमपूज्य गुरुवर का समागम हमें प्राप्त हो और हम इसी प्रकार समर्पण के साथ उनकी भक्ति करते रहें।

अप्रतिम ज्ञानी

आचार्य गुरुवर की तर्क शक्ति अनुपमेय है। वे कहते हैं–कि आज की युवा पीढ़ी को मात्र आगम के आधार पर समझाना अत्यंत कठिन है अत: युक्ति व तर्क का आलंबन आवश्यक है। आचार्य गुरुवर के शंका समाधान या समझाने की कला ऐसी अद्भुत है कि सीधे जिज्ञासु के हृदयंगम होती है। उनकी वाणी चित्त में ऐसी समा जाती है जैसे कोरे मिट्टी के घड़े में जल की बूँद। साधु हो या विद्वान् या सामान्य श्रावक ही हो किन्तु गुरुवर से किसी भी विषय में समाधान प्राप्त करने के पश्चात् चेहरे पर संतुष्टि भरी मुस्कुराहट ही दिखाई देती है। हम तो कई बार सोचते हैं कि जिस प्रकार के वाद-विवाद आचार्य श्री समंतभद्र स्वामी, आचार्य श्री अकलंक देव स्वामी के समय होते थे वही वाद-विवाद यदि आज भी हों तो आचार्य गुरुवर के समक्ष कोई ठहर ही नहीं पाएगा। हर बात को नवीन दृष्टांत देकर समझाने की कला अप्रतिम है।

खण्डन और मण्डन करने में तो वे सिद्धहस्त हैं। कई बार तो गुरु जी स्वाध्यायादि के समय प्रश्न करते हैं और सभी से अलग-अलग उसके उत्तर पूछते हैं फिर कहते हैं और सोच लो अपने उत्तर याद रखना, अभी मैं इसका खंडन करूँगा और आपके मुख से भी कहलवा दूँगा। कितना भी तर्कादि लगा लें पर उनके समक्ष अपनी बात रख ही नहीं सकते।

ऐसा तो गुरुवर श्री कई बार करते हैं, यह उनके स्वाध्याय कराने की पद्धति भी है। वे कहते हैं यदि प्रश्न करने के बाद सबसे उत्तर माँगा जाए पुनः उसका उत्तर दिया जाए तो वह अपेक्षाकृत लंबे समय तक याद रहता है और सबका उपयोग भी उसमें स्थिर हो जाता है।

सन् 2009 में आचार्य गुरुवर का चातुर्मास मेरठ में हुआ। प्रत्येक कॉलोनी को गुरुवर श्री ने 2-4 दिन का समय दिया। जिस समय की बात कर रहे हैं उस समय वे सदर में विराजमान थे। मंदिर जी में स्वाध्याय चल रहा था, उसी मध्य विद्वत् श्रेष्ठी कस्तूर चंद जी ने गुरुवर श्री से प्रश्न पूछे। और लंबे-लंबे एक साथ 5-7 प्रश्न पूछे। हर प्रश्न के बाद पहली बात, दूसरी बात बोलते गए। उसके उपरांत आचार्य श्री ने उत्तर देना प्रारंभ किया हम तो पूर्णतया उनके प्रश्न समझ भी नहीं पाए थे किन्तु गुरुवर श्री हर प्रश्न का क्रमशः उत्तर देते गए और प्रत्येक उत्तर के बाद कहा पहली बात का उत्तर, दूसरी बात का उत्तर। पूरी सभा गुरुवर श्री के इस क्षयोपशम से अचंभित रह गयी। हम मुस्कुरा भी रहे थे और आश्चर्य भी हो रहा था कि इन 5-7 प्रश्नों का आपस में कोई संबंध भी नहीं किंतु उन सभी प्रश्नों को याद कर उसी क्रम से उत्तर दे रहे थे। विद्वत् श्रेष्ठी स्वयं बोले 'मैं तो हमेशा से ही कहता हूँ किसी भी शंका का समाधान चाहो तो वसुनंदी जी महाराज के पास पहुँच जाओ।'

आचार्य गुरुवर का 2020 का चातुर्मास श्री जंबूस्वामी तपोस्थली बौलखेड़ा में हुआ। चातुर्मास में प्रातः 5:30 बजे से भक्ति पाठ पुनः कक्षा होती थीं। उसके मध्य किसी ने कहा–'आचार्य श्री! जब निमित्त उपस्थित होते हैं तो क्रोध तो आता है, प्रभाव तो पड़ेगा। गुरुवर श्री ने कहा–'हाँ सही बात है हवा चलेगी तो जलाशय में पानी हिलेगा ही। क्या कोई तरीका है कि आँधी तूफान चले और जलाशय में पानी भी न हिले। सबने आचार्य गुरुवर की ओर देखा और एक स्वर में मना कर दिया। आचार्य गुरुवर मुस्कुराए और बोले एक तरीका है। सब लोग आश्चर्य में पड़ गए। वे बोले हाँ! यदि Temperature O^0c से नीचे हो जाए, पानी की बर्फ जम जाए तो आँधी के आने पर भी वह नहीं हिलेगा। इसी प्रकार बाहर से यदि शब्दादि की आँधी आए तो अपना temp. down कर लो, शांत–शांत और शांत व सौम्य हो जाओ तब उसका आप पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। यह सुनकर सभी अत्यंत प्रसन्न हुए।

कोटिशः नमन है ऐसे आचार्य गुरुवर को जिनमें आचार्य भगवन् श्री समंतभद्र स्वामी, आचार्य भगवन् श्री अकलंक देव स्वामी की छवि परिलक्षित होती है। जिनका युक्ति, तर्क, आगमादि का ज्ञान सभी को समीचीन मार्ग पर अग्रसर करता है।